माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

याद रमज़ान

"माहे रमज़ान के आने पर ख़ुश और जाने पर ग़मज़दा होना ख़ुश नसीबों का हिस्सा है"

- ख़ुसूसिय्याते रमज़ान 6
- रोज़े में मेडीकल के मसाइल 19
- हज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ के मश्वरे 30
- मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमान को ख़ुश आमदीद 49
- रमज़ान की बहारें और मुसलमान ख़वातीन 51

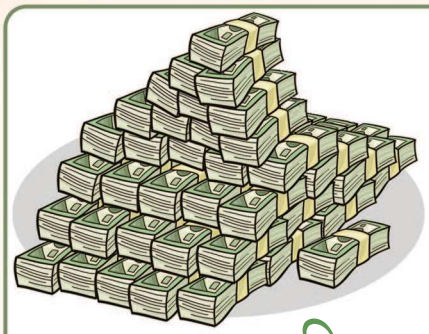

पहाड़ जितना क़र्ज़

एक मक़रूज़ से मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलेमात ना सिखाऊं जो रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर जबले सीर (सीर एक पहाड़ का नाम है) जितना दैन (यानी क़र्ज़) होगा तो अल्लाह पाक तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा, तुम यूं कहा करो :

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ۔

(ترمذی، 5/329، حدیث:3574)

बुख़ार से शिफ़ा

जिस को बुख़ार हो सात बार येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰہِ الْکَبِیْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰہِ الْعَظِیْمِ مِنْ شَرِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّ مِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

अगर मरीज़ ख़ुद ना पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे اِنْ شَآءَاللّٰہ الکریم बुख़ार उतर जाएगा। एक मरतबा में बुख़ार ना उतरे तो बार बार येह अ़मल करें। (जन्नती ज़ेवर, स.

(مستدرک للحاکم، 5/592، حدیث:8324)

ख़ावन्द को नेक नमाज़ी बनाने के लिए

ख़ावन्द घर में लड़ता झगड़ता रेहता हो तो बीवी हर बार बिस्मिल्लाह के साथ ग्यारह मरतबा "सूरए फ़ातेह़ा" पढ़ कर पानी पर दम करे, फिर अपने ख़ावन्द को पिलाए, اِنْ شَآءَاللّٰہ वोह नेकी के रास्ते पर आ जाएगा।

नोट : शौहर बल्कि किसी को भी इस अ़मल का पता ना चले वरना ग़लत़ फ़ेहमी के सबब परेशानी हो सकती है, जब जब मौक़अ़ मिले येह अ़मल कर लिया जाए, दम किया हुवा पानी कूलर में मौजूद पानी में भी डाला जा सकता है, बेशक ख़ावन्द के इलावा और अफ़रादे ख़ाना भी उस में से पिएं, ज़रूरतन दूसरा पानी कूलर में डालते रहें।

(रिसाला : बीमार आ़बिद, स. 40 बित्तग़य्युरिन)

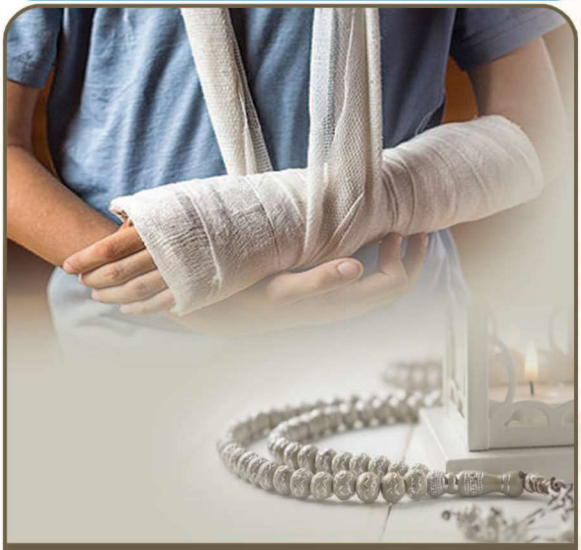

हड्डी जोड़ने के लिए

तीन दिन तक सूरए तौबा की आयत नं. 129 अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक एक बार पढ़ कर बार बार दम कीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰہ टूटी या फटी हुई हड्डी जुड़ जाएगी।

(घरेलू इलाज, स. 84)

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र — सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رضی اللہ تعالیٰ عنہ

ब फ़ैज़ाने करम — आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضی اللہ تعالیٰ عنہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस
नफ़्स की तबाहकारियां 3 — ख़ुसूसिय्याते रमज़ान 6
फ़ैज़ाने सीरत — रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़ (क़िस्त : 02) 9
देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह के जवाबात (क़िस्त : 04) 11 — हज़रते सैयदना शुऐब علیہ السلام (क़िस्त : 03) 13
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत — तस्बीहे तरावीह याद ना हो तो क्या पढ़ें ? मअ़ दीगर सवालात 15
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत
बतौरे क़र्ज़ दी गई रक़म ज़कात की निय्यत से मुआफ़ करना ? मअ़ दीगर सवालात 17 — रोज़े में मेडीकल के मसाइल 19
मज़ामीन — किसी का मज़ाक़ मत उड़ाएं 20
जन्नत वाजिब करवाने वाली नेकियां 22 — दर्से किताबे ज़िन्दगी (चार बातें) 23
इस्लाम और तालीम (क़िस्त : 03) 25 — रोज़े का इल्मी, अ़मली और फ़िक्री पैग़ाम 27
ताजिरों के लिए — रमज़ानुल मुबारक में मुलाज़िमीन के साथ रिआ़यत कीजिए ! 28
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
हज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ के मश्वरे 30 — नवासा ए रसूल हज़रते सैयदना इमामे हसन मुज्तबा رضی اللہ تعالیٰ عنہ 32
हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की नसीहतें 34 — अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए ! 36
मुतफ़र्रिक़ — फ़िलिस्तीन की तारीख़ी व मज़हबी हैसिय्यत (क़िस्त : 02) 38
सेहत व तन्दुरुस्ती — रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم की ग़िज़ाएं : दूध (क़िस्त : 01) 39
क़ारेईन के सफ़हात
नए लिखारी 41 — ख़्वाबों की ताबीरें 45
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" — नमाज़ नूर है / हुरूफ़ मिलाइए ! 47
मुबारक हाथ की बरकत से इस्लाम मिल गया 48 — मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान को ख़ुश आमदीद 49
इस्लामी बहेनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
रमज़ान की बहारें और मुसलमान ख़वातीन 51 — इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल 53

नफ़्स की तबाहकारियां

अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

﴿وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا(۷) فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا(۸) قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا(۹) وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا(۱۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जान की और उस की जिस ने इसे ठीक बनाया । फिर उस की नाफ़रमानी और उस की परहेज़गारी की समझ उस के दिल में डाली । बेशक जिस ने नफ़्स को पाक कर लिया वोह कामयाब हो गया । और बेशक जिस ने नफ़्स को गुनाहों में छुपा दिया वोह नाकाम हो गया । (پ30، الشمس:7تا10)

तफ़्सीर : अल्लाह पाक ने इन्सान को पैदा किया, जिस्मो जान का मजमूआ़ बनाया, ज़ाहिरी ओ बातिनी औसाफ़ अ़ता किए, ह़क़ व बातिल क़बूल करने का मलका दिया, उस के वुजूद में ख़ैर व शर की आवेज़िश क़ाइम की और अच्छाई बुराई समझने और अपनाने का इख़्तियार दिया, इस तमाम ह़क़ीक़त को मज़्कूरा आयात में फ़रमाया गया, जिस का खुलासा येह है कि जान की और उस खुदा की क़सम जिस ने उसे ठीक बनाया और उसे कसीर कुव्वतें अ़ता फ़रमाईं, जैसे बोलने, सुनने, देखने की कुव्वत नीज़ फ़िक्रो ख़याल और इल्मो फ़ेहम की सलाहिय्यत अ़ता फ़रमाई, फिर उस के दिल में नाफ़रमानी और परहेज़गारी की सलाहिय्यत व बुन्याद डाली, अच्छाई बुराई, नेकी और गुनाह से उसे बा ख़बर कर दिया । इस सलाहिय्यत व इख़्तियार के बाद वोह शख़्स जिस ने अपने नफ़्स को बुराइयों से पाक कर लिया, वोह यक़ीनन कामयाब हो गया, जबकि जिस ने अपने नफ़्स को गुनाहों में मशग़ूल कर के मआ़सी की ज़ुल्मतों में छुपा दिया, वोह नाकाम हो गया । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (तिलावत करते हुवे) इन आयात पर पहुंचते तो रुक जाते, फिर फ़रमाते

اَللّٰھُمَّ آتِ نَفْسِیْ تَقْوَاھَا وَزَكِّھَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكَّاھَا اَنْتَ وَلِیُّھَا وَمَوْلَاھَا

यानी ऐ अल्लाह ! मेरे नफ़्स को तक़्वा अ़ता फ़रमा, इस को पाकीज़ा कर, तू सब से बेहतर पाक करने वाला है, तू ही इस का वली और मौला है ।

(معجم کبیر،11/87، حدیث:11191-مسند الشہاب،2/338، حدیث:1481)

नफ़्स इन्सान का वोह दुश्मन है, जिस का नुक़्सान शैतान से भी बढ़ कर है, बल्कि खुद शैतान को गुमराह करने वाली चीज़ उस का नफ़्स था । नफ़्स की आरज़ूएं बे लगाम और ख़्वाहिशें बेशुमार हैं । येह ख़्वाहिशात बढ़ते बढ़ते इस ह़द को पहुंच जाती हैं कि बन्दगाने नफ़्स के लिए उन का नफ़्स ब मन्ज़िला खुदा बन जाता है और बन्दा उस की हर ख़्वाहिश पर अ़मल कर

के ख़ुद को हलाकत में डाल देता है । ऐसे लोगों का अन्जाम येह होता है कि उन के कानों और दिलों पर मोहर लग जाती और आंखों पर पर्दा पड़ जाता है, जिस की वज्ह से हिदायत व नसीह़त उन्हें सुनाई नहीं देती और ह़क़ का रास्ता दिखाई नहीं देता । इसी सूरते ह़ाल को क़ुरआने मजीद में यूं बयान फ़रमाया गया : ﴿اَفَرَءَیۡتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰی عِلۡمٍ وَّخَتَمَ عَلٰی سَمۡعِهٖ وَقَلۡبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰی بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنۡ یَّهۡدِیۡهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ(۲۳)﴾ तर्जमा : भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया और अल्लाह ने उसे इ़ल्म के बा वुजूद गुमराह कर दिया और उस के कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की आंखों पर पर्दा डाल दिया तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाएगा ? तो क्या तुम नसीह़त ह़ासिल नहीं करते ? (پ25، الجاثیۃ:23)

नफ़्स की इन हलाकत ख़ेज़ कारस्तानियों की वज्ह से अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में बार बार इस की त़रफ़ से मुतनब्बेह किया है, चुनान्चे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡهِ السَّلَام की ज़बाने मुबारक से येह ह़क़ीक़त यूं तालीम फ़रमाई : ﴿وَمَاۤ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ(۵۳)﴾ तर्जमा : और मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता, बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रेह़म करे, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है । (پ13، یوسف:53)

बुराइयों की त़रफ़ दावत देने वाले नफ़्स को **''नफ़्से अम्मारा''** केहते हैं । नफ़्से अम्मारा का सब से बड़ा हथियार **''ख़्वाहिशात का जाल''** है, जिस में उलझा कर इन्सान को लज़्ज़तों का ऐसा असीर बनाता है कि बन्दा उस से निकलने की कोशिश ही नहीं करता, उसे ना ख़ुदा याद रेहता है और ना आख़ेरत । इसी लिए अल्लाह पाक ने ख़्वाहिशे नफ़्स की तबाहकारियां ब कसरत बयान फ़रमाईं और नफ़्स के पीछे चलने से बार बार मन्अ़ किया, जैसा कि एक जगह फ़रमाया : ﴿وَلَا تَتَّبِعِ الۡهَوٰی فَیُضِلَّكَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِیۡنَ یَضِلُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌۢ بِمَا نَسُوۡا یَوۡمَ الۡحِسَابِ(۲۶)﴾ तर्जमा : और नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे ना चलना वरना वोह तुझे अल्लाह की राह से बेहका देगी, बेशक वोह जो अल्लाह की राह से बहेकते हैं, उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है इस बिना पर कि उन्हों ने ह़िसाब के दिन को भुला दिया है । (پ23، ص:26) बल्कि ऐसे लोगों से भी दूर रेहने का हुक्म दिया जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात का शिकार और ख़ुदा को भूले हुवे हैं, चुनान्चे फ़रमाया : ﴿وَلَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَهٗ عَنۡ ذِكۡرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمۡرُهٗ فُرُطًا(۲۸)﴾ तर्जमा : और उस की बात ना मान जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया । (پ15، الکھف:28)

नबी ए रेह़मत, साह़िबे किताबो ह़िक्मत, शफ़ी ए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हलाक करने वाली चीज़ों में नफ़्स को शुमार किया, चुनान्चे फ़रमाया : तीन चीज़ें हलाकत में डालने वाली हैं : 1 वोह बुख़्ल जिस की इत़ाअ़त की जाए 2 वोह नफ़्सानी ख़्वाहिशात जिन की पैरवी की जाए 3 आदमी का अपने आप को अच्छा समझना । (شعب الایمان، 1/471، حدیث:745)

एक ह़दीसे मुबारक में नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात और इन्सान की कैफ़िय्यात को इस क़दर खोल कर बयान फ़रमाया कि समझदार के लिए वोह एक ह़दीस ही नफ़्स की शरारतों से बचने के लिए काफ़ी है । रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब अल्लाह पाक ने जन्नत पैदा की तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : **''जाओ उसे देखो ।''** वोह गए और जन्नत और जो नेमतें उस में जन्नतियों के लिए अल्लाह पाक ने तैयार की हैं, उन्हें देखा, फिर आए और अ़र्ज़ की : ''या रब ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, जो (इस के बारे में) सुनेगा, वोह इस में दाख़िल होगा (यानी इस में दाख़िल होने की ज़रूर कोशिश करेगा)'' फिर अल्लाह पाक ने जन्नत को मशक़्क़तों से ढांप दिया (यानी जन्नत में जाने के लिए शरीअ़त के अह़काम की मशक़्क़तें बरदाश्त करनी होंगी) और (अल्लाह पाक ने) फ़रमाया : ''ऐ

जिब्रील ! जाओ उसे देख कर आओ ।'' वोह गए और उसे देखा, फिर आए और अ़र्ज़ की : ''या रब ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, मुझे ख़त़रा है कि जन्नत में कोई दाख़िल ना हो सकेगा ।'' फिर जब अल्लाह पाक ने आग (जहन्नम) पैदा की तो फ़रमाया : ''ऐ जिब्रील ! जाओ और उसे देखो ।'' वोह गए और उसे देखा, फिर आए और अ़र्ज़ की : ''या रब ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, जो इस के बारे में सुनेगा, वोह इस में दाख़िल ना होगा (यानी इस से बचने की भरपूर कोशिश करेगा) ।'' अल्लाह पाक ने उसे लज़्ज़तों से घेर दिया (यानी जो नफ़्स की नाजाइज़ लज़्ज़तों में पड़ेगा, वोह जहन्नम में जाएगा), फिर अल्लाह पाक ने फ़रमाया : ''ऐ जिब्रील ! इसे देखो ।'' वोह गए और उसे देख कर अ़र्ज़ की : ''या रब ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, मुझे ख़त़रा है कि इस में दाख़िल हुवे बग़ैर कोई ना बचेगा ।''

(ابوداؤد، 4/312، حدیث:4744)

दर्से ह़दीस येह है कि अल्लाह पाक ने जन्नत जैसी अ़ज़ीम जगह में दाख़िला ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से बचने पर मौक़ूफ़ किया है और जहन्नम में दाख़िल होने से नजात भी ख़्वाहिशात से बचने ही पर मौक़ूफ़ रखी है, लेहाज़ा ख़ुदा की बारगाह में कामयाबी का हुसूल नफ़्स को बुराइयों से पाक करने में है, जबकि नफ़्स को गुनाहों में छुपा देना, ख़्वाहिशात को बे लगाम छोड़ देना, हलाकत और नाकामी का रास्ता है । अल्लाह पाक ने एक मक़ाम पर इसे यूं बयान फ़रमाया :

﴿فَاَمَّا مَنْ طَغٰى(۳۷) وَ اٰثَرَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا(۳۸) فَاِنَّ الْجَحِیْمَ هِیَ الْمَاْوٰى(۳۹)
وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى(۴۰) فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰى(۴۱)﴾

तर्जमा : तो बहरह़ाल वोह जिस ने सरकशी की और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी तो बेशक जहन्नम ही (उस का) ठिकाना है और रहा वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका । तो बेशक जन्नत ही (उस का) ठिकाना है । (پ30، النّٰزعٰت:37تا41) यानी जिस शख़्स ने सरकशी इख़्तियार की, नाफ़रमानी में ह़द से गुज़रा, दुन्या की ज़िन्दगी को आख़ेरत की ज़िन्दगी पर तरजीह़ दी और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़ुलाम बना, तो बेशक जहन्नम ही उस शख़्स का ठिकाना है, जबकि वोह शख़्स जो अपने रब्बे करीम के हुज़ूर क़ियामत की पेशी से डरा और उस ने अपने नफ़्स को ह़राम चीज़ों की ख़्वाहिश से रोका, तो बेशक जन्नत ही उस शख़्स का ठिकाना है ।

नफ़्स को बुराइयों से पाक करने का त़रीक़ा :

ऊपर की आयत से येह भी मालूम हुवा कि नफ़्स को बुराइयों से पाक करने का एक ही त़रीक़ा है और वोह ''**मुजाहदा**'' है, यानी नफ़्स की मनमानी के ख़िलाफ़ करना । नफ़्स की अक्सर ख़्वाहिशात बुरी होती हैं, उन से नफ़्स को रोकना और इतना रोकना कि नफ़्स गुनाह से रुकने का आ़दी हो जाए और नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व इत्तेबाअ़ करना ज़िन्दगी का तरजीही अ़मल बन जाए । इसी से ईमान कामिल होता है और इसी से आख़ेरत की कामयाबी नसीब होती है । सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस की ख़्वाहिश मेरे लाए हुवे (दीन) के ताबेअ़ ना हो जाए ।'' (شرح السنه، 1/85، حدیث:104) और अल्लाह पाक ने फ़रमाया : ﴿وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ یَخْشَ اللّٰهَ وَ یَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ(۵۲)﴾ तर्जमा : और जो अल्लाह और उस के रसूल की इत़ाअ़त करे और अल्लाह से डरे और उस (की नाफ़रमानी) से डरे तो येही लोग कामयाब हैं । (پ18، النور:52)

इ़बादात की पाबन्दी, नफ़्स के दबाने और इसे मग़्लूब करने ही की सूरतें हैं कि नफ़्स नमाज़, रोज़े, ज़कात वग़ैरहा से भागता है और कुव्वते इरादी इस्तेमाल कर के जब इ़बादात की पाबन्दी की जाए तो नफ़्स मग़्लूब हो कर मुत़ीअ़ बन जाता है । इस लिए नफ़्स पर क़ाबू पाने का एक मुफ़ीद त़रीक़ा इ़बादात की कसरत भी है ।

अल्लाह पाक हमें नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी से बचने और क़ुरआनो ह़दीस के अह़कामात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

लो मदीने का फूल लाया हूं मैं हदीसे रसूल लाया हूं
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

ख़ुसूसिय्याते रमज़ान

इन्सान की ज़िन्दगी में आने वाला हर लम्हा, दिन, महीना और साल आ़म नहीं होता बल्कि जब भी इन्सान के साथ कुछ ख़ास होता है वोह उस दिन, महीने और साल को याद रखता है और जब जब वोह वक़्त दोबारा आता है वोह पुरानी यादें ताज़ा करता है । इसी त़रह़ हर इस्लामी महीने की एक या एक से ज़ियादा ख़ुसूसिय्यात होती हैं, जैसे ईदुल फ़ित्र शव्वाल शरीफ़ में होती है, ज़ुल ह़िज्जा शरीफ़ में ह़ज्जे बैतुल्लाह होता है और ईदे क़ुरबान होती है, मुह़र्रम शरीफ़ की दसवीं तारीख़ को वाक़िआ़ ए करबला हुवा था, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र की 25 वीं तारीख़ को उ़र्से आला ह़ज़रत होता है, रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं तारीख़ को ईदे मीलादुन्नबी मनाई जाती है, रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं तारीख़ को ग़ौसे पाक की सालाना ग्यारहवीं शरीफ़ मनाई जाती है, वग़ैरा । इन्ही में से एक इस्लामी महीना रमज़ानुल मुबारक है जिस को कई ख़ुसूसिय्यात ह़ासिल हैं, क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद और फ़रामीने ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में रमज़ानुल मुबारक की कई ख़ुसूसिय्यात को बयान किया गया है । एक ह़दीसे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए :

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

(1) اِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ فُتِّحَتْ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ، وَغُلِّقَتْ اَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِيْنُ

तर्जमा जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शैत़ानों को ज़न्जीरों में जकड़ दिया जाता है ।

शर्हे ह़दीस इस फ़रमाने अ़ज़ीम में तीन ख़ुसूसिय्याते रमज़ान का तज़केरा हुवा 1 रमज़ान शरीफ़ के आने पर जन्नत के दरवाज़े खुलने का 2 जहन्नम के दरवाज़े बन्द होने और 3 शयात़ीन को ज़न्जीरों में जकड़ने का । इन तीनों की वज़ाह़त तरतीब वार जानिए :

1 जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं दरवाज़े खुलने के दो माना हो सकते हैं : ह़क़ीक़ी और मुरादी । ह़क़ीक़ी मआ़नी येह हो सकते हैं कि (1) जो मोमिन रमज़ान शरीफ़ में फ़ौत होता है वोह (जन्नती दरवाज़े खुले होने की वज्ह से) जन्नतियों में शामिल हो जाता है और उस की रूह़ उन लोगों की रूह़ों से मुख़्तलिफ़ होती है जो रमज़ान के इलावा फ़ौत होते हैं ।(2) (2) रमज़ान में शबो रोज़ मुसलमान आमाले सालेह़ा ब कसरत करते हैं तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं कि उन्हें उ़रूज और दरजए क़बूल तक पहुंचने में अदना सी भी रुकावट ना हो नीज़ येह कि जब जन्नत और आस्मान के दरवाज़े खुले होंगे तो रेह़मत व बरकत का तसलसुल के साथ नुज़ूल होता रहेगा ।(3) (3) जन्नतों के दरवाज़े खुलने की वज्ह

से जन्नत वाले हूरो ग़िलमान को ख़बर हो जाती है कि दुन्या में रमज़ान आ गया और वोह रोज़ादारों के लिए दुआओं में मश्ग़ूल हो जाते हैं।[4] जन्नत के दरवाज़े खुलने का मुरादी माना येह हो सकता है कि जन्नत में दाख़िले के अस्बाब खुल जाते हैं यानी रमज़ान में नेकियां और भलाइयां करने का कसरत से मौक़अ़ मिलता है। दरवाज़ों के खुलने में येह इशारा है कि रेहमतें नाज़िल होती हैं और मग़्फ़ेरतें कसरत से तक़्सीम होती हैं।[5]

2 जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं

इस के भी दो मत़लब हो सकते हैं : सराह़तन और किनायतन। सराह़तन मत़लब येह है कि माहे रमज़ान में वाक़ेई दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जिस की वज्ह से इस महीने में गुनहगारों बल्कि ग़ैरों की क़ब्रों पर भी दोज़ख़ की गर्मी नहीं पहुंचती।[6] और किनायतन मत़लब येह है कि रोज़ादार गुनाहों की आलूदगी से पाक रेहते हैं और उन्हें शेहवात के ख़ातिमे की वज्ह से गुनाहों पर उभारने वाले अस्बाब से नजात मिल जाती है।[7]

3 शैत़ानों को ज़न्जीरों में जकड़ दिया जाता है

इस का ह़क़ीक़ी माना तो येह है कि रमज़ान में इब्लीस मअ़ अपनी ज़ुर्रिय्यतों (औलादों) के क़ैद कर दिया जाता है। इस महीने में जो कोई भी गुनाह करता है वोह अपने नफ़्से अम्मारा की शरारत से करता है ना कि शैत़ान के बेहकाने से। इस से येह एतेराज़ दूर हो गया कि जब शैत़ान बन्द हो गया तो इस महीने में गुनाह कैसे होते हैं?[8] इस एतेराज़ का एक जवाब येह है कि सारे शयात़ीन को नहीं बल्कि सिर्फ़ सरकश शैत़ानों को क़ैद किया जाता है, येही वज्ह है कि रमज़ान के महीने में दूसरे महीनों की निस्बत नेकियां ज़ियादा और गुनाह कम होते हैं (इस का आ़म मुशाहदा है कि रमज़ान शरीफ़ में मस्जिदें नमाज़ियों से भर जाती हैं कि देर से पहुंचने वालों को जगह नहीं मिलती, लोग कसरत से नवाफ़िल पढ़ते हैं, तिलावते कुरआन करते हैं, ज़िक्रो दुरूद की कसरत करते हैं, सदक़ा ओ ख़ैरात बढ़ा देते हैं) दूसरी बात येह कि शयात़ीन को जकड़ने से येह लाज़िम नहीं आता कि बुराइयां और गुनाह बिलकुल ही ना हों क्यूंकि शैत़ान के बेहकाने के इ़लावा भी शर और फ़साद के कई ज़राएअ़ हैं जैसे नफ़्से अम्मारा, बुरी आ़दतें और इन्सानी शैत़ान।[9]

जबकि शयात़ीन को ज़न्जीरों में जकड़ने का मजाज़ी माना येह है कि रमज़ान में शयात़ीन मुसलमानों को वरग़ला नहीं सकते जैसा दूसरे महीनों में करते हैं क्यूंकि मुसलमान रोज़े, तिलावते कुरआन और दूसरी नेकियों में मसरूफ़ होते हैं, और अगर शयात़ीन फ़साद फैलाने में कामयाब हो भी जाएं तो येह दूसरे महीनों की निस्बत बहुत कम होता है।[10]

रमज़ान शरीफ़ की मज़ीद ख़ुसूसिय्यात

1 रमज़ान माहे सियाम है,

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुवे थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।[11]

2 रमज़ान माहे नुज़ूले कुरआन है,

﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना जिस में कुरआन उतरा लोगों के लिए हिदायत और रेहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें।[12]

3 इस में एक रात है जो हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है, ﴿لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।[13]

4 माहे रमज़ान मग़्फ़ेरते ज़ुनूब का सबब है, उस शख़्स को ख़सारे में क़रार दिया गया जिस ने रमज़ान को पाया और गुनाहों की मुआ़फ़ी ना पा सका, रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

وَرَغِمَ أنفُ رَجُلٍ دَخَلَ عليهِ رَمضانُ ثمَّ انْسَلخَ قبلَ اَن يُّغفَرَ لَه

तर्जमा : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिसे माहे रमज़ान नसीब हो लेकिन उस के बख़्शे जाने से पेहले ही माहे रमज़ान गुज़र जाए।[14]

5 रमज़ान की सेह़री और इफ़्त़ारी को भी बरकत वाला क़रार दिया गया है :

قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: تَسَحَّرُوا فَاِنَّ فِی السَّحُورِ بَرَکَۃً

यानी सेह़री किया करो क्यूंकि इस में बरकत है।[15]

اَنَّ رَسُولَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا یَزَالُ النَّاسُ بِخَیْرٍ مَا عَجَّلُوا الفِطرَ

तर्जमा : जब तक लोग इफ़्त़ारी में जल्दी करते रहेंगे, भलाई पर क़ाइम रहेंगे।[16]

6 प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस मुबारक महीने में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 सत्तर गुना हो जाता है।[17]

7 प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस महीने का पेहला अ़शरा रेह़मत, दूसरा मग़्फ़ेरत और तीसरा जहन्नम से नजात का है।[18]

रमज़ान दर्से मुसावात भी देता है, ग़रीब हो या अमीर ! हर एक के लिए रोज़े का दौरानिया और दीगर पाबन्दियां एक जैसी होती हैं।

मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिए मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तारीख़ी किताब **"फ़ैज़ाने रमज़ान"** पढ़ लीजिए। अल्लाह पाक हमें माहे रमज़ान की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) بخاری،2/399، حدیث:3277 (2) فیض القدیر،4/52، تحت الحدیث:4479 (3) نزھۃ القاری،3/291 (4) مراٰۃ المناجیح،3/133 (5) فیض القدیر، 4/52، تحت الحدیث:4479 (6) مراٰۃ المناجیح، 3/133 (7) معونۃ القاری، 4/250 (8) مراٰۃ المناجیح،3/134 (9) عمدۃ القاری،8/27 (10) معونۃ القاری،4/250 (11) پ2، البقرۃ:183 (12) پ2، البقرۃ:185 (13) پ30، القدر:3 (14) ترمذی، 5/320، حدیث:3556 (15) بخاری،1/633، حدیث:1923 (16) بخاری، 1/645، حدیث:1957 (17) دیکھئے: ابن خزیمہ، 3/191، حدیث: 1887 (18) دیکھئے: ابن خزیمہ، 3/191، حدیث:1887۔

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पेहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लेहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع،3/2.5، ..75) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, इन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुह़म्मद	अ़ब्दुल ख़ालिक़	पैदा करने वाले का बन्दा	अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की त़रफ़ लफ़्ज़े अ़ब्द की इज़ाफ़त के साथ
मुह़म्मद	नासिर रज़ा	मदद करने वाला	"नासिर" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम और रज़ा आला ह़ज़रत की निस्बत से
मुह़म्मद	सादिक़	सच्चा	सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम मुबारक

बच्चियों के 3 नाम

जुवैरिया	छोटी लड़की	उम्मुल मोमिनीन رضی اللہ عنہا का बा बरकत नाम
ऐमन	सीधी त़रफ़	सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम
सुम्बुल	एक क़िस्म की ख़ुश्बूदार घास	सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम

(जिन के यहां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

(क़िस्त़ : 02)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़

पिछली क़िस्त़ में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाले चन्द वुफ़ूद के अह़वाल आप ने पढ़े, इस क़िस्त़ में भी मज़ीद चन्द वुफ़ूद के साथ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ मुलाह़ज़ा कीजिए !

ख़ुश अख़्लाक़ी से मिलना

ग़ज़्वए ख़न्दक़ के साल क़बीला ए अशजअ़ का एक वफ़्द सुल्ह़ का मुआ़हदा करने के लिए हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा । येह लोग मदीने आ कर मह़ल्ला ए "शिअ़्बे सल्अ़" में क़ियाम पज़ीर हुवे । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब इन की आमद की इत्तेलाअ़ मिली तो आप ख़ुद इन के पास तशरीफ़ ले गए, काफ़ी देर इन से गुफ़्तगू फ़रमाने के बाद सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि मेहमानों की खजूरों से तवाज़ोअ़ करो । वोह लोग खाने से फ़ारिग़ हो गए तो आप ने उन्हें बड़ी नर्मी के साथ इस्लाम क़बूल करने की दावत दी । उन्हों ने जवाब दिया : हम इस्लाम क़बूल करने नहीं आए बल्कि आप से अम्न और सुल्ह़ का मुआ़हदा करने आए हैं ।

रेह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम केहते हो वोह हमें मन्ज़ूर है । चुनान्चे सुल्ह़ और अम्न का एक मुआ़हदा लिखा गया जिस को फ़रीक़ैन ने मन्ज़ूर कर लिया । इस दौरान अहले वफ़्द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमाना से इतने मुतास्सिर हो चुके थे कि मुआ़हदा ए सुल्ह़ मारिज़े तेह़रीर में आने के फ़ौरन बाद वोह सब पुकार उठे : ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और आप का दीन बरह़क़ है ।[1]

वफ़्द का इस्तिक़्बाल करना और उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाना

सिन नौ हिजरी में क़बीला ए "उ़ज़्रह" के अफ़राद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे । हुज़ूर ने उन से पूछा : तुम कौन हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम बनी उ़ज़्रह हैं क़ुसय के (मां की त़रफ़ से) भाई हैं हम ने "क़ुसय" के मददगार बन कर ख़ुज़ाआ़ और बनी बक्र को मक्के से निकाला था इस लिए हम आप के क़राबतदार भी हैं । रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के जवाब में फ़रमाया : مَرْحَبًا بِكُمْ وَ اَهْلًا । फिर उन्हें ग़ैब की ख़बर देते हुवे बशारत दी कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द ही उन का अ़लाक़ा हिरक़्ल के चुंगल से आज़ाद हो जाएगा ।

अहले वफ़्द ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से चन्द सवालात पूछे । तसल्ली बख़्श जवाब मिलने पर सब

हल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें नसीहत फ़रमाई कि 1 काहिनों से सवाल ना पूछा करो और 2 जो कुरबानियां तुम अब देते हो वोह सब मन्सूख़ हैं, सिर्फ़ ईदुल अदहा की कुरबानी बाक़ी रेह गई है अगर इस्तेताअ़त हो तो ज़रूर कुरबानी किया करो। येह लोग चन्द रोज़ बतौ़रे मेहमान हुज़ूर के पास ठेहरे और फिर इन्आ़मो इकराम से मुशर्रफ़ हो कर रुख़्सत हुवे।[2]

वुफ़ूद को तोहफ़ों से नवाज़ना

बनू हारिस बिन कअ़ब नजरान का एक निहायत मुअ़ज़्ज़ज़ और जंगजू क़बीला था। सारे अ़रब में शोहरत थी कि उस ने कभी दुश्मन से शिकस्त नहीं खाई। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तब्लीगे़ इस्लाम के लिए उस क़बीले में भेजा था। उन की कोशिश से येह क़बीला मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गया और उन का एक वफ़्द हज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बारगाहे रिसालत में हाजिर हुवा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा कि ज़माना ए जाहिलिय्यत में जो तुम से लड़ा वोह हमेशा मग़लूब रहा इस का क्या सबब है? उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह! इस के तीन सबब थे : 1 हम किसी पर जुल्म नहीं करते थे। 2 हम खुद किसी पर चढ़ाई नहीं करते थे। 3 जब कोई हम पर लड़ाई मुसल्लत कर देता तो हम मैदाने जंग में सीसा पिलाई दीवार बन जाते और कभी मुन्तशिर नहीं होते थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक तुम सच केहते हो, जो फ़ौज या जमाअ़त इन उसूलों पर लड़ेगी वोह हमेशा ग़ालिब रहेगी।

जब येह लोग रुख़्सत होने लगे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के सरदार क़ैस बिन हसीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर अराकीने वफ़्द को इन्आ़मात से नवाज़ा।[3]

नसीहत फ़रमाना

शाबान 10 हिजरी में ख़ौलान के मुसलमान बारगाहे नबवी में हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की, कि हम खुदा और रसूल के इताअ़त गुज़ार हैं और तवील सफ़र कर के महज़ आप की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुवे हैं। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ زَارَنِیْ بِالْمَدِیْنَۃِ کَانَ فِیْ جِوَارِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ

यानी जिस ने मदीना आ कर मेरी ज़ियारत की वोह क़ियामत के दिन मेरा हमसाया होगा।

उस क़बीले के लोग "अ़म अन्स" नामी एक बुत की परसतिश किया करते थे। हुज़ूर ने पूछा : तुम ने अ़म अन्स का क्या किया? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह हम आप पर ईमान ले आए हैं और उस की परसतिश तर्क कर दी है अलबत्ता चन्द बूढ़े लोग अभी तक उस की पूजा करते हैं। फिर उन्हों ने जाहिलिय्यत के ज़माने के चन्द वाक़ेआ़त सुनाए कि वोह किस तरह अ़म अन्स पर चढ़ावे चढ़ाते थे और खुद भूके रेह कर हर चीज़ से उस का हिस्सा निकालते थे। हुज़ूर ने उन लोगों को फ़राइज़े दीन सिखाए और बतौ़रे ख़ास येह नसीहतें फ़रमाईं :

1 : अ़हद को पूरा करो।

2 : अमानत में ख़ियानत ना करो।

3 : पड़ोसियों से अच्छा सुलूक करो।

4 : किसी पर जुल्म ना करो क्यूंकि जुल्म क़ियामत के दिन ज़ालिम के लिए अन्धेरी रात साबित होगा।[4]

दर्से सीरत

मोहतरम क़ारेईन! हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका के इन रौशन गोशों से हमें सीखने को बहुत कुछ मिलता है। हमें भी चाहिए कि आने वाले मेहमानों, दोस्तों और अ़ज़ीज़ों का खुश दिली से इस्तिक़्बाल करें। बाहम खुश अख़्लाक़ी से पेश आएं। मौक़ेअ़ की मुनासिबत से सामने वाले को नसीहत करें। अच्छे मशवरे दें। वक़्ते रुख़्सत आसानी हो तो तहाइफ़ भी दें। (बक़िय्या अगले शुमारे में.....اِنْ شَآءَاللّٰہ)

(1)طبقات ابن سعد، 1/ 233 مفہوماً (2)شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 5/215 (3)طبقات ابن سعد، 1/256، شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 5/173 ملخصاً (4)شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 5/218۔

(क़िस्त : 04)

देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के जवाबात

अल्लाह करीम के आख़री नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़रब शरीफ़ के गांव देहात में रेहने वाले सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जो सवालात किया करते थे, उन में से 12 सवालात और उन के जवाबात तीन क़िस्तों में बयान किए जा चुके, यहां मज़ीद 3 सवालात और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जवाबात ज़िक्र किए गए हैं :

जन्नत के फल कैसे हैं ? ह़ज़रते उ़त्बा बिन अ़ब्द सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक आराबी आया और सवाल किया : مَا حَوْضُكَ هٰذَا الَّذِی تُحَدِّثُ عَنْهُ؟ यानी वोह ह़ौज़ कैसा है जिस के बारे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बताते हैं ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जैसे (मक़ामे) बैज़ा से बुसरा का दरमियानी फ़ास्ला है, (फिर) अल्लाह करीम उस में मेरे लिए एक कुराअ़ बढ़ा देगा, कोई इन्सान नहीं जानता कि उस के किनारे कहां हैं । ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक्बीर बुलन्द की (यानी अल्लाहु अक्बर कहा) । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ौज़े कौसर पर मेरे पास राहे ख़ुदा में जंग करने वाले फ़ुक़रा आएंगे, मुझे यक़ीन है कि अल्लाह करीम मुझे उस कुराअ़ तक पहुंचा देगा और मैं उस से पियूंगा । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : إِنَّ رَبِّی وَعَدَنِی أَنْ يُدْخِلَ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِی سَبْعِينَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ यानी अल्लाह करीम ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि मेरे सत्तर हज़ार उम्मतियों को बग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करेगा, ثُمَّ يَشْفَعُ كُلُّ أَلْفٍ لِسَبْعِينَ أَلْفًا फिर हर एक हज़ार सत्तर सत्तर हज़ार की शफ़ाअ़त करेंगे । फिर (उन जन्नतियों में) अल्लाह करीम अपने तीन चुल्लू के ज़रीए़ मेरे लिए इज़ाफ़ा कर देगा । (येह सुन कर) ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक्बीर बुलन्द की और फ़रमाया : बेशक अल्लाह करीम पेहले सत्तर की शफ़ाअ़त उन के आबा ओ अजदाद और ख़ानदान वालों के ह़क़ में क़बूल फ़रमाएगा, और मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह पाक मुझे उन आख़िर वाली तीन लप में से किसी एक में कर दे । आराबी ने अ़र्ज़ की : يَا رَسُولَ اللهِ، فِيهَا فَاكِهَةٌ؟ या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उस में फल भी हैं ? नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : نَعَمْ हां ! وَفِيهَا شَجَرَةٌ تُدْعَى طُوبَى هِيَ تُطَابِقُ الْفِرْدَوْسَ यानी उस में एक दरख़्त है जिसे त़ूबा कहा जाता है वोह फ़िरदौस को ढांपे हुवे है । आराबी ने पूछा : أَيُّ شَجَرٍ أَرْضِنَا تُشْبِهُ؟ वोह हमारी ज़मीन के किस दरख़्त की त़रह़ है ? नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَيْسَ تُشْبِهُ شَيْئًا مِنْ شَجَرِ أَرْضِكَ वोह तुम्हारी ज़मीन के किसी दरख़्त की त़रह़ नहीं है, मगर क्या तुम कभी मुल्के शाम गए हो ? आराबी ने कहा : नहीं ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : فَإِنَّهَا تُشْبِهُ شَجَرَةً بِالشَّامِ تُدْعَى الْجَوْزَةَ تَنْبُتُ عَلَى سَاقٍ وَاحِدٍ، ثُمَّ يَنْتَشِرُ أَعْلَاهَا यानी वोह मुल्के शाम के एक दरख़्त की त़रह़ है जिसे जोज़ह़ यानी अख़रोट का दरख़्त कहा जाता है, वोह एक ही तने पर उगता है फिर उस की शाख़ें फैल जाती हैं । उस

आराबी ने सवाल किया : فَمَا عِظَمُ أَصْلِهَا؟ उस की जड़ कितनी लम्बी है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम्हारे पालतू ऊंटों में से चार साल का ऊंट चलना शुरूअ करे वोह दरख़्त उस वक़्त तक ख़त्म नहीं होगा जब तक कि बुढ़ापे की वज्ह से उस के सीने की हड्डियां ना टूट जाएं। आराबी ने पूछा : فِيهَا عِنَبٌ؟ क्या उस में अंगूर हैं ? फ़रमाया : हां ! उस ने पूछा : فَمَا عِظَمُ الْعُنْقُودِ مِنْهَا؟ उस के ख़ोशे की लम्बाई कितनी है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़राबे अबक़अ (मुर्दार ख़ोर सियाह व सफ़ेद दो रंगा कव्वे) का मुसलसल एक महीने तक यूं उड़ने का फ़ासला कि जिस में वोह ना तो गिरे, ना रुके और ना ही सुस्ती करे। आराबी ने पूछा : وَمَا عِظَمُ الْحَبَّةِ مِنْهُ؟ यानी जन्नत का एक अंगूर कितना बड़ा है ? नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : هَلْ ذَبَحَ أَبُوكَ تَيْسًا مِنْ غَنَمِهِ عَظِيمًا؟ क्या तुम्हारे वालिद ने कभी अपने रेवड़ में से कोई बड़ा जंगली बकरा ज़ब्ह किया है ? उस ने कहा : जी। नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या उस की खाल उतार कर तुम्हारी वालेदा को दी हो और कहा हो कि उस की सफ़ाई कर के रंग लो फिर उसे फाड़ कर एक बड़ा सा डोल बनाओ जिस के ज़रीए हम अपने जानवरों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ सैराब कर सकें ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : فَإِنَّهُ كَذٰلِكَ यानी वोह अंगूर का दाना भी ऐसा ही है। फिर आराबी ने कहा : فَإِنَّ ذٰلِكَ يَسَعُنِي وَيَسَعُ أَهْلَ بَيْتِي؟ वोह दाना तो मुझे और मेरे सारे घर वालों के लिए काफ़ी होगा ? नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَامَّةَ عَشِيرَتِكَ यानी तेरे सारे रिश्तेदारों को भी।[1]

बीमारी उड़ कर नहीं लगती हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا عَدْوٰى وَلَا صَفَرَ وَلَا هَامَّةَ यानी कोई बीमारी उड़ कर लगने वाली नहीं, ना ही सफ़र कोई चीज़ है और ना कोई हाम्मा (ना परिन्द ना उल्लू) है। एक आराबी ने सवाल किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم فَمَا بَالُ إِبِلِي، تَكُونُ فِي الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الظِّبَاءُ، فَيَأْتِي الْبَعِيرُ الْأَجْرَبُ فَيَدْخُلُ بَيْنَهَا فَيُجْرِبُهَا؟ यानी फिर उस ऊंट का क्या मुआ़मला है जो रेगिस्तान में हिरन की त़रह़ होता है फिर उसे ख़ारशी ऊंट मिलता है तो उसे भी ख़ारिश वाला कर देता है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : فَمَنْ أَعْدَى الْأَوَّلَ؟ तो फिर पेहले ऊंट को किस ने ख़ारिश वाला कर दिया ?[2] "अ़दवा यानी बीमारी उड़ कर लगना" अहले अ़रब बहुत से अमराज़ के बारे में ऐसा एतेक़ाद रखते थे, इन में से एक ख़ारिश भी है, इसी लिए आराबी ने सह़ीह़ ऊंटों के बारे में सवाल किया जो ख़ारिश ज़दा ऊंट के साथ मिलने के बाद ख़ारिश ज़दा हो गए। इस के जवाब में नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पेहले ऊंट को बीमारी किस ने लगाई थी ? आप की मुराद येह थी कि पेहले ऊंट को भी उड़ कर नहीं लगी बल्कि अल्लाह पाक के हुक्म और तक़्दीर से लगी, चुनान्चे दूसरे और बाद वाले ऊंटों के साथ भी येही मुआ़मला हुवा।

कबीरा गुनाह कौन से हैं ? हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ यानी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक देहात का रेहने वाला आदमी आया और सवाल किया : يَا رَسُولَ اللهِ، مَا الْكَبَائِرُ؟ यानी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कौन से हैं ? नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْإِشْرَاكُ بِاللهِ यानी अल्लाह पाक के साथ शरीक करना। उस ने फिर अ़र्ज़ की : ثُمَّ مَاذَا؟ फिर कौन सा ? इरशाद फ़रमाया : ثُمَّ عُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ यानी मां-बाप की नाफ़रमानी करना। आराबी ने सवाल किया : फिर कौन सा गुनाह बड़ा है ? नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : الْيَمِينُ الْغَمُوسُ यानी झूटी क़सम खाना।[3]

(जारी है)

---

(1) معجم کبیر، 17/127، حدیث:312۔ صفۃ الجنۃ لابی نعیم، 2/186، حدیث: 346۔ معجم اوسط، 1/146، حدیث:402 (2) بخاری، 4/26، حدیث:5717 (3) بخاری، 4/377، حدیث:6920۔

(क़िस्त : 3)

ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام

क़ौम के त़न्ज़िया जुम्ले (क़ौम ने) कहा : ऐ शुऐ़ब ! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें या अपने माल में अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ अ़मल ना करें । वाह भई ! तुम तो बड़े अ़क़्ल मन्द, नेक चलन हो ।[1] यानी ह़ैरान हो कर कहा कि आप तो बड़े अ़क़्लमन्द और नेक चलन हैं, फिर आप हमें कैसे येह हुक्म दे रहे हैं कि हम नस्ल दर नस्ल चलते हुवे अपने माबूद की पूजा के त़रीक़े को छोड़ दें । आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को इन बातों का जवाब देते हुवे फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! मुझे बताओ कि अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रौशन दलील यानी इ़ल्म, हिदायत, दीन और नबुव्वत से सरफ़राज़ किया गया होऊं और अल्लाह पाक ने मुझे अपने पास से बहुत ज़ियादा ह़लाल माल अ़त़ा फ़रमाया हुवा हो तो फिर क्या मेरे लिए येह जाइज़ है कि मैं उस की वह़ी में ख़ियानत करूं और उस का पैग़ाम तुम लोगों तक ना पहुंचाऊं । येह मेरे लिए किस त़रह़ रवा हो सकता है कि अल्लाह मुझे इतनी कसीर नेमतें अ़त़ा फ़रमाए और मैं उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करूं ।[2]

क़ौमे मदयन पर अ़ज़ाब आ गया मोजिज़ा दिखाने और क़ौम को बार बार समझाने के बाद भी क़ौम की सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती रही जब आप मायूस हो गए कि इन की इस्लाह़ नहीं होगी और ना ही येह हिदायत की त़रफ़ आएंगे तो आप ने इन के ख़िलाफ़ अल्लाह से दुआ़ की,[3] ऐ हमारे रब ! हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमाने वाला है ।[4] आख़िरे कार उस नाफ़रमान क़ौम पर अ़ज़ाब आ गया और वोह क़ौम हलाकत व बरबादी का निशान यूं बन गई कि उन्हें शदीद ज़लज़ले ने अपनी गिरफ़्त में ले लिया तो सुब्ह़ के वक़्त वोह अपने घरों में ओंधे पड़े रेह गए ।[5]

मुर्दा क़ौम से ख़ित़ाब क़ौम की हलाकत के बाद जब आप عَلَیْہِ السَّلَام उन की बेजान लाशों पर गुज़रे तो उन से फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की लेकिन तुम किसी त़रह़ ईमान ना लाए ।[6]

क़ौमे ऐका दूसरी क़ौम जिस की जानिब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया गया वोह अहले ऐका थे । ऐका झाड़ी को केहते हैं, इन लोगों का शेहर चूंकि सर सब्ज़ जंगलों और हरे भरे दरख़्तों के दरमियान था इस लिए इन्हें झाड़ी वाला फ़रमाया गया ।[7]

झूटे माबूद ऐका के बादशाह का नाम "अबू जाद" था इस ने अपनी क़ौम के लिए 30 बात़िल माबूद बनाए, अपने ख़ानदान के लिए सोने और जवाहिरात के 10 झूटे माबूद जबकि अ़वाम के लिए चांदी, तांबा, पथ्थर, लोहे और लकड़ी के 20 झूटे माबूद बनाए ।[8]

नेकी की दावत आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम ऐका को अल्लाह पाक पर ईमान लाने की दावत दी और यूं समझाया : क्या तुम डरते नहीं ? बेशक मैं तुम्हारे लिए

अमानत दार रसूल हूं। तो अल्लाह से डरो और मेरी इत़ाअ़त करो। और मैं इस (तब्लीग़) पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है। (ऐ लोगो !) नाप पूरा करो और नाप तोल को घटाने वालों में से ना हो जाओ। और बिलकुल दुरुस्त तराज़ू से तोलो। और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के ना दो और ज़मीन में फ़साद फ़ैलाते ना फिरो। और उस से डरो जिस ने तुम्हें और पेहली मख़्लूक़ को पैदा किया।(9)

बादशाह ने इन्कार कर दिया इस दावत को सुन कर बादशाह केहने लगा : आप ने अपना पैग़ाम पहुंचा दिया और हम ने सुन लिया अब हमारे पास दोबारा लौट कर ना आइएगा, आप ने फ़रमाया : मैं अल्लाह का रसूल हूं, मैं बार बार आता रहूंगा और दावते दीन देता रहूंगा यहां तक कि तुम अल्लाह की इत़ाअ़त कर लो। बादशाह आप की बात सुन कर बहुत गुस्सा हुवा, येह देख कर आप वापस लौट आए और तब्लीग़े दीन जारी रखी और कुफ़्फ़ार को एक अल्लाह की त़रफ़ बुलाते रहे और नसीह़तें करते रहे लेकिन वोह क़ौम बाज़ ना आई अलबत्ता उस बादशाह का एक वज़ीर ईमान ले आया था लेकिन उस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अपना ईमान छुपाए रखने की गुज़ारिश की तो आप ने उस के ईमान को मख़्फ़ी (छुपा) रेहने दिया।(10)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के इस फ़रमान में कि "मैं बार बार आता रहूंगा और दावते दीन देता रहूंगा यहां तक कि तुम अल्लाह की इत़ाअ़त कर लो" हमारे लिए बड़ा प्यारा दर्स है कि अगर सामने वाला हमारी नेकी की दावत क़बूल नहीं करता तो हम दिल बरदाश्ता हो कर नेकी की दावत देना ना छोड़ें और किसी को एक आध मरतबा नेकी की दावत दे कर येह ख़याल ना करें कि हम ने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी और अब उसे दोबारा नेकी की दावत नहीं देनी, ऐ अल्लाह ! अपने प्यारे नबी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के सदक़े हमें नेकी की दावत देने का अ़ज़ीम जज़्बा अ़त़ा फ़रमा, आमीन।

क़ौम की बद तमीज़ी आख़िरे कार उन लोगों ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की नसीह़त सुन कर कहा : ऐ शुऐ़ब ! तुम तो उन लोगों में से हो जिन पर जादू हुवा है और तुम कोई फ़रिश्ते नहीं बल्कि हमारे जैसे एक आदमी ही हो और तुम ने जो नबुव्वत का दावा किया बेशक हम तुम्हें उस में झूटा समझते हैं। अगर तुम नबुव्वत के दावे में सच्चे हो तो अल्लाह पाक से दुआ़ करो कि वोह अ़ज़ाब की सूरत में हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दे।(11) (ऐ अल्लाह! हमें ऐसी बात केहने से मेह़फ़ूज़ फ़रमा और हमें अपने अम्बिया व औलिया का अदब नसीब फ़रमा, आमीन)

क़ौमे ऐका पर अ़ज़ाब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने उन लोगों का जवाब सुन कर उन से फ़रमाया : मेरा रब तुम्हारे आमाल को और जिस अ़ज़ाब के तुम मुस्तह़िक़ हो उसे ख़ूब जानता है, वोह अगर चाहेगा तो आस्मान का कोई टुकड़ा तुम पर गिरा देगा या तुम पर कोई और अ़ज़ाब नाज़िल करना उस की मशिय्यत में होगा तो मेरा रब वोह अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल फ़रमा देगा।(12) फिर एक दिन उन्हें शामियाने के दिन के अ़ज़ाब ने पकड़ लिया, बेशक वोह बड़े दिन का अ़ज़ाब था जो कि इस त़रह़ हुवा कि उन्हें शदीद गर्मी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात दिन गर्मी के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार रहे। तेहख़ानों में जाते वहां और ज़ियादा गर्मी पाते। इस के बाद एक बादल आया सब उस के नीचे आ के जम्अ़ हो गए तो उस से आग बरसी और सब जल गए।(13)

मोमिन मेह़फ़ूज़ रहे इस क़ौम में से अक्सर लोग ईमान नहीं लाए थे, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर मोमिनीन कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब नाज़िल होता देखते रहे लेकिन अल्लाह की रेह़मत से मोमिनों पर कुछ भी आंच ना आई, फिर आप ने कुफ़्फ़ार के माल को अपनी मुसलमान क़ौम पर तक़्सीम फ़रमा दिया इस के बाद एक मोमिना औ़रत से निकाह़ कर लिया और मुसलसल सरज़मीने मदयन में आबाद रहे।(14)

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

---

(1)پ12، ھود:87(2)صراط الجنان،4/483،484(3)شرح الشفا لعلی القاری، 1/335(4)پ9، الاعراف:89(5)پ9، الاعراف:91(6)صراط الجنان، 3/382(7)صراط الجنان، 5/257(8)نہایۃ الارب، 13/145(9)پ19، الشعراء:177تا184(10)نہایۃ الارب، 13/147(11)صراط الجنان، 7/153 (12)صراط الجنان، 7/154(13)صراط الجنان، 7/154(14)نہایۃ الارب، 13/149۔

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

1 रोज़ा व तरावीह़

सवाल : जो रोज़ा नहीं रखता क्या वोह भी तरावीह़ पढ़ेगा ?

जवाब : जी हां ! हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिए तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मोअक्कदा है । (बहारे शरीअ़त, 1/688) लेकिन रोज़ा रखना फ़र्ज़ है, अगर कोई जान बूझ कर रोज़ा नहीं रखेगा तो सख़्त गुनहगार होगा लेकिन उस के लिए भी तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मोअक्कदा है । इसी त़रह़ अगर कोई शरई उ़ज़्र की वज्ह से रोज़ा नहीं रख पाता तब भी उस के लिए तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मोअक्कदा है ।

2 नमाज़े तरावीह़ में सुन्नत की निय्यत करेंगे या नफ़्ल की ?

सवाल : नमाज़े तरावीह़ में सुन्नत की निय्यत करेंगे या नफ़्ल की ?

जवाब : तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मोअक्कदा है । (बहारे शरीअ़त, 1/688) लेहाज़ा इस में सुन्नत की निय्यत करेंगे ।

3 तस्बीहे़ तरावीह़ याद ना हो तो क्या पढ़ें ?

सवाल : क्या चार रक्अ़त तरावीह़ के बाद तस्बीहे़ तरावीह़ पढ़ना ज़रूरी है ? अगर किसी को याद ना हो तो कोई और दुआ़ वग़ैरा पढ़ सकते हैं ?

जवाब : येही तस्बीह़ पढ़ना ज़रूरी नहीं है, कलेमा या दुरूद शरीफ़ वग़ैरा भी पढ़ सकते हैं, चुप भी रहे तो कोई गुनाह नहीं है, नीज़ चार रक्अ़त तरावीह़ के बाद बैठना मुस्तह़ब है, अगर कोई नहीं बैठे तो गुनाह नहीं । (बहारे शरीअ़त, 1/690 मुलख़्ख़सन)

4 इशा के फ़र्ज़ से पेहले तरावीह़ पढ़ना कैसा ?

सवाल : अगर कोई तरावीह़ के दौरान आए तो वोह पेहले इ़शा के फ़र्ज़ पढ़े या डायरेक्ट तरावीह़ की जमाअ़त में शामिल हो जाए ?

जवाब : पेहले इ़शा के फ़र्ज़ और दो सुन्नतें पढ़ लीजिए इस के बाद तरावीह़ पढ़िए । इ़शा के फ़र्ज़ों से पेहले तरावीह़ नहीं पढ़ सकते ।

5 औ़रतों का आठ या दस रक्अ़तें तरावीह़ पढ़ना कैसा

सवाल : क्या औ़रतें आठ या दस रक्अ़त तरावीह़ पढ़ सकती हैं ?

जवाब : मर्द व औ़रत दोनों को 20 रक्अ़तें ही तरावीह़ पढ़ने का हुक्म है । (बहारे शरीअ़त, 1/688)

6 बेटी को सदक़ए फ़ित्र देना कैसा ?

सवाल : क्या बाप अपनी बेटी को सदक़ए फ़ित्र दे सकता है ?

जवाब : नहीं दे सकता ।

7 माज़ूर मर्द का मस्जिदे बैत में एतेकाफ़ करना कैसा ?

सवाल : क्या माज़ूर मर्द ह़ज़रात मस्जिदे बैत में एतेकाफ़ कर सकते हैं ?

जवाब : नहीं । मर्द ह़ज़रात मस्जिदे बैत में एतेकाफ़ नहीं कर सकते, मस्जिदे बैत में सिर्फ़ औ़रतें ही एतेकाफ़ करेंगी ।

8 सास से पर्दा करना कैसा ?

सवाल : क्या दामाद का अपनी ख़ुश दामन यानी सास से भी पर्दा है ?

जवाब : दामाद और सास में पर्दा नहीं है, इसी त़रह़ बहू और सुसर में भी पर्दा नहीं, लेकिन बेहतर येह है कि सास अपने दामाद से और बहू अपने सुसर से पर्दा करे कि पर्दे ही में आ़फ़िय्यत है ।

9 सिर्री नमाज़ में मुक़्तदी आमीन कब कहे ?

सवाल : बाज़ औक़ात सिर्री नमाज़ों (यानी वोह नमाज़ें जिन में इमाम साह़िब ऊंची आवाज़ में तिलावत नहीं करते,) में माईक इमाम साह़िब के मुंह के क़रीब होता है, जब वोह सूरए फ़ातेह़ा पढ़ रहे होते हैं तो वोह सुनी जा रही होती है, जब सूरए फ़ातेह़ा ख़त्म हो तो उस वक़्त मुक़्तदी आमीन केह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : सिर्री नमाज़ में इमाम ने आमीन कही और येह (यानी मुक़्तदी) उस के क़रीब था कि इमाम की आवाज़ सुन ली तो येह भी (आमीन) कहे । (बहारे शरीअ़त, 1/525)

माईक के ज़रीए़ आमीन की आवाज़ पहुंचे येह शर्त़ नहीं है, माईक हो या ना हो बस इमाम ने आमीन कही येह (चाहे माईक ही से) पता चल गया तो अब मुक़्तदी के लिए आमीन केहना सुन्नत है ।

10 लिख रहा हूं नाते सरवर सब्ज़ गुम्बद देख कर

सवाल : आप ने एक कलाम तेह़रीर फ़रमाया है :

लिख रहा हूं नाते सरवर सब्ज़ गुम्बद देख कर
कैफ़ त़ारी है क़लम पर सब्ज़ गुम्बद देख कर

येह कलाम कब तेह़रीर फ़रमाया और क्या उस वक़्त ज़ाहिरी त़ौर पर सब्ज़ गुम्बद आप की निगाहों के सामने था ?

जवाब : बहुत साल पेहले मदीना शरीफ़ में सैयदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जानशीन ह़ज़रते मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे कोई शेर सुनाया जिस का रदीफ़[1] था "सब्ज़ गुम्बद देख कर" । और फ़रमाया कि मेरे पास पेहले फुलां का[2] येह कलाम था अब गुम हो गया है, तुम इसी शेर के मुत़ाबिक़ कोई नया कलाम लिखो । इस पर मैं ने उसी बह्र (यानी शेर के वज़्न) पर मस्जिदे नबवी शरीफ़ में बैठ कर येह कलाम लिखने की कोशिश की थी, माह व सिन याद नहीं है । फिर मैं ने अपने क़लम से लिखा हुवा कलाम जा कर ह़ज़रत की बारगाह में पेश किया । उस मौक़ेअ़ पर एक चुटकुला भी हुवा था, वोह येह कि एक इस्लामी भाई जो मेरे साथ थे वोह मुझ से येह कलाम मांग रहे थे कि येह लिखा हुवा कलाम मुझे दे दो, मैं ने ह़ज़रत से अ़र्ज़ कर दिया कि येह कलाम इन को चाहिए, ह़ज़रत ने "क्यूं दूं ?" फ़रमा कर देने से इन्कार फ़रमा दिया ।

11 सलातुल लैल पढ़ने का वक़्त

सवाल : सलातुल लैल के नवाफ़िल कब पढ़ेंगे ?

जवाब : नमाज़े इ़शा के बाद, बहारे शरीअ़त में है : रात में बाद नमाज़े इ़शा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल लैल केहते हैं । (बहारे शरीअ़त, 1/677)

12 क़ज़ा नमाज़ बैठ कर पढ़ना कैसा ?

सवाल : क्या क़ज़ा नमाज़ बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

जवाब : फ़र्ज़ नमाज़ों और वित्र की क़ज़ा बैठ कर नहीं पढ़ सकते अलबत्ता शरई उ़ज़्र है तो बैठ कर पढ़ सकते हैं । (बहारे शरीअ़त, 1/510,703)

---

(1) वोह लफ़्ज़ जो ग़ज़ल या क़सीदे वग़ैरा के मिसरओं या बैतों के अख़ीर में क़ाफ़िए के पीछे बार बार आए ।
(फ़ीरोज़ुल्लुग़ात उर्दू, स. 748)

(2) अफ़्सोस ! सगे मदीना लिखने वाले का नाम भूल गया है ।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 रोज़े मुसलसल रखने की मन्नत मान कर उन्हें अलग अलग रखना ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने अपने वालिद साहिब की सेह़तयाबी के लिए मुसलसल ग्यारह रोज़े रखने की मन्नत मानी थी, इस वक़्त الحمد لله मेरे वालिद साहिब सेह़तयाब हो चुके हैं, अब मैं उन मन्नत माने हुवे रोज़ों को अलग अलग दिनों में रखना चाहता हूं, क्या मेरे लिए ऐसा करना जाइज़ है ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अज़ रूए शरई मुसलसल रोज़े रखने की मन्नत मानी जाए तो उन को मुतफ़र्रिक़ यानी अलग अलग तौ़र पर रखना मन्नत की अदाएगी में किफ़ायत नहीं करता, क्यूंकि इस में मन्नत की अदाएगी नाक़िस तौ़र पर होती है, लेहाज़ा दरयाफ़्त की गई सूरत में जब आप ने मुसलसल 11 रोज़े रखने की मन्नत मानी है तो आप के लिए उन रोज़ों को मुतफ़र्रिक़ तौ़र पर रखना दुरुस्त नहीं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

2 सोश्यल प्लेट फ़ोर्मज़ पर वीडियो वग़ैरा लाइक कर के होने वाली अर्निंग

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ कम्पनीज़ / ऑनलाइन वेब साइटज़ मुख़्तलिफ़ पेकेजिज़ बेचती हैं, हर पेकेज की क़ीमत और अर्निंग (Earning) मुख़्तलिफ़ है, पेकेज ख़रीदने के बाद वोह सोश्यल मीडिया एप पे कोई काम करने को देती है जैसे यूट्यूब वीडियो लाइक करना, फ़ेसबुक पोस्ट लाइक करना, इनस्टाग्राम पर पोस्ट लाइक करना वग़ैरा, और वोह काम के बदले रोज़ाना के तौ़र पर अर्निंग देती हैं, और दूसरों को जोइन करवाने पर भी बोनस देती है, क्या इस त़रह़ की ऑन लाइन अर्निंग (कमाई) करना जाइज़ है ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मज़कूरा अर्निंग करना, नाजाइज़ है क्यूंकि येह बहुत सी शरई ख़राबियों और नाजाइज़ उमूर पर मुश्तमिल है। जिन की तफ़्सील मुन्दरिजए ज़ैल है :

रिश्वत :

पेकेज ख़रीदने के लिए दी जाने वाली रक़म रिश्वत है क्यूंकि उस रक़म के बदले कोई चीज़ नहीं मिलती, बल्कि सिर्फ़ इस ऑन लाइन कम्पनी में काम करने का ह़क़ मिलता है। ब अल्फ़ाज़े दीगर वोह रक़म देने वाला सिर्फ़ कम्पनी में नौकरी ह़ासिल करने के लिए वोह रक़म दे रहा होता है, और अपना काम बनाने के लिए साह़िबे इख़्तियार को कुछ रक़म देना, शरई तौ़र पर रिश्वत है। और रिश्वत देना नाजाइज़ो ह़राम है।

इजारा ए फ़ासिदा (नाजाइज़ इजारा) :

वीडियोज़ और पोस्टों को लाइक करना, शरई तौ़र पर ऐसा काम नहीं कि जिस पर इजारा (यानी पैसे ले कर काम करना) दुरुस्त हो बल्कि येह नाजाइज़ इजारा है क्यूंकि इजारा सिर्फ़ ऐसी मक़्सूद मन्फ़ेअ़त और काम पर दुरुस्त होता है कि जिस को पैसों के बदले ह़ासिल करने पर लोगों का तआ़म्मुल (रवाज) हो जबकि वीडियोज़ और पोस्टों को लाइक करने के इजारे पर लोगों का तआ़म्मुल नहीं है क्यूंकि शरई तौ़र पर तआ़म्मुल तब साबित होता है, जब कसीर बलाद के कसीर लोग उस में मशग़ूल हों।

गुनाह के काम की तरग़ीब देना :

जब येह काम, नाजाइज़ है, तो इस में दूसरे को जोइन करवाना और इस पर बोनस हासिल करना भी नाजाइज़ है क्यूंकि किसी को नाजाइज़ काम की तरग़ीब दिलाना और उस की त़रफ़ उस की राहनुमाई करना, नाजाइज़ व गुनाह है, और गुनाह के काम पर बोनस के नाम पर उजरत लेना भी नाजाइज़ है क्यूंकि गुनाह के काम पर इजारा जाइज़ नहीं। बल्कि अगर उस कम्पनी में काम करना जाइज़ भी होता, तब भी किसी को सिर्फ़ जोइन करवाने पर येह उजरत लेना जाइज़ ना होता क्यूंकि उजरत मेह़नत वाले काम के बदले जाइज़ होती है, ना कि सिर्फ़ किसी को मशवरा और तरग़ीब देने के बदले।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 रोज़े के कफ़्फ़ारे का खाना मद्रसे में देना ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि रोज़े के कफ़्फ़ारे में अगर खाना खिलाया जाए, तो क्या वोह खाना 60 शरई फ़क़ीरों को खिलाना लाज़मी है या किसी सुन्नी मद्रसे में भी दे सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रोज़े के कफ़्फ़ारे में जब खाना खिलाया जाए तो 60 मिस्कीनों (यानी शरई फ़क़ीरों) को दो वक़्त का खाना पेट भर कर खिलाना लाज़िम है। अब चाहे वोह खाना मद्रसे के इलावा 60 शरई फ़क़ीरों को खिलाया जाए या मद्रसे में 60 शरई फ़क़ीरों को खिलाया जाए, बहर दो सूरत कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

अलबत्ता यहां एक बात वाज़ेह़ रहे कि ज़कात व फ़ित्रे के बर अ़क्स रोज़े के कफ़्फ़ारे के खाने में तम्लीके फ़क़ीर ज़रूरी नहीं है, लेहाज़ा इस के लिए ह़ीले की ह़ाजत भी नहीं होगी, बल्कि अगर किसी मद्रसे में दो वक़्त खाना दिया और वहां 60 शरई फ़ुक़रा उस खाने से सेर हो गए, तो कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 बत़ौरे क़र्ज़ दी गई रक़म ज़कात की निय्यत से मुआ़फ़ करना ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने अ़म्र को बत़ौरे क़र्ज़ 2 लाख दिए हुवे हैं लेकिन वोह उसे अदा करने से क़ासिर है, और अ़म्र शरई फ़क़ीर भी है, सैयद या हाशमी भी नहीं तो ज़ैद अगर उसे अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे तो ज़ैद की ज़कात अदा हो जाएगी या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ज़ैद ने अ़म्र को अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया तो क़र्ज़ की मुआ़फ़ी तो दुरुस्त हो जाएगी मगर इस से ज़ैद के दीगर अमवाल की ज़कात अदा नहीं होगी। क्यूंकि दैन की मुआ़फ़ी, एक एतेबार से इस्क़ात़ (अपना ह़क़ साक़ित़ करना) है और एक एतेबार से तम्लीक है। जबकि ज़कात की अदाएगी में कामिल व मुत़लक़ त़ौर पर तम्लीके फ़क़ीर (यानी फ़क़ीर को मालिक बनाना) शर्त़ है।

अलबत्ता ज़ैद अगर चाहता है कि ज़कात भी अदा हो जाए और अ़म्र का क़र्ज़ भी मुआ़फ़ हो जाए और वोह मुस्तह़िक़े ज़कात भी है तो दुरुस्त त़रीक़ा येह है कि अपने पास से ज़कात अदा करने की निय्यत से उसे रक़म दे दे फिर अपने क़र्ज़ में उस से वापस ले ले।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 नाबालिग़ बच्चों को रमज़ान के रोज़े रखवाना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि नाबालिग़ बच्चों को रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखवाने के मुतअ़ल्लिक़ क्या ह़ुक्मे शरअ़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नाबालिग़ पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं, अलबत्ता अगर नाबालिग़ बच्चा या बच्ची सात साल के हो जाएं और रोज़ा रखने की त़ाक़त रखते हों, रोज़ा उन्हें ज़रर ना देता हो, तो उन के वली पर लाज़िम है कि उन्हें रोज़ा रखवाए। और जब दस साल के हो जाएं और रोज़ा रखने की त़ाक़त रखते हों, तो वली पर वाजिब है कि रोज़ा रखने के मुआ़मले में उन पर सख़्ती करे और ना रखने की सूरत में उन्हें सज़ा दे।

जैसे सात साल के बच्चे को नमाज़ का ह़ुक्म देना और दस साल का हो जाने पर नमाज़ के मुआ़मले में सख़्ती करना, ना पढ़ने की सूरत में सज़ा देना वली पर वाजिब है, इसी त़रह़ रोज़े का ह़ुक्म है कि सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ रोज़े का ह़ुक्म नमाज़ की त़रह़ ही है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रोज़े में मेडीकल के मसाइल

1. इन्हेलर लेने से रोज़ा टूट जाएगा।
2. आंख में दवा डालने से रोज़ा टूट जाएगा।
3. हम्ल वाली औरत का अन्दरूनी चेक अप होता है इस से भी रोज़ा टूट जाएगा।
4. बवासीर वाले को पीछे के मक़ाम से बसा औकात दवा लेनी पड़ती है इस से भी रोज़ा टूट जाएगा।
5. रोज़े की हालत में भाप (Steam) लेने से रोज़ा टूट जाएगा।
6. अगर रोज़े की हालत में डाईलाइसिज़ हुवे तो रोज़ा नहीं टूटेगा, अलबत्ता डाईलाइसिज़ के दिन ताक़त ना होने और डॉक्टर के केहने पर रोज़ा छोड़ता है तो इस का इख़्तियार है।
7. वाज़ेह रहे कि हल्की फुल्की तक्लीफ़ या मरज़ में रोज़ा छोड़ने की इजाज़त नहीं, हामिला या दूध पिलाने वाली औरत रोज़ा रखने पर क़ादिर है तो रोज़ा रखेगी, यूंही सर दर्द या कोई ऐसा मरज़ जिस में रोज़ा रखने की इस्तेताअत हो तो रोज़ा रखेंगे, सिर्फ़ शदीद मरज़ वाले माहिर डॉक्टर ही के केहने या ज़ाती तजरिबे की बुन्याद पर रोज़ा छोड़ सकते हैं।
8. ख़ून निकलवाने से रोज़ा नहीं टूटता।
9. ड्रिप लगाने से रोज़ा नहीं टूटता।
10. ज़ख़्म हो जाने या पट्टी बेन्डेज चढ़ाने से रोज़ा नहीं टूटता।
11. कान में दवा डालने से रोज़ा नहीं टूटता अलबत्ता बाज़ उलमा कान में दवा डालने पर रोज़ा टूटने के क़ाइल हैं। (कान के पर्दे में अगर सूराख़ हो तो दवा डालने से रोज़ा टूट जाएगा।)
12. इन्जेक्शन लगाने से रोज़ा नहीं टूटता।
13. इन्सोलीन का इन्जेक्शन आम तौर से गोश्त में लगता है इस से भी रोज़ा नहीं टूटेगा।

किसी का मज़ाक़ मत उड़ाएं

दुन्या में बहुत से लोग हैं जो अपने अपने एतेबार से सोसायटी को पुर अम्न बनाने के लिए बड़ी डीबेट्स करते हैं, इस टॉपिक पर बहुत स्पीचिज़ होती हैं और आर्टीकल्ज़ भी लिखे जाते हैं । मगर दीने इस्लाम ने मुआ़शरे को पीसफ़ुल बनाने के जो अह़कामात और क़वानीन अ़ता फ़रमाए हैं वोह अपनी मिसाल आप हैं । लेहाज़ा अगर आप आपस की नफ़रतों को मिटाना और लड़ाई झगड़ों से बचना चाहते हैं, अपने घर और बाहर के माह़ौल को पुर अम्न देखना चाहते हैं, मुआ़शरे को प्यार भरा बनाना चाहते हैं तो इस के लिए दीने इस्लाम ने जो तरबियत के मदनी फूल अ़ता फ़रमाए हैं उन पर अच्छे त़रीक़े से अ़मल करें । हमारे मुआ़शरे का एक कमज़ोर पेहलू "किसी का मज़ाक़ उड़ाना" भी है ।

किसी पर हंसने और उस का मज़ाक़ उड़ाने की इस बुरी ह़रकत से मन्अ़ करते हुवे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّ ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ईमान वालो ! मर्द दूसरे मर्दों पर ना हंसें, हो सकता है कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और ना औ़रतें दूसरी औ़रतों पर हंसें, हो सकता है कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों ।[1]

यानी मालदार ग़रीबों का, बुलन्द नसब वाले दूसरे नसब वालों का, तन्दुरुस्त अपाहिज का और आंख वाले उस का मज़ाक़ ना उड़ाएं जिस की आंख में ऐ़ब हो, हो सकता है कि वोह उन हंसने वालों से सिद्क़ और इख़्लास में बेहतर हों ।[2] किसी के साथ ऐसा मज़ाक़ करना कि जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचे, इस से अल्लाह पाक के आख़री नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी रोका है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : لَا تُمَارِ اَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ यानी अपने भाई से ना तो झगड़ा करो और ना ही उस का मज़ाक़ उड़ाओ ।[3] ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी का मज़ाक़ उड़ाना जिस से सामने वाले को तक्लीफ़ पहुंचे बहर ह़ाल ह़राम है वोह ही यहां मुराद है क्यूंकि मुसलमान को ईज़ा देना ह़राम है ।[4]

शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह याद रखिए ! किताबों में जिस त़रह़ नाह़क़ क़त्ल बदकारी और शराब पीने को शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह कहा गया है[5] इसी त़रह़ लोगों का मज़ाक़ उड़ाने को भी कहा गया है, चुनान्चे, ह़ज़रते सैयदना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक के नज़्दीक शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह लोगों का मज़ाक़ उड़ाना है ।[6]

मज़ाक़ उड़ाने का शरई ह़ुक्म मज़ाक़ उड़ाने का शरई ह़ुक्म बयान करते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इहानत और तेह़क़ीर के लिए ज़बान या इशारात या किसी और त़रीक़े से मुसलमान का मज़ाक़ उड़ाना ह़राम व गुनाह है क्यूंकि इस से एक मुसलमान की तेह़क़ीर और उस की ईज़ा रसानी होती है और किसी मुसलमान की तेह़क़ीर करना और दुख देना सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।[7]" अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : शरई हुदूद में रेहते हुवे मज़ाक़ करना जाइज़ है, लेकिन इस में किसी की दिल आज़ारी, नुक़्सान और झूट नहीं होना चाहिए । बाज़ लोग मज़ाक़ में किसी का दिल दुखा रहे होते हैं और सामने वाला झेंप मिटाने के लिए हंस रहा होता है । याद रखिए ! प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी ख़ुश त़बई करना साबित है, लेकिन आप का ख़ुश त़बई करना दिल आज़ारी, नुक़्सान और झूट से पाक था । मज़ाक़ में इन चीज़ों से बचना बहुत मुश्किल है, लेहाज़ा हमारे लिए इस से बचना ही बेहतर है । नीज़ मज़हबी शख़्स को ज़ियादा मज़ाक़ करने से बचना चाहिए ख़ुसूसन अ़वाम के सामने, क्यूंकि इस वज्ह से लोग उस से दूर हो जाएंगे और उस की इ़ल्मी ख़ूबियों से फ़ाइदा नहीं उठा सकेंगे ।

किसी शख़्स में पाई जाने वाली आ़रज़ी ख़राबी मसलन उस के बालों या लिबास वग़ैरा के अन्दाज़ का बे तुका होना या फिर उस की आ़रज़ी कमज़ोरी मसलन मोह़ताजी और ग़रीबी के आसार को देख कर उस का मज़ाक़ उड़ाना । इसी त़रह़ किसी शख़्स में पाई जाने वाली मुस्तक़िल और फ़ित्री ख़राबी या कमज़ोरी कि जिस के पीछे ख़ुद उस बन्दे का कोई अ़मल दख़्ल ना हो मसलन वोह बेहरा या कम सुनता हो, भेंगा, काना, तोतला, लंगड़ा, छोटे क़द का या फिर काले रंग का हो, इन वुजूहात में से किसी वज्ह से उस का मज़ाक़ उड़ाना । येह ऐसी बुरी आ़दत है जो लोगों के दिलों को तोड़ती और उन्हें दुखाती है, मह़ब्बत की जगह नफ़रत के बीज बो कर लोगों को हमारे ख़िलाफ़ कर देती, अपनों को पराया बना देती और साथ ही दिली इ़ज़्ज़त और एह़तेराम वाली सोच को भी मार देती है ।

जिस का हम मज़ाक़ उड़ाते हैं वोह हम से कम मर्तबे का होता है या बराबर का या फिर ज़ियादा मर्तबे का । अगर वोह हम से कम मर्तबे का या हमारे मा तह़त है कि मज़ाक़ उड़ाने पर ना तो हमारे सामने वोह कुछ बोल पा रहा और ना ही हमारे ख़िलाफ़ कुछ कर पा रहा है और मजबूरन ब ज़ाहिर हमारी इ़ज़्ज़त और हमारा एह़तेराम भी कर रहा है, जब ऐसे किसी शख़्स के सब्र का पैमाना लबरेज़ होता है तो वोह क्या कुछ कर गुज़रता है मुलाह़ज़ा कीजिए : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इरशाद फ़रमाया : एक जगह का वाक़ेआ़ मुझे वहां के एक रेहने वाले ने सुनाया था कि अ़लाक़े का एक बद मुआ़श लोगों के सामने एक लड़के का मज़ाक़ उड़ाता रेहता था, वोह बेचारा डर की वज्ह से उस के सामने कुछ बोल नहीं सकता था, और अन्दर ही अन्दर घुलता रेहता था, एक बार उसी बद मुआ़श ने जब उस का नाम बिगाड़ा या मज़ाक़ उड़ाया तो उस लड़के का दिमाग़ घूम गया और उस ने इस बात को बहुत ज़ियादा दिल पे ले लिया येह बद मुआ़श कब तक मुझे सताता रहेगा ? आख़िरे कार उस लड़के ने कहीं से पिस्तोल लिया और मौक़अ़ पा कर उस बद मुआ़श को क़त्ल कर के कहीं भाग गया ।

उस लड़के का यूं क़त्ल करना ना तो शरअ़न जाइज़ था और ना ही क़ानूनन दुरुस्त था अलबत्ता येह इक़्दाम मज़ाक़ उड़ाने से शुरूअ़ हुवा ।

नीज़ अपने से ज़ियादा मर्तबे वाले का मज़ाक़ हम आ़म तौ़र पर उस की पीठ पीछे ही उड़ाते हैं जो कि आ़म तौ़र पर ग़ीबत शुमार होता है, बाद में अगर उस शख़्स को हमारी ऐसी कोई बात पता चलती है तो उस का दिल दुख जाने की सूरत में ग़ीबत के इ़लावा उस की दिल आज़ारी का गुनाह भी हमारे नामा ए आमाल में शामिल हो जाता है और साथ ही हमारी ऐसी ह़रकत दुन्यावी एतेबार से भी हमारे लिए नुक़्सान देह साबित हो सकती है ।

मेरी तमाम आ़शिक़ाने रसूल से **फ़रियाद** है ! अपनी दुन्या ओ आख़ेरत की बेहतरी के लिए ज़बान, इशारे या किसी और त़रीक़े से किसी का मज़ाक़ मत उड़ाइए, अल्लाह पाक हमें दीने इस्लाम के अह़कामात पर अ़मल की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ26، الحجرات:11 (2) صراط الجنان، 9/425 (3) ترمذی، 3/400، حدیث: 2002 (4) مراٰۃ المناجیح، 6/501 (5) الزواجر، 2/188، فیض القدیر، 6/524، تحت الحدیث:9803 (6) حلیۃ الاولیاء، 4/54، رقم:4721 (7) جہنم کے خطرات، ص173

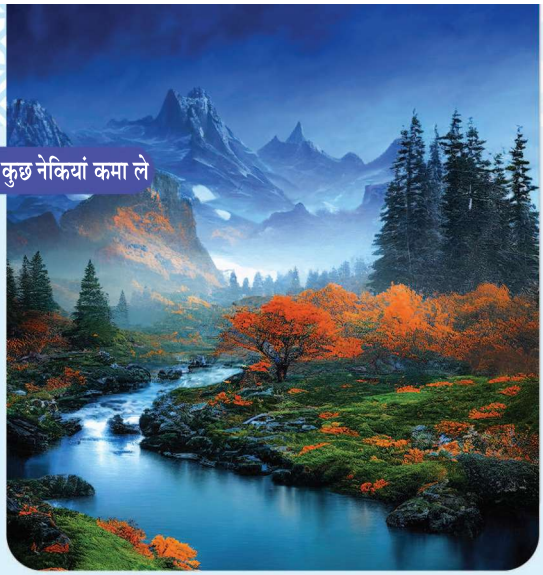

(चौथी और आख़री क़िस्त़)

जन्नत वाजिब करवाने वाली नेकियां

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जन्नत वाजिब करवाने वाली कुछ नेकियां गुज़श्ता क़िस्तों में बयान हो चुकीं, मज़ीद चन्द नेकियों के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए।

1 जो शख़्स एक दिन में बीस मुसलमानों को सलाम करे चाहे इकठ्ठे बीस ही को सलाम करे या फिर एक एक कर के बीस को, फिर उस दिन उस का इन्तेक़ाल हो जाए तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। और रात में सलाम करे और रात ही में उस का इन्तेक़ाल हो जाए तो भी इसी की मिस्ल (बिशारत) है।[1]

2 जो मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदे ह़राम तक ह़ज या उ़मरह का एह़राम बान्धे (इस त़रह़ कि पेहले बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत करे, फिर वहां से ह़ज या उ़मरे का एह़राम बान्ध कर मक्का ए मोअ़ज़्ज़मा ह़ाज़िर हो कर ह़ज या उ़मरह करे) तो उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं या उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।[2] येह शक रावी का है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मग़फ़ेरत का वादा फ़रमाया या जन्नत की अ़त़ा का। इस से मालूम हुवा कि जिस क़दर दूर से एह़राम बन्धेगा उसी क़दर ज़ियादा सवाब मिलेगा।[3]

3 रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने चन्द सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : मैं तुम पर "सूरतुज़्ज़ुमर" की आख़री आयात पढ़ता हूं, तुम में से जो रोएगा उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाएगी, फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सामने "وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ" से ले कर सूरत के आख़िर तक पढ़ा, सह़ाबा ए किराम का केहना है कि हम में से कुछ तो रोए मगर कुछ को रोना ना आया, तो जो लोग रो ना सके थे उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि हम ने रोने की कोशिश तो की मगर रो ना सके, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं उन आयात को तुम पर दोबारा पढ़ता हूं, तो जिसे रोना ना आए वोह रोने जैसी सूरत बना ले।[4]

4 जिस शख़्स ने रात या दिन में सूरए ह़श्र की आख़री (तीन) आयतें पढ़ीं और उसी दिन या रात में उस का इन्तेक़ाल हो गया तो उस ने जन्नत को वाजिब कर लिया।[5]

क़ारेईने किराम ! रिज़ा ए इलाही के लिए अल्लाह पाक से जन्नत मिलने की उम्मीद रखते हुवे जन्नत वाजिब करने वाली नेकियों पर अ़मल कीजिए मगर साथ ही इस बात को भी लाज़मी ज़ेहन में रखिए कि ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : नेक आमाल जन्नत ह़ासिल होने के अस्बाब में इ़ल्लते ताम्मा नहीं बड़े बड़े नेक लोग फिसल जाते हैं।[6]

अल्लाह पाक हम सब का ख़ातेमा ईमान पर फ़रमाए और बिला ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) معجم کبیر، 13/321، حدیث: 14117 (2) ابوداؤد، 2/201، حدیث: 1741
(3) مراٰۃ المناجیح، 4/99 (4) معجم کبیر، 2/348، حدیث: 2459 (5) شعب الایمان، 2/492، حدیث: 2501 (6) مراٰۃ المناجیح، 3/385۔

दर्से किताबे ज़िन्दगी

1. जल्दी जान छुड़ा लीजिए
2. Saving मगर किसी चीज़ की ?
3. बिछड़ने को भी सलीक़ा चाहिए
4. फ़ैसला आप का और ग़लती किसी की ?

1 ग़लती मान कर जल्दी जान छुड़ा लीजिए

ग़लती किस से नहीं होती ? मश्हूर है : "इन्सान ख़ता और निस्यान का मुरक्कब है" जब ग़लती हो जाए तो मुआ़फ़ी मांग लेनी चाहिए, इस से हमारी जान भी जल्दी छूट जाएगी और हम मज़ीद शर्मिन्दगी से भी बच जाएंगे, اِن شآءَ اللہ लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं कि ग़लती हो जाए तो अपनी ग़लती जल्दी मानते नहीं हैं बल्कि ख़ुद को दुरुस्त क़रार देने के लिए दलाइल देना शुरूअ़ कर देते हैं कि जनाब हमारी तो ग़लती ही नहीं थी । बिल आख़िर उन्हें अपनी ग़लती तस्लीम कर के उस पर माज़ेरत करनी पड़ती है । अगर ऐसे लोग उसी वक़्त Sorry कर लें जब ग़लती की निशान देही हो तो बात चन्द सेकन्ड्ज़ में ख़त्म हो सकती है । اِن شآءَ اللہ

2 Saving मगर किस चीज़ की ?

Saving का लफ़्ज़ आप ने बहुत मरतबा सुना होगा और लोग एक दूसरे से बचत के त़रीक़े पूछते हैं फिर उन त़रीक़ों को इस्तेमाल भी करते हैं और बाज़ तो ऐसे ऐसे त़रीक़े इस्तेमाल करते हैं कि सुन कर इन्सान हैरान रेह जाता है । मगर बचत का तसव्वुर सिर्फ़ माल, रक़म और रुपिये पैसे के साथ समझा जाता है कि बचत का लफ़्ज़ जब भी आएगा लोगों के ज़ेहन में रक़म और रुपिये पैसे की बचत का ख़याल आएगा कि बचत करने के बाद जो रक़म मिलेगी वोह हमारी ज़रूरिय्यात में इस्तेमाल होगी । माल की बचत अगर शरई हुदूद में रहे तो इस में ह़रज नहीं है लेकिन एक बचत और भी है जिस त़रफ़ हमें तवज्जोह करने की ज़रूरत है, वोह है वक़्त की बचत ! येह ह़क़ीक़त है कि वक़्त को एक त़रफ़ और रुपिये पैसे को दूसरी त़रफ़ रख लीजिए तो समझदार शख़्स यक़ीनन येही जवाब देगा कि वक़्त ज़ियादा क़ीमती है । एक त़रफ़ हमारा रवय्या येह है कि अगर कोई शख़्स हमारा माल छीन कर ले जाए, हमारी जेब कट जाए या डकेती हो जाए तो हमें बड़ा सदमा और अफ़्सोस होता है और कई दिन तक हम सोचते रेहते हैं कि येह हमारे साथ क्या हुवा ? और दूसरी त़रफ़ अगर हमारा वक़्त कोई छीन कर ले जाए तो हमें कोई अफ़्सोस नहीं होता क्यूंकि हमें शुऊ़र ही नहीं कि लूटने वाला हमारी कौन सी दौलत छीन कर ले गया !

अब रहा येह सवाल कि कोई हमारा वक़्त कैसे लूट कर ले गया ? तो ग़ौर कीजिए कि एक फ़ालतू शख़्स फ़ुज़ूल में एक या दो या तीन घन्टे ज़ाएअ़ कर के चला गया, येह वक़्त लूटना ही तो है । हमारी दिमाग़ी ह़ालत देखिए कि वक़्त लूटने वाला दोबारा मिलेगा तो हम दोस्ती का दम भी भरेंगे और एक मरतबा फिर से उस से मिलने और लुटने के लिए तैयार रहेंगे और दूसरी जानिब जो रक़म छीन कर ले जाए वोह हमारा दुश्मन नम्बर 1 ! अगर वोह हमें दोबारा मिल जाए तो हम जल्दी से उस का पीछा करेंगे बल्कि देखते ही शोर मचा देंगे कि येही शख़्स है जिस ने मुझे फ़ुलां जगह लूटा था, येही शख़्स है जो मेरा माल ले कर भागा था, पकड़ो इस को ! इस से मेरा माल

वुसूल करो। और जो वक़्त छीन कर ले गया उस को हम अपना दोस्त क़रार दे रहे हैं ह़ालांकि वक़्त ऐसी अनमोल दौलत है जिस को ख़र्च कर के हम माल समेत दुन्या की हज़ारों नेमतें ह़ासिल कर सकते हैं। इस लिए हमें माल की सेविंग से ज़ियादा वक़्त की सेविंग करनी चाहिए।

3 बिछड़ने को भी सलीक़ा चाहिए

हम अपनी ज़िन्दगी में किसी ऑफ़िस या दीनी जामेआ़ या स्कूल कॉलेज या किसी फ़ेक्ट्री या दुकान वग़ैरा में मुलाज़िमत करते हैं और फिर एक वक़्त ऐसा आता है कि हमें वोह जॉब मजबूरन छोड़नी पड़ती है या हमें नौकरी से निकाल दिया जाता है, इस त़रह़ बाज़ औक़ात किसी से हमारे घरेलू तअ़ल्लुक़ात बन जाते हैं फिर एक वक़्त आता है कि वोह तअ़ल्लुक़ात ख़त्म हो जाते हैं जिस से हमें ख़ुशी नहीं होती। हमें उस से जुदा होना पड़ता है लेकिन उस जुदाई को हम भयानक त़ौर पर यादगार बनाते हैं, वोह यूं कि अल वदाई मुलाक़ात में इस क़िस्म के नाराज़ी वाले जुम्ले केहते हैं : ❁ मैं पत्ते खा लूंगा कभी तुम्हारे पास नौकरी के लिए नहीं आऊंगा ❁ मैं तुम्हारे ऑफ़िस पर थूकता भी नहीं हूं ❁ तुम ने मेरी क़द्र नहीं पहेचानी मैं कभी तुम्हें अपनी शक्ल नहीं दिखाऊंगा ❁ तुम इस लाइक़ ही नहीं हो कि तुम्हारे पास कोई टेलेन्ट वाला शख़्स काम करे ❁ मुझे बीसियों नौकरियां मिल जाएंगी लेकिन तुम्हें मेरे जैसा माहिर आदमी ढूंडने से नहीं मिलेगा। वग़ैरा

कोई भी समझदार शख़्स इस अन्दाज़ को अच्छा नहीं कहेगा, लेकिन ज़िन्दगी में Ups and Downs आते रेहते हैं, कभी ऐसा भी होता है कि मुलाज़ेमत की तलाश करने वाला अन्जाने में उसी के पास जा पहुंचता है जिस को बड़ी ग़ुसीली बातें कर के रुख़्सत हुवा था। उस वक़्त कितनी नदामत और शर्मिन्दगी होती है येह तो वोही बता सकता है जिस पर येह गुज़री हो, ख़ास कर उस वक़्त जब उस के जुम्लों के तीरों का निशाना बनने वाला उसे माज़ी के तन्ज़िया अन्दाज़ में याद दिला दे। इस सिचवेशन से बचने के लिए येह याद रखिए कि आज बिछड़ने वाले कल मिल भी सकते हैं, किसी ने सोश्यल मीडिया पर बड़ी प्यारी ह़क़ीक़त बयान की, कि मछली कांटे में उसी वक़्त फंसती है जब वोह अपना मुंह खोलती है, इन्सान को भी चाहिए कि सोच समझ कर अपना मुंह खोले ताकि सलामत रहे।

4 फ़ैसला आप का और ग़लती किसी और की ?

काम कोई भी हो उस के लिए किसी से मश्वरा कर लेना बहुत मुफ़ीद है। जिस से मश्वरा किया जाए वोह अमीन होता है कि अपने मालूमात व तजरेबात की रौशनी में बेहतरीन राए दे। फिर अगर काम बिगड़ जाए या कोई नुक़्सान हो जाए तो मश्वरा क़बूल कर के काम करने या ना करने का फ़ैसला करने वाले को चाहिए कि इसे नसीब का लिखा समझ कर सब्र करे लेकिन कई लोगों की आ़दत होती है कि अगर फ़ैसला फ़ाइदेमन्द साबित हुवा तो कामयाबी का सेहरा अपने सर बान्धते हैं और अगर नुक़्सान हो जाए तो ग़लती का हार मश्वरा देने वाले के गले में डाल देते हैं और येह सुना सुना कर उस के कान पका देते हैं कि तुम्हारे केहने पर चलने की वज्ह से मुझे नुक़्सान हो गया, गोया मीठा मेरा, कड़वा तेरा। इस रवैये का उसे डबल नुक़्सान होता है वोह यूं कि एक तो उस का काम बिगड़ गया और दूसरा उसे आइन्दा कोई मश्वरा देने को तैयार नहीं होगा कि इस का नुक़्सान हो गया तो येह इस का ज़िम्मेदार मुझे ठेहराएगा।

लेहाज़ा ! इस क़िस्म का रवैया रखने वाले को याद रखना चाहिए कि उस ने तो मश्वरा दिया, काम करने या ना करने फिर इस अन्दाज़ में करने का फ़ैसला आप का है, इस के बाद नताइज अच्छे हों तो वोह भी आप के और अगर बुरे नताइज हों तो वोह भी आप ही को फ़ेस करने होंगे। आप अपने रवैये को जल्दी दुरुस्त कर लीजिए।

अल्लाह पाक हमें समझदारी नसीब करे।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(क़िस्त : 3)

इस्लाम और तालीम

5 तालीम सब के लिए

इब्तेदा में निज़ामे तालीम किसी मख़्सूस जगह और मेहदूद पैमाने पर होता है, तालीमी व तरबियती कारकर्दगी और बेहतरीन माहोल की वज्ह से इस में निखार पैदा होता है इस को मज़ीद फैलाने और मुख़्तलिफ़ लोगों को इस सिस्टम का हिस्सा बनाने के लिए मुशावरती कमेटी और इन्तेज़ामी मुआमलात तरतीब पाते हैं जिस के लिए बेहतरीन निसाब, माहिर असातेज़ा ए किराम और इस निज़ाम को अच्छे त़रीक़े से चलाने और संभालने के लिए मुख़्तलिफ़ लोगों की ज़रूरत पड़ती है जिन का इन्तेख़ाब इन की क़ाबिलिय्यत और सलाहिय्यत की बुन्याद पर किया जाता है, निज़ाम की मज़बूती के लिए किसी शख़्स को ज़ियादा ज़िम्मेदारियां भी दी जा सकती हैं, तालीमी और तरबियती कारकर्दगी को बेहतर बनाने के लिए त़लबा ए किराम को मुख़्तलिफ़ क्लासों में तक़्सीम किया जा सकता है और हर क़िस्म के रेकॉर्ड तैयार किए जाते हैं और दस्तावेज़ात मेहफ़ूज़ की जाती हैं।

शख़्सी तालीम : ह़ज़रते शिहाब क़रशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूरा क़ुरआने मजीद पढ़ाया था, बाद में हिम्स के आम लोग उन से क़ुरआने मजीद पढ़ते थे।[1] ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सूरए बक़रह की तफ़्सीर बारह साल में पढ़ी।[2]

इज्तेमाई तालीम : एक बार ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप खड़े हो कर अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को क़ुरआने मजीद पढ़ा रहे हैं और भूक की वज्ह से पेट पर पथ्थर बान्धा हुवा था ताकि कमर सीधी रहे।[3]

तालीम सब के लिए : इन्सान को हर वक़्त इ़ल्म का मुतलाशी रेहना चाहिए और सारी ज़िन्दगी इ़ल्म के ह़ुसूल के लिए कोशां रहे येह किसी वक़्त, जगह और उ़म्र के साथ ख़ास नहीं बल्कि बच्चे बूढ़े मर्द व ख़वातीन और माज़ूर सब ह़ासिल कर सकते हैं अलबत्ता बचपन में इ़ल्म, ज़ेहन में नक़्श हो जाता है और बड़ी उ़म्र में ह़ासिल किया हुवा इ़ल्म बसा औक़ात भूल जाता है लेकिन इ़ल्म सब को ह़ासिल करना चाहिए।

बच्चों की तालीम : किसी वालिद ने अपने बच्चे को अच्छे आदाब सिखाने से बेहतरीन कोई तोह़फ़ा नहीं दिया।[4] नौ उ़म्री में तालीम ह़ासिल करना ऐसे है जैसे पथ्थर पर नक़्श और बुढ़ापे में तालीम ह़ासिल करना जैसे पानी पर नक़्श हो।[5]

ख़वातीन की तालीम : प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हफ़्ते में ख़वातीन के लिए दिन और जगह मुक़र्रर फ़रमाई और इन को तालीम देते थे।[6] आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरए बक़रह की आख़री आयात ख़वातीन को सिखाने का हुक्म दिया।[7]

तालीमे बालिग़ान : बूढ़ा आदमी जवान से इ़ल्म ह़ासिल करने में ना शर्माए।[8]

6 तालीम मुफ़्त बल्कि वज़ाइफ़ भी

इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए मुसलसल मेहनत, कोशिश और अख़राजात की ज़रूरत होती है, बहुत कम अफ़राद अपने इ़ल्मी मक़ासिद में कामयाब होते हैं जिस की एक बुन्यादी वज्ह तालीमी अख़राजात ना होने की वज्ह से नादार और ग़रीब त़लबा ए किराम का मेहरूम रेह जाना है, इन के तमाम सुन्हरी ख़्वाब और उमंगें चकना चूर हो जाती हैं लेहाज़ा तालीम मुफ़्त होनी चाहिए या मामूली क़ीमत में हो ताकि हर शख़्स उस से मुस्तफ़ीद हो सके

बल्कि ग़रीब त़लबा ए किराम के लिए तो वज़ाइफ़ का एहतेमाम भी होना चाहिए ताकि दूसरे लोगों की त़रह़ येह भी ख़ुशी से तालीम ह़ासिल कर सकें।

त़लबा के अख़्राजात भी बरदाश्त किए जाएं : ह़ज़रते सैयदना वरदान رضی اللہ تعالٰی عنہ त़ाइफ़ से आए तो हुज़ूरे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने इन को ह़ज़रते अबान बिन सईद رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़वाले किया कि इन के मसारिफ़ का बार उठाएं और इन को क़ुरआने मजीद की तालीम भी दें।[9]

लोगों में इल्म की जुस्तजू पैदा कीजिए : ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने बाज़ गवर्नरों को लिखा कि लोगों को क़ुरआने पाक सीखने पर वज़ाइफ़ दें चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा किया और फिर आप को लिखा कि अब क़ुरआने मजीद सीखने में ऐसे लोगों की रग़बत भी बढ़ गई है जिन्हें पेहले कभी ऐसी जुस्तजू ना थी।[10]

7 सलाह़िय्यत के मुवाफ़िक़ सीखने की तरग़ीब

पौशीदा सलाह़िय्यतें उजागर कीजिए : हर शख़्स अपनी फ़ित़रत के एतेबार से तालीम, फ़न, हुनर या कारोबार वग़ैरा में दिलचस्पी रखता है और इस की त़रफ़ उस का क़ल्बी मैलान भी ज़ियादा होता है, अगर इसी फ़न में उस को आगे बढ़ने का मौक़अ़ दिया जाए तो वोह बहुत कुछ कर सकता है लेकिन अगर किसी दूसरे काम में मसरूफ़ हो जाए तो वोह क़ल्बी त़ौर पर मुत़्मइन नहीं होगा और ना ही इस के ज़ियादा फ़वाइद ह़ासिल होंगे तो उन की फ़ित़रत तलाशी करना ज़रूरी है कि किस को क्या पढ़ाना और क्या सिखाना है ?

तालीम से किस को आरास्ता करें : हुज़ूरे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : ह़क़दारों से इल्म रोक कर उन पर ज़ुल्म ना करो और ना अहलों को ह़िक्मत सिखा कर उन पर ज़ुल्म ना करो।[11] ना अहलों को इल्म देना, ख़िन्ज़ीरों के गले में हीरे, मोती और सोने के हार लटकाने की त़रह़ है।[12]

मुख़्तलिफ़ ज़बानें सीखिए : दुन्या में मुख़्तलिफ़ लबो लेहजे और ज़बानों के लोग आबाद हैं। इस लिए उन को इल्म से आरास्ता करने के लिए उन की ज़बान का सीखना ज़रूरी है चुनान्चे, प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رضی اللہ تعالٰی عنہ को सुरयानी ज़बान सीखने का हुक्म दिया तो उन्हों ने आधे महीने से भी पेहले सीख ली, आप फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم को यहूद की त़रफ़ ख़त़ लिखना होता तो मैं लिखता और जब यहूद कुछ लिखते तो मैं उन के ख़ुत़ूत़ पढ़ता।[13]

8 निज़ामे तालीम की बेहतरी व मज़बूती के इक़्दामात

अहल अफ़राद का तक़र्रुर : ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन सईद رضی اللہ تعالٰی عنہ को हुज़ूर नबी ए करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने हुक्म दिया कि वोह मदीना ए त़ैयबा में लोगों को लिखना सिखाएं कि वोह बेहतरीन कातिब थे।[14] ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के बाज़ अफ़राद को क़ुरआने मजीद पढ़ना और लिखना सिखाया।[15]

बा सलाह़िय्यत अफ़राद को ज़िम्मेदारी देना : ह़ज़रते मसऊ़द बिन वाइल رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ! आप मेरी क़ौम की त़रफ़ किसी आदमी को रवाना करें जो उन में इस्लाम की तब्लीग़ करे तो हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने उन्हें एक फ़रमान लिख कर दिया और उन को हुक्म दिया कि वोह ख़ुद अपने क़बीले में नेकी की दावत का काम करें।[16]

नौ उ़म्र लेकिन बा सलाह़िय्यत उस्ताज़ का तक़र्रुर : ह़ज़रते अ़म्र बिन ह़ज़्म अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ को हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने नजरान के लिए मुक़र्रर फ़रमाया ताकि वोह अहले नजरान को दीन सिखाएं क़ुरआने मजीद की तालीम दें और सदक़ात वुसूल करें उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक सतरह साल थी।[17]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

---

(1)معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 3/19 (2)شعب الایمان،2/331،رقم: 1957 (3) حلیۃ الاولیاء،1/419، رقم: 1208 (4)ترمذی، 3/383، حدیث: 1959 (5)جامع بیان العلم وفضلہ، ص115، حدیث:378(6)بخاری،4/511، حدیث:7310ملخصاً(7) دیکھئے:دارمی،2/542،حدیث:3390(8)جامع بیان العلم و فضلہ، ص121، حدیث:396(9)کتاب المغازی،3/932ملتقطاً(10) کنز العمال، جز2،1/146، حدیث:4175 مختصراً(11) تفسیر قرطبی،1/141 (12) ابنِ ماجہ، 1/146، حدیث: 224 (13) ترمذی،4/328،حدیث: 2724 ملخصاً (14)الاستیعاب،3/52 (15)ابو داؤد،3/362،حدیث: 3416 (16) معرفۃ الصحابۃ،لابی نعیم 4/248،ماخوذاً(17)الاستیعاب،3/257۔

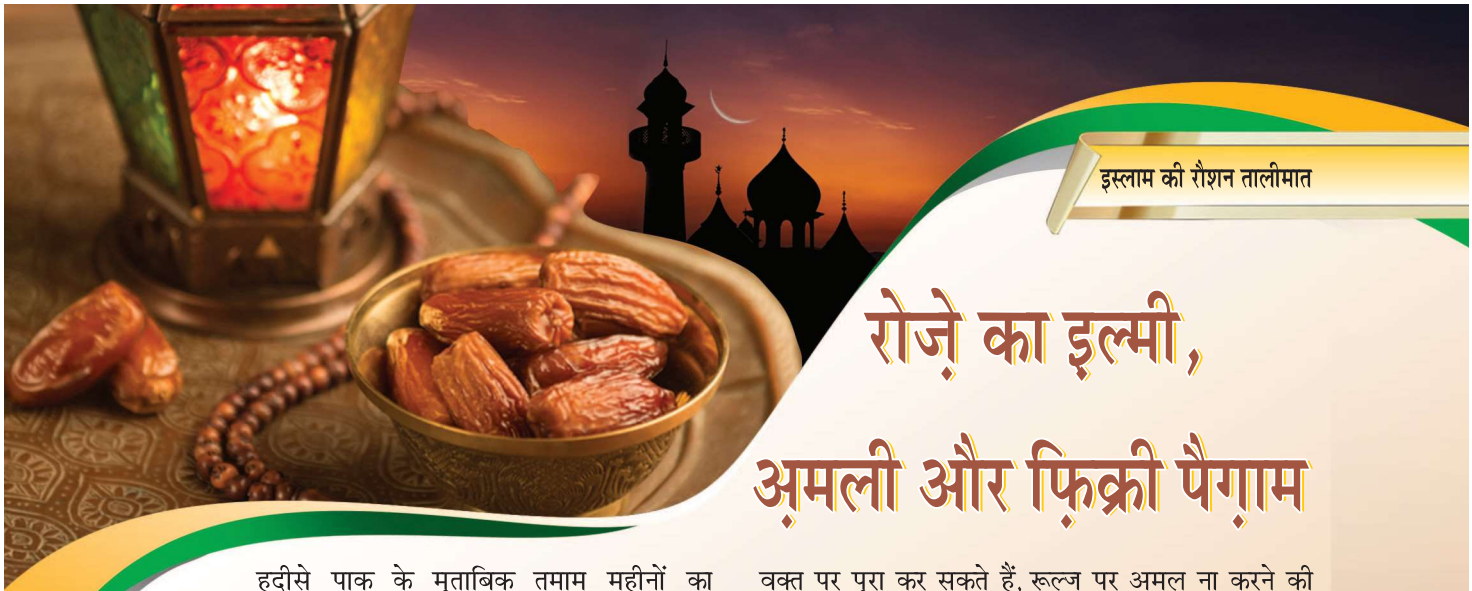

रोज़े का इल्मी, अ़मली और फ़िक्री पैग़ाम

ह़दीसे पाक के मुताबिक़ तमाम महीनों का सरदार रमज़ान है।[1] इसी महीने में चारों आस्मानी किताबें (तौरैत, ज़बूर, इन्जील और क़ुरआने मजीद) नाज़िल हुईं।[2]

अल्लाह करीम ने दीगर इ़बादतों की त़रह़ रोज़े में भी बहुत सारी इ़ल्मी, अ़मली और फ़िक्री जेहतें रखी हैं जिन में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं तो वोह जेहतें एक पैग़ाम की सूरत में हमारे सामने आती हैं जिन्हें समझने के बाद बन्दा मज़ीद रग़बत के साथ रोज़ा रखने की कोशिश करता है। आइए ! माहे रमज़ान में मौजूद इ़ल्मी अ़मली और फ़िक्री पैग़ाम के ख़ज़ाने तलाश करते हैं ताकि हम रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़ों को मज़ीद इख़्लास के साथ रख सकें और शौक़े रोज़ा इतना बढ़े कि फ़र्ज़ के साथ साथ नफ़्ली रोज़े रखने में भी शैत़ान की जाली रुकावटें हमें डगमगा ना सकें।

1 "रोज़ा" रखने के रूल्ज़ हैं, इन में एक टाइम मेनेजमेन्ट भी है कि हम सेह़री के लिए मख़्सूस टाइम पर उठते हैं, मख़्सूस टाइम पर इफ़्त़ारी करनी होती है, यूंही रोज़े के दौरान खाने पीने और इज़्दवाजी तअ़ल्लुक़ क़ाइम करने से रुकना, रोज़े को कामिल बनाने के लिए टाइम पर फ़राइज़ो वाजिबात पर अ़मल करना और गुनाहों से बचना भी इस के रूल्ज़ में शामिल है, पूरा एक महीना इन रूल्ज़ पर अ़मल करना हमें मुक़र्ररा टाइम को तै शुदा उसूलों के मुताबिक़ गुज़ारने का पैग़ाम देता है जिस से येह वाज़ेह़ होता है कि टाइम मेनेजमेन्ट और रूल्ज़ पर अ़मल करना एक कामिल मुसलमान के लिए ज़ियादा आसान है। अगर हम इस पैग़ाम को समझ जाएं तो हम अपने टास्क को वक़्त पर पूरा कर सकते हैं, रूल्ज़ पर अ़मल ना करने की वज्ह से ज़िन्दगी मुश्किलात का शिकार रेहती जबकि रूल्ज़ पर अ़मल कर के ज़िन्दगी आसान बनाई जा सकती है।

2 रोज़ा हमें दिखावे के बग़ैर अल्लाह की रिज़ा को ह़ासिल करने पर फ़ोकस रखना सिखाता है चुनान्चे, शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : नमाज़ मख़्सूस शराइत़ के साथ, मख़्सूस हैअत के साथ, मख़्सूस अरकान की अदाएगी का नाम है जिसे देख कर हर शख़्स जान सकता है कि येह शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है और ह़ज का भी येही ह़ाल है बल्कि इस के लिए सफ़र, घर से बाहर रेहना और मज्मए़ आ़म में इस की अदाएगी से हर शख़्स जान सकता है कि येह ह़ज करने जा रहा है, ह़ज अदा कर रहा है। ज़कात फ़ुक़रा व मसाकीन को दी जाती है इस पर भी दूसरे का मुत्त़लअ़ हो जाना लाज़िम है मगर रोज़ा ऐसी इ़बादत है जिस में कोई ऐसा फ़ेल नहीं जिस की वज्ह से लोग इस पर मुत्त़लअ़ हों। फिर तन्हाई में बहुत से ऐसे मवाक़ेअ़ मिलते हैं कि अगर आदमी खा पी ले तो किसी को ख़बर नहीं होगी इस लिए ब निस्बत और इ़बादतों के रोज़े में रिया (दिखावे) के शाइबे का दख़्ल नहीं। बन्दा रोज़ा रखता है तो ख़ास़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए रखता है, इसी को फ़रमाया : रोज़ा मेरे लिए है, मैं उस की जज़ा दूंगा। बादशाह जब किसी को कुछ देता है तो अपनी शान के मुताबिक़ देता है वोह भी जब किसी पसन्दीदा काम पर ख़ुश हो कर देता है तो फिर इस का अन्दाज़ा कौन कर सकता है![3]

रोज़े का पैग़ाम है कि अपने हर काम को सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा और उस के अह़काम पर फ़ोकस रख कर करते चले जाओ फिर देखना कि तुम्हारे सामने पहाड़ जैसी मुश्किलात तिन्के जैसी बे ह़क़ीक़त चीज़ बन जाएंगी।

3 रोज़े का पूरा टाइम टेबल हमें सब्र करना सिखाता है। हम ग़ौर करें तो हमारे बहुत से ऐसे मामूलात हैं कि जहां हम बे सब्री का मुज़ाहरा करते हैं। अगर रोज़े से ह़ासिल होने वाले सब्र के पैग़ाम को हम अपने ज़ेहन में रखें और क़दम क़दम पर सब्र करना सीख लें तो ज़िन्दगी ही आसान हो जाए।

4 रोज़ा हमें तक़्वा इख़्तियार करने के बेहतरीन मवाक़ेअ़ फ़राहम करता है। शारेहे़ बुख़ारी अ़ल्लामा मेहमूद अह़मद रज़वी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ लिखते हैं : रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा रखने के साथ हर रोज़ेदार पर येह भी ज़रूरी हो जाता है कि वोह सिर्फ़ खाने पीने और मुबाशरत ही से इज्तेनाब ना करे बल्कि क़ौलो फ़ेल, लेन देन और दीगर मुआ़मलात में भी परहेज़गारी इख़्तियार करे जैसा कि لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ से ज़ाहिर है। रोज़े की ह़ालत में आदमी हाथ पाउं को किसी भी बुरे काम के लिए ह़रकत ना दे। गाली गलोच ग़ीबत जैसी ख़ुराफ़ात ज़बान पर ना लाए ना कान में पड़ने दे। इस की आंख भी ग़ैर शरई़ काम की त़रफ़ ना उठे बल्कि इन्सान तक़्वे का अ़मली नमूना बन जाए। अगर रमज़ानुल मुबारक के रोज़े इन क़ुयूदो शराइत़ को मद्दे नज़र रख कर पूरे किए जाएं तो इख़्तेतामे रमज़ान पर तक़्वा ओ परहेज़गारी का पैदा होना लाज़मी अम्र (बात) है।[4]

5 गुनाह का बुन्यादी सबब उ़मूमन लज़्ज़त का ह़ुसूल होता है और रोज़े के ज़रीए़ हम जाइज़ और नाजाइज़ लज़्ज़त छोड़ने की तरबियत पाते हैं, अगर इसे हम दिलो जान से अपना लें तो गुनाहों की बीमारी से जान छूट सकती है।

अगर हम अपने रोज़े से येह फ़ाइदे ह़ासिल करना चाहते हैं तो हमें अह़कामे रोज़ा, फ़वाइदे रोज़ा और नताइजे रोज़ा का इ़ल्म ह़ासिल करना होगा। अल्लाह करीम हमें रोज़े की बरकतों से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) معجم کبیر، 9/205، حدیث:9000 (2) مسند احمد، 6/44، حدیث:16981- مصنف ابن شیبہ، 15/528، حدیث:30817 (3) نزہۃ القاری، 3/284 (4) دینِ مصطفٰی، ص311-

ताजिरों के लिए

रमज़ानुल मुबारक में मुलाज़िमीन के साथ रिआ़यत कीजिए !

हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने एक बार शाबान के आख़री दिन लोगों से ख़िताब करते हुवे पेहले तो रमज़ानुल मुबारक की अ़ज़्मतो बरकत बयान की और फिर फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने इस महीने के रोज़े फ़र्ज़ किए और रात का क़ियाम नफ़्ल क़रार दिया, फिर आप ने माहे रमज़ान में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ अदा करने के बराबर और एक फ़र्ज़ का सवाब 70 फ़राइज़ अदा करने के बराबर क़रार दिया, इसी ख़िताब में आप ने माहे रमज़ान को सब्र करने का और एक दूसरे की ग़मख़्वारी करने का महीना फ़रमाया और आख़िर में आप صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मालिकान को गुलामों के लिए तख़्फ़ीफ़ो सहूलत पैदा करने की तरग़ीब देने के लिए फ़रमाया कि जो अपने गुलामों पर

तख़्फ़ीफ़ करेगा अल्लाह पाक उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ादी अ़ता फ़रमाएगा।[1]

ह़दीसे पाक में फ़रमाई गई मज़्कूरा नसीह़तों की रौशनी में मुलाज़िमीन व मालिकान के लिए चन्द बातें समझना बहुत ज़रूरी हैं :

1 रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हर मुसलमान आ़क़िलो बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं।[2] चुनान्चे, अगर कोई कमज़ोर हो या नौकर व मज़दूर हो तो उसे चाहिए कि वोह अपने अ़मली जोश और ईमानी ह़रारत को ठन्डा ना होने दे और येह बात ज़ेहन में रखे कि सच्चा मोमिन ना काहिल होता है और ना ही सुस्त, बल्कि वोह रमज़ान में रूहा़नी और जिस्मानी तौ़र पर ग़ैरे रमज़ान से ज़ियादा चाक़ व चौबन्द होता है, मोमिन ना तो रोज़ा व नमाज़ वग़ैरा इ़बादात को अपने दुन्यवी मुआ़मलात के लिए रुकावट समझता है और ना ही मआ़शी भाग दौड़ की वज्ह से इ़बादात को नज़र अन्दाज़ करता है, लेहाज़ा वोह काम काज की थकावट के बा वुजूद भी इस वज्ह से रोज़ों का पाबन्द रेहता है कि मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माहे रमज़ान को सब्र करने का महीना फ़रमाया है और इस माहे मुबारक में इ़बादात का सवाब भी बहुत ज़ियादा बताया है, कमज़ोर या मज़दूर होने की वज्ह से अगर्चे रोज़ा मेरे लिए दुश्वार है मगर इस का अज्र भी तो ज़ियादा है।

2 इस ह़दीसे पाक में बिल उ़मूम सभी के लिए और बिल ख़ुसूस मालिकान के लिए येह हिदायत मौजूद है कि माहे रमज़ान ग़म ख़्वारी का भी महीना है और रमज़ानुल मुबारक की मुनासेबत ही से ग़म ख़्वारी की एक बहुत ज़बरदस्त सूरत इसी ह़दीस में मौजूद है कि मालिकान अपने ग़ुलामों पर तख़्फ़ीफ़ करें, फ़ी ज़माना अगर्चे ग़ुलाम नहीं हैं मगर मज़दूर, कारीगर, ड्राईवर, मुख़्तलिफ़ शोबों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले मुलाज़िमीन वग़ैरा मुतअ़द्दद ऐसे लोग आज भी मौजूद हैं जो किसी ना किसी मालिक, अफ़सर और सरबराह के तह़त रेह कर उन की ख़िदमत में मसरूफ़ रेहते हैं, येह मा तह़त लोग सर्दी, गर्मी, ख़ज़ां, बहार, ख़ुशी, ग़मी, सेह़त व बीमारी ह़त्ता कि माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़े की ह़ालत में भी काम काज की मशक़्क़त झेलने में मसरूफ़ रेहते हैं, क्या वाक़ेई कोई येह समझता है कि इन बे चारों को थकावट मेह़सूस नहीं होती और येह आराम नहीं करना चाहते ? हरगिज़ नहीं !! येह बेचारे थकते भी हैं और सहूलत भी चाहते हैं मगर इन की घरेलू और मुआ़शी ज़रूरतें इन्हें दुश्वारियां सेहने पर मजबूर रखती हैं ख़्वाह सेह़तयाब हों या बीमार, आ़म दिनों में बग़ैर रोज़े के हों या रमज़ान में रोज़े से हों। लेहाज़ा मालिकान व सरबराहान व अफ़्सरान को चाहिए कि इस्लामी तालीमात व इन्सानिय्यत के नाते आ़म दिनों में भी उन का एह़सास करें और ख़ास तौ़र पर माहे रमज़ान में तो उन पर ख़ुसूसी नवाज़िशात करें, नर्मी बर्तें, माहे ग़म ख़्वारी में उन के साथ ग़म ख़्वारी करें, ख़ुद भी रोज़े के पाबन्द रहें और उन बेचारों के रोज़े का भी लेह़ाज़ करें, काम में या काम की नोइय्यत में या फिर काम के मजमूई वक़्त व दौरानिये में कमी कर के उन की दुआ़एं भी लें और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने काम में तख़्फ़ीफ़ करने वालों को जहन्नम की आग से आज़ादी और मग़्फ़ेरत की जो बिशारत दी है उस के भी ह़क़दार बन जाएं और ख़ुद को अल्लाह पाक का पसन्दीदा बन्दा भी बना लें, ह़दीसे पाक में है : तमाम मख़्लूक़ अल्लाह पाक की अ़याल है और अल्लाह पाक का सब से ज़ियादा पसन्दीदा बन्दा वोह है जो उस की अ़याल को ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाए।[3]

मां-बाप अपने बेटों से, शौहर अपनी बीवी से और घर के अफ़राद अपनी मां और बहेनों से काम काज करवाने और मुख़्तलिफ़ ख़िदमात लेने के मुआ़मले में भी जहां तक मुमकिन हो इन बातों का लेह़ाज़ रखें और काम में कमी करें।

अल्लाह पाक हम को रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से माला माल फ़रमाए और मुलाज़िमीन व मा तह़तों को आसानियां देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) دیکھئے: صحیح ابنِ خزیمہ، 3/191، حدیث:1887 (2) در مختار ورد المحتار، 3/383

(3) معجم کبیر، 10/86، حدیث:10033۔

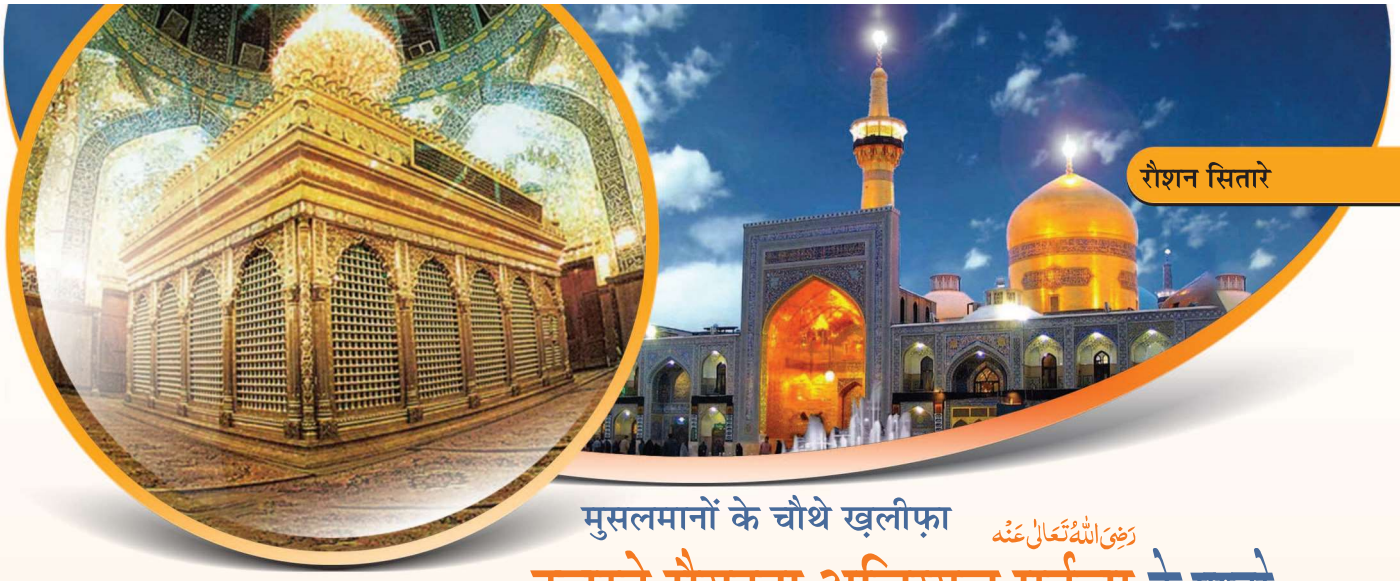

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा के मश्वरे

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : मैं ऐसे मुश्किल मुआ़मले से अल्लाह की पनाह चाहता हूं जिस के ह़ल करने में अबू ह़सन (यानी ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा के मश्वरे) मौजूद ना हों ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक सीरत का एक बहुत ही अहम पेहलू येह भी है कि आप ने पेहले तीनों ख़ुलफ़ा ए राशिदीन के दौरे ख़िलाफ़त में अहम उमूर में मश्वरे दिए, जिन्हें बड़ी अहमिय्यत दी गई । आइए ! आप भी चन्द अहम मश्वरे मुलाह़ज़ा कीजिए :

सिपेह सालार बनाने का मश्वरा ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र और इस्कन्दरिय्या को फ़त्ह़ करने के बाद मज़ीद फ़ुतूह़ात की इजाज़त लेने के लिए फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक ख़त़ लिखा और सालिम कन्दी नामी एक क़ासिद के ह़वाले कर के ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंचाने का ह़ुक्म दिया, क़ासिद नमाज़े अ़स्र के बाद मदीने पहुंचा, अपने ऊंट को मस्जिदे नबवी के दरवाज़े के पास बिठाया फिर मस्जिद में दाख़िल हुवा । क़ब्रे अन्वर और मिम्बर के दरमियान नमाज़ अदा की, फिर आगे बढ़ा तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई उन्हें सलाम किया, आप ने सलाम का जवाब दिया और क़ासिद से मुसाफ़ह़ा किया, क़ासिद केहते हैं : जब फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे ख़ुश देखा और फ़रमाया : मरह़बा ! सालिम मिस्र से ख़त़ लाया है, मैं ने तवज्जोह की तो वहां दाईं जानिब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बाईं जानिब ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद थे और आस पास कई मोअ़ज़्ज़ज़ सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी मौजूद थे । मैं ने ख़त़ फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में दे दिया, आप ने फ़रमाया : ऐ सालिम ! अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम दुन्या और आख़ेरत में मेह़फ़ूज़ो सलामत रहोगे, तो मैं ने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! ख़ुश ख़बरी, सलामती और अम्न है, जब फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़त़ पढ़ा तो बहुत ख़ुश हुवे कि माले ग़नीमत कई दिन पेहले मदीने पहुंच चुका था और सह़ाबा में तक़्सीम भी हो गया था, फिर (मज़ीद फ़ुतूह़ात की इजाज़त देने ना देने के बारे में) ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां मौजूद ह़ाज़िरीन और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा मांगा । ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह मश्वरा दिया : ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स (फ़ौज ले कर) ख़ुद आगे कूच ना करें इस का फ़ाइदा येह होगा कि दुश्मन के दिलों में उन का ख़ौफ़ रहेगा । हां ! दस हज़ार सिपाहियों का लश्कर तैयार करें और इस का सिपेह सालार ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद को बना कर (मज़ीद फ़ुतूह़ात के लिए) रवाना कर दें, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ालिद अल्लाह पाक की तलवार है । और एक रिवायत में है : बेशक ख़ालिद एक ऐसी तलवार हैं जो अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में नियाम में नहीं रेहती ।[2]

फ़ारूक़े आज़म की ह़ैसिय्यत हार में डोरी की त़रह़ है

एक मरतबा कूफ़ा में इस्लामी लश्कर के सिपेह सालार की त़रफ़ से ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक ख़त़ पहुंचा जिस में लिखा था, दुश्मन अपने डेढ़ लाख सिपाही जम्अ़ कर चुका है अगर उस ने हम पर पेहले ह़म्ला कर दिया तो बहादुरी

और हिम्मत के साथ ह़म्ला करेगा, अगर हम ने ह़म्ला करने में जल्दी की तो येह फ़ाइदेमन्द होगा, फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबा ए किराम से मश्वरा किया : (मैं आप ह़ज़रात के दरमियान मौजूद हूं और) येह ऐसा दिन है इस त़रह़ के दिन और भी आएंगे आप लोगों की क्या राए है कि मैं यहां से कुछ लोगों को साथ ले जाऊं और वहां क़रीब किसी मक़ाम पर ठेहर कर इस्लामी लश्कर जम्अ़ करूं और मुसलमानों की मदद करूं यहां तक कि अल्लाह पाक मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमा दे। अक्सर सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हमारी राए येह नहीं है (कि आप उन के पास चले जाएं) हां ! आप के मश्वरे और राए उन से दूर नहीं हैं (यानी उन के काम आएंगे) लड़ने के लिए अ़रब के शेह सवार और जंगजू और बहादुर काफ़ी हैं उन ही लोगों ने दुश्मन के लश्करों को शिकस्ते फ़ाश दी है, ख़त़ में (पेहले) ह़म्ला करने की इजाज़त त़लब की है आप इजाज़त दे दें। बाज़ सह़ाबा ने इस राए पर तनक़ीद की, फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुवे और केहने लगे : अक्सर ह़ज़रात ने जो राए दी है वोह दुरुस्त है जो तेह़रीर आप के पास आई है उस का येही मत़लब है। जंग में कामयाबी और नाकामी का दारोमदार तादाद के कम या ज़ियादा होने पर नहीं है, येह तो अल्लाह का दीन है जिस को उस ने ग़ालिब कर दिया है और उसी का लश्कर है जिसे उस ने फ़रिश्तों के ज़रीए मज़बूत़ किया यहां तक कि इस्लामी लश्कर इस मक़ाम तक पहुंच गया है हम तो अल्लाह के वादे पर भरोसा करते हैं वोही अपने वादे को पूरा करने वाला है और अपने लश्कर की मदद करने वाला है, आप की हैसिय्यत मोतियों वाले हार में धागे की है जो मोतियों को इकठ्ठा और रोके रखता है अगर ख़ुद टूट जाए तो मोती बिखर जाते हैं, अहले अ़रब तादाद में अगर्चे कम हैं लेकिन इस्लाम लाने के सबब मुअ़ज़्ज़ज़ हो कर ब कसरत हो गए हैं लेहाज़ा आप यहां से ना जाएं और अहले कूफ़ा अ़रब के सरदार और मुअ़ज़्ज़ज़ीन हैं उन को ख़त़ लिख दें कि फ़ौज के दो ह़िस्से दुश्मन से टकराएं और एक ह़िस्सा वहीं ठेहर जाए, बसरा वालों को लिख कर भेज दीजिए कि वोह इस्लामी फ़ौज की मदद के लिए फ़ौज का एक ह़िस्सा रवाना कर दें। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन मुअ़ज़्ज़ज़ीन की राए और मश्वरा सुन कर बहुत ख़ुश हुवे।[3]

हम अल्लाह की मदद से दुश्मन से टकराते हैं मज़ीद एक मश्वरा येह आया : शाम और यमन से भी फ़ौज मंगवा लें और ख़ुद फ़ौज ले कर जाएंगे तो दुश्मन की कसीर तादाद भी आप की निगाह में कम होगी और आप ही ग़ालिब रहेंगे, येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : (आज मैं आप ह़ज़रात के दरमियान मौजूद हूं और) येह एक ऐसा दिन है इस त़रह़ के कई दिन और भी आएंगे, इस पर फिर कई आरा सामने आईं, येह सुन कर ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो गए और अ़र्ज़ करने लगे : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप शाम वालों से शामी फ़ौज रवाना करेंगे तो रूमी अफ़वाज अहले शाम के घर वालों पर ह़म्ला कर देगी, अगर आप यमन वालों से यमनी सिपाहियों को रवाना करेंगे तो ह़ब्शा वाले उन के बाल बच्चों पर ह़म्ला कर देंगे, और अगर आप ब नफ़्से नफ़ीस यहां से कूच करेंगे तो अ़रब के आस पास वाले इस सरज़मीन पर टूट पड़ेंगे यहां तक कि अपनी सरह़दों की ह़िफ़ाज़त करना बैरूनी मुआ़मलात से ज़ियादा अहम हो जाएगा लेहाज़ा आप सब इस्लामी अफ़वाज को अपने शेहरों में ही रेहने दें और अहले बसरा को ख़त़ भेज दीजिए कि वोह फ़ौज को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम कर लें एक ह़िस्सा अपने अहलो अ़याल की ह़िफ़ाज़त करे दूसरा ह़िस्सा वहां मक़ामी ज़िम्मियों को बग़ावत और अ़हद शिकनी से रोकने के लिए वहीं ठेहरे और तीसरा ह़िस्सा कूफ़ा में अपने भाइयों की मदद के लिए पहुंच जाए। आप के जाने के सबब अ़जमियों ने अगर आप को वहां देखा तो कहेंगे : येह अहले अ़रब के ह़ाकिम और अ़रब के सुतून हैं, लेहाज़ा येह चीज़ इन में शदीद सख़्ती ला सकती है। और बह़र ह़ाल आप ने येह भी बताया था कि दुश्मन की फ़ौजें रवाना हो चुकी हैं, (तो गुज़ारिश येह है कि) बेशक अल्लाह नापसन्द करता है कि दुश्मन की फ़ौजें रवाना हों और वोह उसे बदलने पर ज़ियादा क़ुदरत रखता है (यानी अल्लाह अगर चाहे तो मुसलमानों का रोब व दबदबा दुश्मन पर त़ारी कर दे और वोह डर कर वापस पलट जाए)। और रही बात उन की तादाद की तो (आप जानते ही हैं कि) हम गुज़श्ता ज़माने में भी कसरते तादाद के बलबूते पर दुश्मन से नहीं टकराते रहे बल्कि हम तो अल्लाह करीम की मदद व नुसरत के साथ दुश्मन से टकराते रहे हैं।[4]

शहादत 40 हिजरी माहे रमज़ान की 21 तारीख़ को मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जामे शहादत नोश फ़रमाया।[5]

---

(1)البدایۃ والنہایۃ،5/476 (2)فتوح الشام، 2/205ملخصًا (3)تاریخ طبری، 4/123 تا 124 ملخصًا (4)تاریخ طبری، 4/124 تا 125 ملخصًا (5)تاریخ ابن عساکر،42/587۔

नवासा ए रसूल ह़ज़रते सैयदना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सरदारे उम्मत, नवासा ए रसूल, शेहज़ादा ए मौला ए अ़ली, जिगर गोशा ए बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा सैयदना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी को मदीना ए मुनव्वरा में पैदा हुवे ।[1] आप को भी कमसिनी में शरफ़े सह़ाबिय्यत मिला ।

बादे विलादत करम नवाज़ी जब इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के कान में अज़ान दी ।[2] घुट्टी दी, आप का नाम "ह़सन" रखा और आप को अपना बेटा फ़रमाया ।[3] दो दुम्बों के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़क़ीक़ा किया और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आप का सर मूंडने और सर के बालों के बराबर चांदी सदक़ा करने का हुक्म दिया ।[4]

हुज़ूर ने बोसा लिया एक मौक़ेअ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बोसा लिया, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास अक़रअ़ बिन ह़ाबिस तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठे हुवे थे, उन्हों ने कहा कि मेरे 10 बेटे हैं, मैं ने कभी किसी का बोसा नहीं लिया, नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो रेह़म नहीं करता उस पर रेह़म नहीं किया जाता ।[5]

कन्धे पर सवार फ़रमाया ह़ज़रते बर्राअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप ने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने कन्धे पर सवार फ़रमाया हुवा था और अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ करते थे : ऐ अल्लाह ! मैं इस (यानी इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मह़ब्बत करता हूं तू भी इस से मह़ब्बत फ़रमा और जो इस से मह़ब्बत करे उस से मह़ब्बत फ़रमा ।[6]

हुज़ूर की शफ़्क़तो मह़ब्बत ह़ज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सज्दे में गए तो इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो अभी छोटे बच्चे थे आए और हुज़ूरे अनवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक पीठ और गर्दन शरीफ़ पर बैठ गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ आहिस्ता से सज्दे से सर मुबारक उठाया कि इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उतर गए, (नमाज़ मुकम्मल होने के बाद) सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इमामे ह़सन से आप इस अन्दाज़ से पेश आते हैं कि किसी और से ऐसा सुलूक नहीं

फ़रमाते ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दुन्या में मेरा फूल है ।[7]

फ़ज़ाइलो मनाक़िब प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी गोद में बिठाया, सूंघा, अपने सीने से लगाया, अपनी मुबारक चादर में लिया और आप को जन्नती जवानों का सरदार फ़रमाया ।[8]

✹ हज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर बैठे हुवे हैं और इमामे हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बराबर में बैठे हुवे हैं, नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी लोगों की तरफ़ देखते और कभी इमामे हसन की तरफ़ देखते, प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरा येह बेटा सैयद (यानी सरदार) है, अल्लाह पाक इस के ज़रीए मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों के दरमियान सुल्ह फ़रमाएगा ।[9]

✹ रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अर्ज़ करने पर इमामे हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी विरासत से हैबत व सरदारी अता फ़रमाई ।[10]

इमामे हसन मुज्तबा की बचपन की मरविय्यात

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अहादीसे मुबारका भी मरवी हैं ।[11]

चुनान्चे, एक रिवायत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह एक बात याद की है कि जो चीज़ तुम्हें शक में डाले उसे छोड़ दो और जो शक में ना डाले उसे कर लो, क्यूंकि सच इत्मीनान है और झूट तरद्दुद है ।[12]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यानी जो काम या कलाम तुम्हारे दिल में खटके कि ना मालूम हराम है या हलाल उसे छोड़ दो और जिस पर दिल गवाही दे कि येह ठीक है उसे इख़्तियार करो मगर येह उन हज़रात के लिए है जो हज़रते (इमाम) हसन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) जैसी कुव्वते कुदसिय्या व इल्मे लदुन्नी वाले हों जिन का फ़ैसला ए क़ल्ब किताबो सुन्नत के मुताबिक़ हो, आम लोग या जो नफ़्सानी व शैतानी वेहमियात में फंसे हों उन के लिए येह क़ाइदा नहीं । मज़ीद फ़रमाते हैं : मोमिने कामिल का दिल सच्चे काम व सच्चे कलाम से मुत्मइन होता है और मश्कूक अश्या से कुदरती तौर पर मुतरद्दद होता है ।[13]

विसाले ख़ालिके हक़ीक़ी रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ 7 साल 6 माह के थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 47 साल की उम्र में 5 रबीउल अव्वल 50 हिजरी को वफ़ात पाई और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में की गई ।[14]

अल्लाह पाक की उन पर रेहमत हो और उन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़ेरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)الطبقات الكبير لابن سعد، 6/352(2)معجم كبير، 1/313، حديث:926
(3)مسند بزار، 2/315، حديث:743-مستدرک، 4/154، 155، حديث:
4826، 4829(4)نسائی، ص688، حديث: 4225-ترمذی، 3/175، حديث:
1524(5)بخاری، 4/100، حديث: 5997(6)بخاری، 2/547، حديث:
3749- مسلم، ص1013، حديث: 6256(7)مسند بزار، 9/111، حديث:
3657(8)مسند احمد، 10/184، حديث: 26602- ترمذی، 5/426، 428،
433، حديث: 3793، 3797، 3812(9)بخاری، 2/214، حديث: 2704
(10)معجم كبير، 22/423، حديث:1041(11)تهذيب الاسماء واللغات، 1/162
(12)ترمذی، 2/232، حديث:2526(13)مراٰة المناجيح، 4/234، 235
(14)صفوة الصفوة، 1/386۔

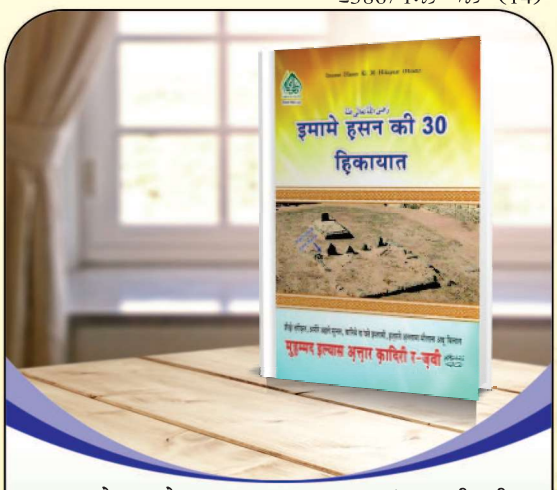

हज़रते इमामे हसन मुज्तबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के बारे में मज़ीद जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का 28 सफ़हात का रिसाला **''इमामे हसन की 30 हिकायात''** दावते इस्लामी इन्डिया की वेब साइट से डाऊन लोड कर के पढ़िए और दूसरों को भी शेर कीजिए ।

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी रحمۃ اللہ علیہ की नसीहतें

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, तफ़्सीरे नईमी, मिरआतुल मनाजीह और जा अल हक़ जैसी शाहकार, मशहूरो मारूफ़ और मक़्बूले आम किताबों के मुसन्निफ़ हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत शव्वालुल मुकर्रम 1314 सिने हिजरी को बदायूं शरीफ़ (यूपी, हिन्द) में हुई। अपनी तालीम मुकम्मल करने के बाद दर्सो तदरीस, फ़तवा नवेसी और तसनीफ़ वग़ैरा मुख़्तलिफ़ ख़िदमाते दीनिया में आप ने अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। बदायूं शरीफ़ में तुलूअ़ होने वाला येह आफ़ताब **3 रमज़ान** 1391 हिजरी मुताबिक़ 24 अक्तूबर 1971 ईसवी को ग़ुरूब हुवा।

इस मज़मून में आप की किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" से चन्द नसीहतों का इन्तेख़ाब किया गया है, ख़ुद भी पढ़िए और दीगर अहबाब के साथ भी शेर कीजिए।

1 (रमज़ान शरीफ़) में दिन को सब के सामने खाना पीना सख़्त गुनाह और बे हयाई है पेहले ज़माने में हिन्दू और दूसरे कुफ़्फ़ार भी रमज़ान में बाज़ारों में खाने पीने से बचते थे कि येह मुसलमानों के रोज़े का ज़माना है मगर जब मुसलमानों ने ख़ुद ही इस महीने का अदब छोड़ दिया तो दूसरों की शिकायत क्या है।

2 (ईद, बक़र ईद) भी इबादत के दिन हैं इन में भी मुसलमान गुनाह और बे हयाई करते हैं अगर मुसलमान क़ौम हिसाब लगाए तो हज़ार हा रुपिये रोज़ाना सिनेमाओं, थियेटरों और दूसरी अय्याशी में ख़र्च हो रहा है। अगर क़ौम का येह रुपिया बच जाए और किसी क़ौमी काम में ख़र्च हो तो क़ौम के ग़रीब लोग पल जाएं और मुसलमानों के दिन बदल जाएं ग़रज़ येह कि इन दिनों में येह काम सख़्त गुनाह हैं।

3 फ़ुज़ूल ख़र्चियों को बन्द करो ! और इस से जो पैसा बचे उस से अपने क़राबत दारों और महल्ले वालों, यतीम ख़ानों और दीनी मदरसों की मदद करना चाहिए, यक़ीन जानो कि मुसलमान क़ौम की ईद जब ही होगी जब सारी क़ौम ख़ुश हाल, हुनरमन्द और परहेज़गार हो, अगर तुम ने अपने बच्चों को ईद के दिन कपड़ों से लाद दिया लेकिन तुम्हारी मुस्लिम क़ौम के ग़रीब बच्चे उस दिन दर बदर भीक मांगते फिरे तो समझ लो कि येह ईद क़ौम की नहीं। अल्लाह पाक मुस्लिम क़ौम को सच्ची ईद नसीब फ़रमावे। आमीन

4 मुसलमान कामिल ईमान वाला जब हो सकता है कि सूरत में भी मुसलमान हो और दिल से भी यानी इस्लाम का इस पर ऐसा रंग चढ़े कि सूरत और

सीरत दोनों को रंग दे, दिल में अल्लाह पाक और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त का जज़्बा मौजें मार रहा हो, उस में ईमान की शम्अ़ जल रही हो और सूरत ऐसी हो जो अल्लाह पाक के मेह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द थी।

5 बड़ी मूंछें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नापसन्द थीं। दुन्या में हज़ारों पैग़म्बर तशरीफ़ लाए मगर किसी नबी ने ना दाढ़ी मुन्डाई और ना मूंछें रखाईं, लेहाज़ा दाढ़ी फ़ित़रत यानी सुन्नते अम्बिया है।

6 ग़िज़ा और लिबास का असर दिल पर होता है, तो अगर काफ़िरों की त़रह़ लिबास पहेना गया या कुफ़्फ़ार की सी सूरत बनाई गई तो यक़ीनन दिल में काफ़िरों से मह़ब्बत और मुसलमानों से नफ़रत पैदा हो जावेगी ग़रज़ येह कि येह बीमारी आख़िर में मोहलिक साबित होगी इस लिए ह़दीसे पाक में आया है "مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ" जो किसी दूसरी क़ौम से मुशाबेहत पैदा करे वोह उन में से है।

7 हम भी मोह़कमा ए इस्लाम और सल्त़नते मुस्त़फ़वी और ह़ुकूमते इलाहिय्या के नौकर हैं, हमारे लिए अलाह़दा शक्ल मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों काफ़िरों के बीच में खड़े हों तो पहेचान लिए जाएं कि मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ السَّلَام का ग़ुलाम वोह खड़ा है।

8 दाढ़ी के भी बहुत फ़ाइदे हैं सब से पेहला फ़ाइदा तो येह है कि दाढ़ी मर्द के चेहरे की ज़ीनत है और मुंह का नूर जैसे औ़रत के लिए सर के बाल या इन्सान के लिए आंखों के पलक और भवें ज़ीनत हैं। इसी त़रह़ मर्द के लिए दाढ़ी। अगर औ़रत अपने सर के बाल मुंडा दे तो बुरी मालूम होगी या कोई आदमी अपनी भवें और पलकें साफ़ करा दे वोह बुरा मालूम होगा। इसी त़रह़ मर्द दाढ़ी मुंडाने से बुरा मालूम होता है।

9 आदमी की इ़ज़्ज़त लिबास से नहीं बल्कि लिबास की इ़ज़्ज़त आदमी से है अगर तुम्हारे अन्दर कोई जौहर है या अगर तुम इ़ज़्ज़त और तरक़्क़ी वाली क़ौम के फ़र्द हो तो तुम्हारी हर त़रह़ इ़ज़्ज़त होगी कोई भी लिबास पहेनो, अगर इन चीज़ों से ख़ाली हो तो कोई लिबास पहेनो इ़ज़्ज़त नहीं होगी!

10 जैसे जिस्म पर जान ह़ुकूमत करती है कि हर उ़ज़्व उस की मरज़ी से ह़रकत करता है इस त़रह़ इस जान पर उस सुल्ताने कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ाकिम बनाओ कि जो ह़रकत हो उन ही की रिज़ा से हो इसी का नाम तसव्वुफ़ है और येह ही ह़क़ीक़त, मारेफ़त और त़रीक़त का मग़्ज़ है।

11 डूम मीरासी (गाने बाजे से कमाई करने वाले) लोगों को (सदक़ा ओ ख़ैरात) देना हरगिज़ जाइज़ नहीं क्यूंकि उन से हमदर्दी करना दर अस्ल उन को गुनाह पर दिलेर करना है।

12 मुसलमानों को बरबाद करने वाले अस्बाब में से बड़ा सबब उन के जवानों की बेकारी और बच्चों की आवारगी है। हमारे यहां मुसलमानों के अख़राजात ज़ियादा और आमदनी के ज़रीए मेह़दूद बल्कि क़रीबन नाबूद हैं, यक़ीन करो, बेकारी का नतीजा नादारी है। नादारी का अन्जाम क़र्ज़दारी और क़र्ज़दारी का अन्जाम ज़िल्लतो ख़्वारी है बल्कि सच तो येह है कि नादारी व मुफ़्लिसी सदहा ऐबों की जड़ है। चोरी, डकेती, भीक, बद मुआ़शी, जालसाज़ी इस की शाख़ें हैं और जेल फांसी इस के फल। मुफ़्लिस की बात का वज़्न ही नहीं होता।

13 मुसलमानों को चाहिए कि बेकारी से बचें, अपने बच्चों को आवारा ना होने दें और जवानों को काम पर लगाएं, दूसरी क़ौमों से सबक़ लें, देखो ग़ैर मुस्लिमों के छोटे बच्चे या स्कूल व कॉलेज में नज़र आएंगे या ख़्वान्चा बेचते। मुसलमानों के बच्चे या पतंग उड़ाते दिखाई देंगे या गेन्द बल्ला खेलते दीगर क़ौमों के जवान कचेहरियों, दफ़्तरों और उ़म्दा उ़म्दा ओ़हदों की कुर्सियों पर दिखाई देंगे या तिजारत में मश्ग़ूल नज़र आएंगे मगर मुसलमानों के जवान या फ़ेशनेबल और ऐ़श परस्त मिलेंगे या भीक मांगते दिखाई देंगे या बद मुआ़शी करते नज़र आएंगे।

14 सह़ाबा ए किराम सिर्फ़ नमाज़ी ही ना थे वोह मस्जिदों में नमाज़ी थे। मैदाने जंग में बहादुर ग़ाज़ी, कचेहरी में क़ाज़ी और बाज़ार में आला दर्जे के कारोबारी, ग़रज़ येह कि मद्रसा ए नबवी में उन की ऐसी आला तालीम हुई थी कि वोह मस्जिदों में मलाइका ए मुक़र्रबीन का नमूना होते थे मस्जिदों से बाहर मुद्दब्बिराते अम्र का नक़्शा पेश करते थे।

15 हर शख़्स अपने मुनासिब ता़क़त तिजारत करे, क़ुदरत ने हर एक को अलाह़दा अलाह़दा काम के लिए बनाया है किसी को ग़ल्ले की तिजारत फलती है, किसी को कपड़े, किसी को लकड़ी की, किसी को किताबों की, ग़रज़ येह कि तिजारत से पेहले येह ख़ूब सोच लो कि मैं किस क़िस्म की तिजारत में कामयाब हो सकता हूं।

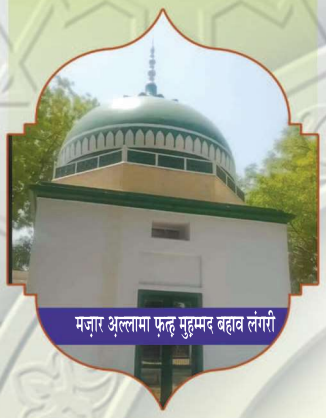
मज़ार अल्लामा फ़त्ह मुहम्मद बहाव लंगरी

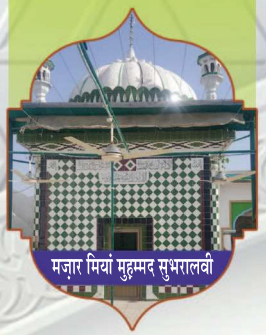
मज़ार मियां मुहम्मद सुभरालवी

मज़ार दादा मियां सूजा शरीफ़

मज़ार बाबा जलालुद्दीन क़ादरी

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

रमज़ानुल मुबारक इस्लामी साल का नवां महीना है। इस में जिन सहाबा ए किराम, औलिया ए उज़्ज़ाम और उलमा ए इस्लाम का विसाल या उर्स है, उन में से मज़ीद 11 का तआरुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

सहाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

शोहदा ए जंगे बुवैब : येह जंग रमज़ान 13 हिजरी में हज़रते मुस्ना बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कमान्ड में दरिया ए फ़ुरात के कनारे बुवैब, नज्द कूफ़ा के मक़ाम पर हुई, मुशरिकीन का सरदार मेहरान हमदानी मारा गया और मुसलमानों को शानदार फ़त्ह हासिल हुई, इस में मुसलमानों के कई सरदार शहीद हुवे।[1]

1 हज़रते मसऊद बिन हारिसा शैबानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मशहूर मुजाहिद व फ़ातेहे फ़ारस हज़रते मुस्ना बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं। इस्लाम क़बूल करने से पेहले भी इन का शुमार अहले अरब के बहादुर लोगों में होता था, येह हज़रते सैयदना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में अपने भाई के साथ हीरा, इराक़ में रेहाइश पज़ीर हो गए थे। फिर येह बाबिल में चले गए और अपने भाई के साथ शामिले जंग हुवे, आप की शहादत रमज़ान 13 हिजरी में होने वाली जंगे बुवैब में हुई।[2]

औलिया ए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

2 हज़रते सैयद अक़ील शाह समरक़न्दी क़ोक़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत शाबान 659 हिजरी को समरक़न्द के सादात घराने में हुई और विसाल 16 रमज़ान 711 हिजरी को जाए पैदाइश में हुवा, यहीं मज़ार मर्जए आम है। आप आलिमे बा अमल, वली ए बा कमाल और मुर्शिदे दौरां थे, आप ने उज़बेकिस्तान के शेहर क़ोक़ान (Kokand) में ख़ानक़ाह क़ाइम फ़रमाई, अवाम व हुक्मरान मुस्तफ़ीज़ हुवे।[3]

3 हज़रते क़ुत्बे आलम गीलानी अल मारूफ़ दादा मियां رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1327 हिजरी में आस्ताना ए आलिया सूजा शरीफ़, राजस्थान, हिन्द में हुई। आप मुस्तजाबुद्दावात, आली मर्तबत और इस आस्ताने के सज्जादा नशीन थे। आप का विसाल 17 रमज़ान 1382 हिजरी को हुवा।[4]

4 बाबा जी सरकार पीर ख़लीफ़ा जलालुद्दीन क़ादरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश बीरमपुर (Birampur) ज़िल्अ होशियार पुर, पंजाब हिन्द में हुई और आप ने 21 रमज़ान 1391 हिजरी में विसाल फ़रमाया, आप सिलसिला ए क़ादरिय्या क़लन्दरिय्या के शैख़े तरीक़त, मुहिब्बे सहाबा ओ अहले बैत और आशिक़े ग़ौसे आज़म थे।[5]

उलमा ए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

5 अदीबुल अस्र शैख़ अबू बक्र मुहम्मद बिन अब्बास ख़्वारज़मी तबरख़ज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मशहूर मुफ़स्सिर इमाम इब्ने जरीर तबरी के भांजे थे। उन्हें 20 हज़ार अश्आर ज़बानी याद थे। आप काफ़ी अर्से हलब

शाम में रहे फिर नैशापुर आ गए । दीवाने अबू बक्र ख़्वारज़्मी और रसाइले ख़्वारज़्मी आप की यादगार कुतुब हैं । आप का विसाल रमज़ान 383 हिजरी में नैशापुर ईरान में हुवा ।(6)

6 ह़ज़रते शैख़ सैयद मुह़म्मद शरीफ़ सनूसी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1262 हिजरी को और वफ़ात 1313 हिजरी या 1314 हिजरी को जग़बूब, सूबा बर्क़ा, लीबिया में हुई, यहीं वालिदे गिरामी शैख़ कबीर मुह़म्मद बिन अ़ली सनूसी के पेहलू में तदफ़ीन हुई । आप आ़लिमे दीन, तेह़रीके सनूसी के मुशीर, शोबा ए तालीमो तरबियत और मद्रसे के सर बराह और बेहतरीन मुदर्रिस थे, इन के कुतुब ख़ाने में आठ हज़ार किताबें थीं, आप का उ़र्स 27 रमज़ान को मनाया जाता है ।(7)

7 क़ाज़ी मियां मुह़म्मद चिश्ती सुभरालवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1230 हिजरी को एक इल्मी घराने में हुई और विसाल 25 रमज़ान 1329 हिजरी को फ़रमाया । आप अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ली मखड़वी के शागिर्द, जैयद आ़लिमे दीन, मुरीदो ख़लीफ़ा शम्सुल आ़रेफ़ीन सियालवी और उस्ताज़ुल उ़लमा थे ।(8)

8 शैख़ुल क़ुर्रा ह़ज़रते मौलाना अबुल फ़ैज़ ग़ुलाम मुह़म्मद ख़ान क़ादरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1373 हिजरी को हुई और 5 रमज़ान 1419 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ाज़िले जामेआ़ रज़विय्या मज़हरे इस्लाम बेहतरीन क़ारी, पुर असर वाइ़ज़, साह़िबे तसनीफ़, दर्से निज़ामी व दरजए ह़िफ़्ज़ व क़िराअत के उस्ताज़, सिलसिला ए क़ादरिय्या में बैअ़त और अपने बड़े भाई मुफ़्ती रियाज़ुद्दीन रज़वी के ख़लीफ़ा थे ।(9)

9 मलिकुश्शोअ़रा ख़्वाजा अक्बर वारिसी मेरठी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ मोज़ए बजूली ज़िल्अ़ मेरठ, हिन्द में पैदा हुवे, अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू पर उ़बूर था । आप बुलन्द पाए के शाइ़र थे । ह़ाजी वारिस अ़ली शाह देवा शरीफ़ से बैअ़त की और ख़िलाफ़त शबीए ग़ौसे आज़म शाह अ़ली हुसैन अशरफ़ी से ह़ासिल हुई । आप के तक़रीबन 12 दीवान में से मीलादे अक्बर को बे पनाह शोहरत ह़ासिल हुई । आप के शागिर्दों में ह़फ़ीज़ जालन्धरी मश्हूर हैं । आप का इन्तेक़ाल 6 रमज़ान 1372 ईसवी में हुवा । तदफ़ीन मेवा शाह क़ब्रस्तान में हुई ।(10)

10 उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़त्ह़ मुह़म्मद رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत वटू ख़ानदान में 1304 हिजरी को ज़मीनदार घराने में हुई और विसाल 29 रमज़ान 1389 हिजरी को हुवा, तदफ़ीन जामेअ़ मस्जिद फ़ारूके़ आज़म, जानिबे मशरिक़ की गई । आप जैयद आ़लिमे दीन, जामेए माक़ूलो मन्क़ूल, मुदर्रिसे दर्से निज़ामी, साह़िबे तस्नीफ़, सिलसिला ए चिश्तिय्या निज़ामिय्या के शैख़े त़रीक़त, अ़रबी, फ़ारसी और पंजाबी के शाइ़र थे । आप ने 55 साल से ज़ाइद अ़र्से तदरीस फ़रमाई, कई अकाबिर उ़लमा ए अहले सुन्नत आप के शागिर्द थे ।(11)

11 उस्ताज़ुल उ़लमा अ़ल्लामा ग़ुलाम मुह़म्मद तोनसवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश अन्दाज़न 1355 हिजरी में हुई और 6 रमज़ान 1435 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप उस्ताज़ुल कुल अ़ल्लामा अ़त़ा मुह़म्मद बन्दयालवी के क़ाबिल तरीन शागिर्दों में से थे, मन्तिक़ व फ़लसफ़ा आप के ख़ास मैदान थे, तदरीस में मैलाने त़बई था, अस्बाक़ से पेहले ज़रूर तैयारी किया करते थे । अकाबिर उ़लमा ए अहले सुन्नत आप के शागिर्द हैं । आप ने कई मदारिस में मुदर्रिस, सदरुल मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस के ओ़हदे पर फ़ाइज़ रेह कर तक़रीबन 65 सालों में 30 से ज़ाइद उ़लूम पर 100 से ज़ाइद कुतुब पढ़ाई हैं ।(12)

---

(1) البدایۃ والنہایۃ، 5/96-تاریخ طبری، 3/158تا165- 8/166تا171 (2) اعلام للزرکلی، 7/217-تاریخ طبری، 3/158تا165 (3) تذکرہ مشائخ قادریہ فاضلیہ، ص102تا104 (4) تذکرہ سادات لونی شریف، ص506، 573 (5) ماہِ ولایت پیر جلال الدین قادری، ص86تا96 (6) سیر اعلام النبلاء، 12/536 (7) تذکرہ سنوسی مشائخ، ص91 (8) فوز المقال، 1/380تا385 (9) تذکرہ علمائے اہلسنت، ص477 تا 479 (10) انوار علمائے اہلسنت، ص100 تا 104-حیات مخدوم الاولیاء، ص312 (11) تذکرہ اکابر اہلِ سنّت، ص371، 372 (12) قرۃ عیون الاقیال فی تذکرہ فضلا، ص255۔

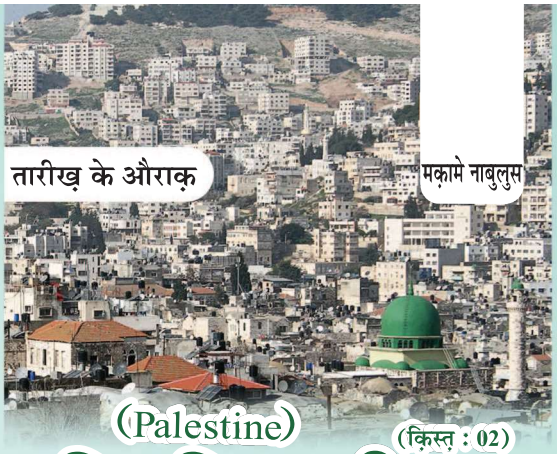

(Palestine) (क़िस्त : 02)

फ़िलिस्तीन

की तारीख़ी व मज़हबी हैसिय्यत

5 नाबुलुस येह आबादी के लेहाज़ से फ़िलिस्तीन का सब से बड़ा शेहर और एक अहम मक़ाम है, येह फ़िलिस्तीनी यूनीवर्सिटियों का बड़ा हेड क्वोर्टर है। येह शुमाली मग़रिबी कनारे का मर्कज़ है, इस के और भी नाम हैं जैसे जबलुन्नार, दिमश्क़ सुग़रा, उ़लमा का मस्कन और फ़िलिस्तीन की बे ताज मलिका।

नाबुलुस अ़हदे फ़ारूक़े आज़म में फ़त्ह़ हुवा। क़ैसारिय्या फ़त्ह़ होने की ख़बर सुन कर अत़राफ़ के शेहर व देहात रम्ला, अ़क्का, अ़स्क़लान, ग़ज़्ज़ा, नाबुलुस, त़बरिय्या, बैरूत, जबला और लाज़िक़िय्या वग़ैरा के लोग भी सैयदना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और अदा ए जज़िय्या की शर्त पर सुल्ह़ कर ली यूं येह तमाम अ़लाक़े भी एक साथ फ़त्ह़ हो गए।[1]

नाबुलुस की एक बस्ती का नाम सैलून है, जहां मस्जिदे सकीना है, कहा जाता है कि येह ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام की जाए क़ियाम थी, यहीं से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के भाई उन्हें ले कर गए और कुंवें में डाला, कुंवां सिंजिल नामी बस्ती के पास था, लोगों ने उस कुंवें को ज़ियारत गाह बना लिया।[2]

अक्सर अहले इ़ल्म के मुत़ाबिक़ आस्मान से माइदा यानी दस्तर ख़्वान यहीं नाज़िल हुवा था।[3] नाबुलुस बड़ा मर्दम ख़ेज़ अ़लाक़ा रहा है, यहां से आ़लमे इस्लाम की बड़ी बड़ी शख़्सिय्यात का ज़ुहूर हुवा जैसे आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन के इ़ल्मी व तेह़क़ीक़ी कारनामों की दुन्या मोतरिफ़ है।

6 रम्ला रम्ला फ़िलिस्तीन का एक शानदार क़स्बा है, अपनी बनावट के लेहाज़ से ख़ूबसूरत है, माह़ौल व फ़ज़ा ख़ुशगवार है, येह कई छोटे छोटे देहातों पर मुश्तमिल है, एक अच्छा तिजारती शेहर है, इस के घर कुशादा, मस्जिदें ख़ूबसूरत और गलियां चौड़ी व वसीअ़ हैं और येह पहाड़ों और समुन्दर के क़रीब वाक़ेअ़ है।[4] रम्ला का शुमार क़दीम शेहरों में होता है, रम्ला भी अ़हदे फ़ारूक़े आज़म में फ़त्ह़ हुवा और ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से फ़त्ह़ हुवा।

इब्ने रस्लान के नाम से मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते अह़मद बिन हुसैन बिन ह़सन शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन के मज़ार के पास दुआ़ क़बूल होती है[5] आप की विलादत भी रम्ला में हुई।[6] अपने ज़माने के शैख़ ह़नफ़िय्या, साह़िबे फ़तावा ख़ैरिय्या (اَلْفَتَاوٰی الْخَیْرِیَّۃ لِنَفْعِ الْبَرِیَّۃ) इमाम, फ़क़ीह, मुह़द्दिस, मुफ़स्सिर अ़ल्लामा ख़ैरुद्दीन अह़मद बिन अ़ली ह़नफ़ी रम्ली (वफ़ात : 1081 हिजरी) भी इसी शेहर से तअ़ल्लुक़ रखते थे।[7]

7 अ़स्क़लान फ़िलिस्तीन के अत़राफ़ में शाम का मश्हूर साह़िली शेहर जिसे हुस्नो ख़ूबी की वज्ह से **"उ़रूसुश्शाम यानी शाम की दुल्हन"** कहा जाता था, अब येह फ़िलिस्तीन का एक रेहाइशी अ़लाक़ा है, येह शेहर ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों फ़त्ह़ हुवा, इस के बाद 548 हिजरी में फ़िरंगियों ने उस पर क़ब्ज़ा कर लिया।[8] इस शेहर की फ़ज़ीलत में एक ह़दीसे पाक भी आई है, रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़स्क़लान दो दुल्हनों में से एक है, रोज़े क़ियामत इस में से 70 हज़ार ऐसे उठेंगे जिन पर ह़िसाब नहीं।[9] कसीर तादाद में ह़ज़राते सह़ाबा ए किराम और ताबेईन ने उ़ज़्ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم यहां तशरीफ़ लाए और बहुत सारे मुह़द्दिसीने किराम ने यहां दर्से ह़दीस दिया। ह़ज़रते सुल्त़ान सलाहुद्दीन अय्यूबी علیہ الرَّحمہ ने 583 हिजरी में इसे सलीबियों के क़ब्ज़े से आज़ाद करवाया।[10]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1) فتوح الشام، 2/32 (2) آثار البلاد واخبار العباد، ص205 (3) معجم البلدان، 3/107
(4) احسن التقاسیم فی معرفۃ الاقالیم، ص164 ماخوذاً (5) شرح زرقانی علی المواہب، 9/66 (6) معجم المؤلفین، 1/128 (7) معجم المطبوعات العربیۃ والمعربۃ، 2/951
(8) آثار البلاد واخبار العباد، ص222 (9) مسند احمد، 21/65، حدیث: 13356
(10) معجم البلدان، 3/327۔

दूध

(क़िस्त : 01)

Milk

नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन मशरूबात को पिया है उन में से एक दूध भी है। दूध हर उ़म्र के अफ़राद के लिए एक सेह़त बख़्श ग़िज़ा और बे मिसाल मशरूब है। क़दीम अ़रबी में दूध को "लबनुन" जबकि जदीद अ़रबी में इसे "ह़लीबुन" केहते हैं। आज कल अ़रबी में लबनुन से दही मुराद लिया जाता है जबकि कुरआने करीम में दो जगह दूध का ज़िक्र लफ़्ज़े लबनुन से वारिद है।

पेहली आयत जन्नती नेमतों के ज़िक्र के वक़्त इरशाद होता है : ﴿وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ऐसे दूध की नेहरें हैं जिस का मज़ा ना बदले।[1]

तफ़्सीर ❁ जन्नती दूध का ज़ाइक़ा इस लिए नहीं बदलेगा क्यूंकि वोह जानवरों के थनों से नहीं निकाला जाएगा, बल्कि अल्लाह पाक जन्नत में दूध की नेहरें पैदा फ़रमाएगा और वोह नेहरें उसी सूरत पर रहेंगी जिस पर अल्लाह पाक ने उन्हें पैदा फ़रमाया है।[2]

❁ जन्नत का दूध दुन्यावी दूध की त़रह़ ज़ियादा अ़र्से तक रखने की वज्ह से खट्टा नहीं होगा और ना ही उस का ज़ाइक़ा बदलेगा, अलबत्ता जन्नती की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ उस का ज़ाइक़ा तब्दील हो जाएगा।[3]

दूसरी आयत कुरआने करीम में दूसरे मक़ाम पर अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ(۶۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और बेशक तुम्हारे लिए मवेशियों में ग़ौरो फ़िक्र की बातें हैं (वोह येह कि) हम तुम्हें उन के पेटों से गोबर और ख़ून के दरमियान से ख़ालिस दूध (निकाल कर) पिलाते हैं जो पीने वाले के गले से आसानी से उतरने वाला है।[4]

तफ़्सीर कुफ़्फ़ार येह केहते थे कि जब आदमी मर गया और उस के जिस्म के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और ख़ाक में मिल गए, वोह अज्ज़ा किस त़रह़ जम्अ़ किए जाएंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उन को किस त़रह़ मुमताज़ किया जाएगा ? इस आयते करीमा में ग़ौर करने से वोह शुबा बिलकुल ख़त्म हो जाता है कि अल्लाह पाक की येह शान है कि वोह ग़िज़ा के मख़लूत़ अज्ज़ा में से ख़ालिस दूध निकालता है और उस में कुर्बो जवार की चीज़ों की आमेज़िश का शाइबा भी नहीं आता, उस ह़कीमे बरह़क़ की क़ुदरत से क्या बईद कि इन्सानी जिस्म के अज्ज़ा को मुन्तशिर होने के बाद फिर मुज्तमेअ़ (यानी जम्अ़) फ़रमा दे।[5]

इस आयत के तह़त इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दूध पैदा होने के बारे में फ़रमाते हैं : जिगर और थन के दरमियान बहुत सी रगें होती हैं और इन रगों में ख़ून थन की त़रफ़ बेहता है, तो अल्लाह पाक उस थन में ख़ून की शक्ल को दूध की शक्ल से बदल देता है इस त़रह़ दूध बनता है।[6]

अहादीसे तैयबा में दूध के बारे में जो रिवायात मिलती हैं वोह दो तरह की हैं। एक वोह जिन में नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दूध पीने का ज़िक्र है जबकि दूसरी वोह जिन में सिर्फ़ दूध का ज़िक्र है। यहां पेहली क़िस्म की रिवायात पेश की जा रही हैं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध पिया

1 हज़रते उम्मुल फ़ज़्ल बिन्ते हारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान करती हैं कि अरफ़े के दिन कुछ लोगों ने उन के पास हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रोज़े के बारे में गुफ़्तगू की, बाज़ ने कहा कि नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़ादार हैं और बाज़ ने कहा कि रोज़ादार नहीं तो उम्मुल फ़ज़्ल ने हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दूध का एक प्याला भेजा जबकि आप अरफ़ात में अपने ऊंट पर क़ियाम फ़रमा थे तो आप ने पी लिया।[7]

2 हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध पिया, फिर (पानी से) कुल्ली फ़रमाई और फ़रमाया : इस में चिकनाहट होती है।[8]

3 हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेराज की रात मेरे पास दो बरतन लाए गए, एक में दूध था दूसरे में शराब थी। मुझ से कहा गया : इन में से जिस बरतन से आप चाहें पी लें ! तो मैं ने दूध इख़्तियार किया, उसे पी लिया। मुझ से कहा गया कि आप ने फ़ितरत को पा लिया है, अगर शराब इख़्तियार करते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती।[9]

4 हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अपनी ख़ाला के बारे में फ़रमाया है कि उन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ खाने की दीगर चीज़ों के साथ साथ दूध और पनीर भी पेश किया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध पी लिया और पनीर खा लिया।[10]

5 हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ घर में दाख़िल हुवा तो ख़िदमते अक़्दस में दूध का प्याला पेश किया गया तो मुझ से फ़रमाया : अहले सुफ़्फ़ा को मेरे पास बुला लाओ। जब वोह आए तो आप ने फ़रमाया : प्याला उठाओ और इन को पिलाते जाओ। जब सब ने पी लिया तो फिर आप ने मुझ से फ़रमाया : बैठो और पियो। मैं बराबर पीता रहा यहां तक कि मेरा पेट भर गया, फिर मैं ने नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिया तो आप ने अल्लाह पाक की हम्दो सना बयान की और बिस्मिल्लाह पढ़ कर बाक़ी दूध पी लिया।[11]

6 एक दिन नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। आप की सीधी तरफ़ आप के चचा हज़रते अब्बास के छोटे बेटे अब्दुल्लाह बैठे थे जबकि दूसरी तरफ़ बड़ी उम्र के सहाबा थे। उसी दौरान एक शख़्स आप के लिए दूध का प्याला ले आया, आप ने उस से थोड़ा पिया बाक़ी सहाबा में तक़्सीम करना चाहा। अब दाईं जानिब छोटा बच्चा और बाईं जानिब बड़ी उम्र के सहाबा थे और प्यारे नबी ए पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आदत थी कि हर शान वाला काम सीधी तरफ़ से शुरूअ किया करते थे इस लिए अब्दुल्लाह बिन अब्बास से फ़रमाने लगे : बच्चे ! अगर इजाज़त दो तो बड़ों को दे दूं ? अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अर्ज़ की : आप के बचे हुवे पर किसी को तरजीह नहीं दूंगा। तो नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह दूध आप को दे दिया।[12]

7 हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए बकरी का दूध दोहा गया और हज़रते अनस के घर में जो कुंवां था, उस का पानी उस में मिलाया गया फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया गया, आप ने नोश फ़रमाया। आप की बाईं जानिब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और दाहनी तरफ़ एक आराबी थे, हज़रते उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अन्देशा हुवा कि कहीं नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह प्याला आराबी को ना दे दें इस लिए आप ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को दीजिए, तो आप ने वोह प्याला सीधी जानिब बैठे हुवे आराबी को दे दिया और इरशाद फ़रमाया : दाहना मुस्तहिक़ है फिर इस के बाद जो दाहने हो।[13]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1) پ26، محمد:15 (2) تفسیر طبری، محمد، تحت الآیۃ:15، 21/201 (3) روح البیان، 8/506- تفسیر قرطبی، محمد، تحت الآیۃ:15، 8/170 (4) پ14، النحل:66 (5) خزائن العرفان، النحل، تحت الآیۃ:66، ص510، 511 (6) تفسیر کبیر، النحل، تحت الآیۃ:66، 7/232 (7) بخاری، 1/555، حدیث:1661 (8) بخاری، 1/94، حدیث:211 (9) بخاری، 2/437، حدیث:3394 (10) دیکھیے: بخاری، 3/529، حدیث:5402 (11) بخاری، 4/234، حدیث:6452 ملخصاً (12) بخاری، 2/95، حدیث:2351 ملخصاً (13) بخاری، 2/95، حدیث:2352 ملتقطاً۔

नए लिखारी
(New Writers)

हज़रते इस्हाक़ عَلَیْہِ السَّلَام का क़ुरआनी तज़केरा

मुग़ल तौक़ीर अ़त्तारी
(दरजए राबेआ़ जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने हसन ख़तीब चिश्ती धोलका अह़मदाबाद)

अल्लाह पाक ने इन्सान की राहनुमाई के लिए और इन्सानों को शर से बचाने के लिए बहुत सारे अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को भेजा और येह सब बहुत ही बड़े मर्तबे वाले हैं। अल्लाह पाक के अम्बिया में से एक नबी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام भी हैं। इस्ह़ाक़ इ़ब्रानी ज़बान का एक लफ़्ज़ है। आप عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के छोटे बेटे हैं और आप की वालेदा का नाम ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا है।

आइए ! ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام के कुछ औसाफ़ मुलाह़ज़ा करते हैं :

1 विलादत से पेहले नबुव्वत की बिशारत :

आप के दुन्या में तशरीफ़ लाने से पेहले ही अल्लाह पाक ने आप की विलादत व नबुव्वत और सालेह़ीन में से होने की बिशारत आप के वालिद को दे दी थी, चुनान्चे इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ بَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِیًّا مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ(۱۱۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी इस्ह़ाक़ की, कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में। (پ23، الصّٰفّٰت:112)

2 ख़ुसूसी बरकत :

अल्लाह पाक ने आप عَلَیْہِ السَّلَام पर अपनी ख़ुसूसी बरकतें नाज़िल फ़रमाईं। इरशादे रब्बे करीम है : ﴿وَ بٰرَكْنَا عَلَیْهِ وَ عَلٰۤى اِسْحٰقَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्ह़ाक़ पर। (پ23، الصّٰفّٰت:113) यानी हम ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام पर दीनी और दुन्यवी हर त़रह़ की बरकत उतारी और ज़ाहिरी बरकत येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में कसरत की और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام की नस्ल से ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام तक बहुत से अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام मबऊ़स फ़रमाए।

(مدارک، 3/134، الصّٰفّٰت، تحت الآیۃ:113)

3 नबुव्वत, रेह़मत, बुलन्द सिद्क़ :

अल्लाह पाक ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को नबुव्वत, रेह़मत और सच्ची बुलन्द शोहरत अ़त़ा फ़रमाई, जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है : ﴿وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا(۸۴) وَ وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَ جَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا(۵۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने उसे इस्ह़ाक़ और याक़ूब

अ़ता किए और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला किया। और हम ने उन्हें अपनी रेहमत अ़ता की और उन के लिए सच्ची बुलन्द नामवरी रखी। (پ16، مریم:50،49)

4 अम्बिया ए किराम में मुमताज़ :

अल्लाह पाक ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को और आप के बेटे ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को इल्मी कुव्वतें अ़ता फ़रमाईं जिन की बिना पर उन्हें अल्लाह पाक की मारेफ़त और इ़बादात पर कुव्वत ह़ासिल हुई और अल्लाह पाक ने उन्हें यादे आख़ेरत के लिए चुन लिया। कुरआने मजीद में इरशादे रब्बे करीम है : ﴿وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَ الْاَبْصَارِ(۴۵) اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ(۴۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्ह़ाक़ और याक़ूब क़ुदरत और इ़ल्म वालों को। बेशक हम ने उन्हें एक ख़री बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वोह उस घर की याद है। (پ23، ص:46،45)

अल्लाह पाक हमें भी इ़ल्मी अ़मली कुव्वत अ़ता फ़रमाए और इ़बादात में लज़्ज़त अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بجاہ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वालेदा की फ़रमां बरदारी अह़ादीस की रौशनी में

मुह़म्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी
(मुदर्रिस जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने आले रसूल, वेरावल, गुजरात)

अल्लाह पाक ने कुरआने करीम में जहां बन्दों को अपनी इ़बादत करने का हुक्म दिया वहीं बहुत से मक़ामात पर वालिदैन के साथ ख़ैर ख़्वाही व हुस्ने सुलूक करने का हुक्म भी इरशाद फ़रमाया है। बच्चे की परवरिश में जहां बाप का अहम किरदार है वहीं मां का किरदार अपनी मिसाल आप है। मां अल्लाह पाक की ऐसी नेमत है जिस का कोई नेमुल बदल नहीं। औलाद पर अपनी वालेदा के हर उस हुक्म की बजा आवरी लाज़िम है जिस में शरीअ़त से टकराव ना आता हो। आइए वालेदा की फ़रमां बरदारी के बारे में चन्द अह़ादीस पर नज़र डालते हैं :

1 अच्छे बरताव का ज़ियादा ह़क़दार कौन :

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में मेरे अच्छे बरताव का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उस ने अ़र्ज़ की : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उस ने अ़र्ज़ की : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उस ने अ़र्ज़ की : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा बाप। (بخاری، 4/93، حدیث:5971)

इस ह़दीसे पाक के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से मालूम हुवा कि मां का ह़क़ बाप से तीन गुना ज़ियादा है क्यूंकि मां बच्चे पर तीन एह़सान करती है बाप एक एह़सान। पेट में रखना। जनना। परवरिश करना। बाप सिर्फ़ परवरिश ही करता है। बेटा मां–बाप दोनों की ख़िदमत करे मगर मुक़ाबले की सूरत में अदबो एह़तेराम बाप का ज़ियादा करे ख़िदमतो इन्आ़म मां की ज़ियादा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 515)

2 क्या मैं मां के ह़ुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ?

एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : एक राह में ऐसे गर्म पथ्थर थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता ! मैं अपनी मां को गर्दन पर सवार कर के छे मील तक ले गया हूं क्या मैं मां के ह़ुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके। (معجم صغیر، 1/93)

3 मर्द पर सब से बड़ा ह़क़ :

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा : औ़रत पर सब से बड़ा ह़क़ किस का है ? फ़रमाया : शौहर का। मैं ने पूछा : मर्द पर सब से बड़ा ह़क़ किस का है ? फ़रमाया : उस की मां का ह़क़। (مستدرک، 5/244، حدیث:7418)

4 बूढ़े वालिदैन जन्नत के ह़ुसूल का ज़रीआ़ :

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो, उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो, उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो। अ़र्ज़ की

गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस की ? फ़रमाया : जिस ने अपने वालिदैन में से एक या दोनों को बुढ़ापे की ह़ालत में पाया और फिर भी वोह जन्नत में दाख़िल ना हुवा। (مسلم، ص1060، حدیث:2551)

5 वालिदैन की ख़िदमत जंग है :

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं जंग करना चाहता हूं। आप ने पूछा : क्या तुम्हारे मां-बाप ज़िन्दा हैं ? अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी जंग उन की ख़िदमत में है। (بخاری، 2/310، حدیث:3004)

यक़ीनन इन अह़ादीसे मुबारका का मुत़ालआ़ करने से मालूम होता है कि मां का मक़ामो मर्तबा बहुत अर्फ़ओ आला है, लेकिन फ़ी ज़माना मुआ़शरे में ऐसे अफ़राद पाए जाते हैं जो मां के साथ बुरा बरताव करते हैं, गालियां देते हैं और त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यत देते हैं, औलाद को चाहिए कि वोह अपने वालिदैन की इत़ाअ़त करें और उन के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आएं।

अल्लाह करीम हमें अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुसलमानों के ह़ुक़ूक़

मुह़म्मद क़ैस अ़त्तारी
(दर्जए ख़ामेसा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई)

दुन्या में मज़ाहिब तो बहुत हैं, लेकिन मज़हबे इस्लाम की त़रह़ एक भी नहीं, येह सब मज़ाहिब में अपनी शान निराली रखता है, और मज़हबे इस्लाम वोह मज़हब है कि जिस में छोटा हो या बड़ा, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मालिक हो या मुलाज़िम, शौहर हो या बीवी, वालिदैन हों या औलाद, ब ह़ैसिय्यते मुसलमान हर एक के साथ ह़ुस्ने सुलूक करने और उन के मर्तबे के लेह़ाज़ से उन का एह़तेराम करने और उन के ह़ुक़ूक़ की बजा आवरी करने का ह़ुक्म दिया गया है और उन के दरमियान मह़ब्बत व उल्फ़त को बर क़रार रखने के लिए शरीअ़ते इस्लामिय्या ने उन के लिए वोह उसूलो ज़वाबित़ भी बनाए हैं कि जिन के ज़रीए उन के बाहमी मेल जोल और मह़ब्बत व उल्फ़त को क़ाइम रखा जा सकता है और उन उसूलो ज़वाबित़ को ह़ुक़ूक़ के नाम से जाना जाता है।

जैसे वालिदैन के औलाद पर ह़ुक़ूक़ और औलाद के वालिदैन पर, बीवी के शौहर पर ह़ुक़ूक़ और शौहर के बीवी पर ह़ुक़ूक़, मालिक के मुलाज़िम पर ह़ुक़ूक़ और मुलाज़िम के मालिक पर ह़ुक़ूक़, इसी त़रह़ ब ह़ैसिय्यते मुसलमान होने के एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर भी कुछ ह़ुक़ूक़ होते हैं। जिस त़रह़ दीगर रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ की बजा आवरी करना ज़रूरी है, इसी त़रह़ एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर जो ह़ुक़ूक़ बनते हैं उन की बजा आवरी करना भी बेह़द ज़रूरी है, मज़हबे इस्लाम भी हमें इस का दर्स देता है।

आइए मैं आप को कुछ वोह ह़ुक़ूक़ बताता हूं जो एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर होते हैं :

1 मुलाक़ात के वक़्त हर मुसलमान अपने मुसलमान भाई को सलाम करे और मर्द मर्द से और औ़रत औ़रत से मुसाफ़ह़ा करे तो येह बहुत ही अच्छा और बेहतरीन अ़मल है 2 मुसलमानों के सलाम का जवाब दे 3 मुसलमान छींक कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो یَرْحَمُکَ اللّٰہ केह कर उस का जवाब दे 4 कोई मुसलमान बीमार हो जाए तो उस की बीमार पुर्सी करे 5 अपनी त़ाक़त भर हर मुसलमान की ख़ैरख़्वाही और उस की मदद करे 6 मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा और उस की तदफ़ीन में शरीक हो 7 हर मुसलमान का मुसलमान होने की ह़ैसिय्यत से एज़ाज़ो इकराम करे 8 कोई मुसलमान दावत दे तो उस की दावत को क़बूल करे 9 मुसलमान के ऐ़बों की पर्दा पोशी करे और उन को इख़्लास के साथ उन ऐ़बों से बाज़ रेहने की नसीह़त करे 10 अगर किसी बात में किसी मुसलमान से रन्जिश हो जाए तो तीन दिन से ज़ियादा उस से सलाम व कलाम बन्द ना रखे 11 मुसलमानों में झगड़ा हो जाए और सुल्ह़ करवा सकता हो तो सुल्ह़ करा दे 12 किसी मुसलमान को जानी या माली नुक़्सान ना पहुंचाए और ना ही किसी मुसलमान की

आबरू रेज़ी करे 13 अपने से बड़ों का अदबो एह़तेराम और अपने से छोटों पर रेह़म व शफ़्क़त करता रहे 14 किसी मुसलमान को लोगों के सामने ज़लीलो रुस्वा ना करे 15 किसी मुसलमान की ग़ीबत ना करे और ना ही किसी पर बोहतान लगाए।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम पर जो भी मुसलमानों के हुक़ूक़ बनते हैं उन की अच्छे से अदाएगी करनी चाहिए कहीं ऐसा ना हो कि मुसलमानों के हुक़ूक़ में कोताही करने के सबब हमें आख़ेरत में अ़ज़ाब का सामना करना पड़े।

अल्लाह पाक हमें तमाम मुसलमानों के हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेह़रीरी मुक़ाबले के लिए मौसूल 63 मज़ामीन के मोअल्लिफ़ीन

जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई : मुह़म्मद मुज़म्मिल अ़त़ारी, अयाज़ अह़मद अ़त़ारी, इसराफ़ील अ़त़ारी, ग़ुलाम जीलानी अ़त़ारी, मुह़म्मद शमीम रज़ा अ़त़ारी, समीर, मुह़म्मद मक़्सूद आ़लम क़ादरी, मुह़म्मद अफ़ज़ल अ़त़ारी, मुह़म्मद अरशद रज़ा, ग़ुलाम ख़्वाजा, मुह़म्मद कैफ़ अ़त़ारी, मुह़म्मद नासिर नूरी, मुह़म्मद मुनीरुल इस्लाम, मुह़म्मद रियाज़ुद्दीन, साह़िल अ़त़ारी, शमशीर, मुह़म्मद सालेह़ अ़त़ारी, शाहरुख़ अ़त़ारी, मुह़म्मद त़ारिक़, मुह़म्मद क़ैस अ़त़ारी, अफ़रोज़ अ़त़ारी, मुह़म्मद आ़रिफ़ ख़ान, मुह़म्मद अ़याज़, मुह़म्मद ह़सनैन इद्रीसी क़ादरी, मुह़म्मद शेहबाज़ नूरी, मुह़म्मद नूर ऐन रज़ा, मुह़म्मद शाबान अ़त़ारी, शाहिद अ़त़ारी, मुह़म्मद शेहबाज़ अ़त़ारी, तौह़ीद रज़ा मदनी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ह़सन ख़त़ीब चिश्ती धोलका अह़मदाबाद :** मुजाहिद अ़त़ारी, मुग़ल तौक़ीर अ़त़ारी, फ़ैज़ान अ़त़ारी, अमान अ़त़ारी, अस्लम अ़त़ारी, इरशाद अ़त़ारी, अरबाज़ अ़त़ारी, तुफ़ैल अ़त़ारी, कैफ़ अ़त़ारी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त़्तार, नागपुर :** मुह़म्मद अज़हर रज़ा, साजिद अन्सारी, वसीम अकरम, मुह़म्मद बिलाल क़ादरी, अबुल ह़ामिद इमरान रज़ा बनारसी, मुह़म्मद रमज़ान अ़ली, मुह़म्मद मेहताब रज़ा। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने आले रसूल वेरावल :** मेराज अ़त़ारी, मुह़म्मद बिलाल रज़ा अ़त़ारी, शाकिर अ़त़ारी, अ़क़ील अ़त़ारी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम अह़मद रज़ा ह़ैदराबाद :** ग़ुलाम त़ाहा, समीउ़ल्लाह, मुह़म्मद नाज़िम अ़त़ारी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया अह़मदाबाद :** मुह़म्मद आ़रिफ़ नागोरी, मुह़म्मद अज़हरुद्दीन अ़त़ारी। **मुख़्तलिफ़ जामेआ़त :** मुह़म्मद कामरान रज़ा (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त़ा ए अ़त़्तार जूहापुरा अह़मदाबाद), मुह़म्मद आ़सिम रज़ा मिस्बाह़ी (जामेआ़ अशरफ़िय्या मुबारक पुर आज़म गढ़), मुह़म्मद साजिद (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सदरुश्शरीआ़ बनारस), अह़मद रज़ा ख़ान (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़त्ह़ शाह वली हुबली कर्नाटक)।

उ़नवानात बराए मई 2024 ईसवी

01 ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी सिफ़ात 02 ग़ुस्से की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में 03 ह़रमे मक्का के हुक़ूक़

मज़मून जम्अ़ करवाने की आख़री तारीख़ : 20 मार्च 2024 ईसवी

मज़मून लिखने में मदद (Help) के लिए इस नम्बर पर राब्त़ा करें

+91 89782 62692

mazmoonnigarihind@gmail.com

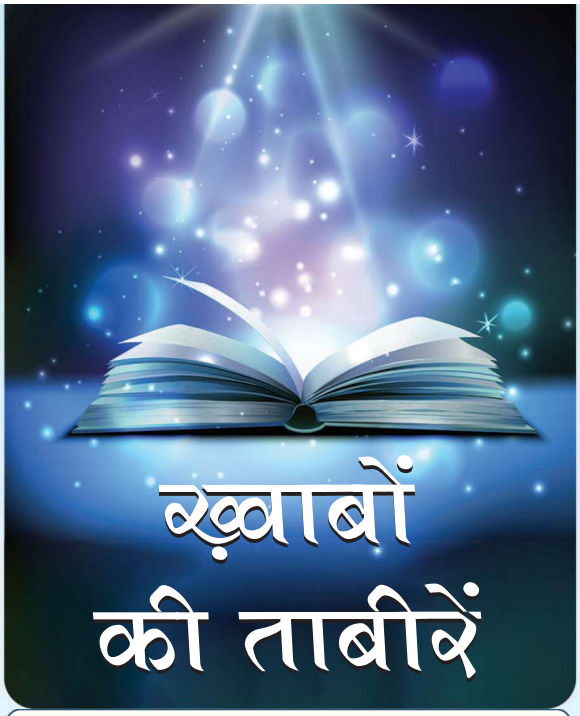

ख़्वाबों की ताबीरें

क़ारेईन की त़रफ़ से मौसूल होने वाले चन्द मुन्तख़ब ख़्वाबों की ताबीरें

ख़्वाब एक शख़्स जेल में क़ैद है और घर वाली ने ख़्वाब में देखा कि वोह जेल से रिहा हो कर घर आया है, दो बार ऐसा ख़्वाब देखा है, दूसरी बार वाइट सूट पहेना होता है, इस ख़्वाब की ताबीर बता दें।

ताबीर : अल्लाह पाक उन्हें रिहाई अ़त़ा फ़रमाए। जब किसी का क़रीबी आज़माइश में हो तो उस के छुटकारे का ख़याल दिल में रेहता है। और बाज़ औक़ात वोही ख़याल ख़्वाब की शक्ल में भी नज़र आ जाता है। अल्लाह पाक की ज़ात से अच्छी उम्मीद रखें और दुआ़ भी करती रहें।

ख़्वाब मेरे अब्बू को वफ़ात पाए 5 साल हो गए, अब्बू जी मेरी बहेन के ख़्वाब में आए हैं और मेरी बहेन को केह रहे हैं कि मैं उ़मरह करने जा रहा हूं, मेरे साथ कुछ और भी लोग हैं। बराहे मेहरबानी इस ख़्वाब की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : मुर्दे को अच्छी ह़ालत में देखना अच्छा है। اِنْ شَآءَاللّٰه आप के अब्बू आ़फ़ियत में होंगे अलबत्ता उन के लिए दुआ़ और ईसाले सवाब करते रहें।

ख़्वाब किसी क़रीबी रिश्तेदार की कुछ अ़र्से क़ब्ल ही वफ़ात हुई है, उन की ज़ौजा अभी इद्दत में हैं, पेहले कुछ मरतबा उन को या किसी और को वोह ख़्वाब में दिखे तो अच्छी ह़ालत में थे लेकिन इस के बाद दो से तीन बार उन की ज़ौजा ने देखा कि एक बार उन के सर में दर्द था, एक बार देखा कि वोह ट्रेन में हैं और उन का एक्सिडेन्ट होते होते बच गया लेकिन उन को कुछ चोटें आई हैं इसी त़रह़ एक बार और ऐसे ही देखा। और एक बार देखा कि उन्हों ने एह़राम बान्धा हुवा था। इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : फ़ौत शुदा को एह़राम की ह़ालत में देखना बहुत मुबारक है, अलबत्ता दर्दे सर होना अच्छा नहीं। येह ख़्वाब उस मुर्दे की अच्छी बुरी कैफ़िय्यत को बयान करता है। अल्लाह पाक से हुस्ने ज़न रखें कि वोह अगर तक्लीफ़ में थे तो अब आ़फ़िय्यत में होंगे। अलबत्ता उन के लिए दुआ़ ए मग़फ़ेरत ज़रूर करें और ईसाले सवाब भी करती रहें।

ख़्वाब मैं ने एक ख़्वाब देखा कि मैं और मेरे साथ घर का एक फ़र्द गाड़ी पर सफ़र कर रहे हैं ? एक मक़ाम पर ड्राईवर ने ड्राईविंग अपने कन्डेक्टर को दी, उस के थोड़ी देर बाद गाड़ी उन से उलट गई, लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम सब बच गए। इस की ताबीर बता दें।

ताबीर : ऐसा ख़्वाब देखने के बाद ज़रूरी नहीं कि ह़ादिसा पेश आए। बाज़ औक़ात ऐसे ख़्वाब शैत़ान के अ़मल की वज्ह से भी नज़र आ जाते हैं। अलबत्ता एह़तियात़ ज़रूर करनी चाहिए। किसी सफ़र पर रवाना हों तो सफ़र के तक़ाज़े पूरे करें, सफ़र की दुआ़ पढ़ें और सफ़र से पेहले राहे ख़ुदा में सदक़ा करें اِنْ شَآءَاللّٰه ह़ादिसात से ह़िफ़ाज़त होगी।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे दादा जिन के इन्तेक़ाल को 2 साल हो गए हैं, केह रहे हैं कि अल्लाह पाक को भी (مَعَاذَاللّٰه) मौत आ गई है, और अल्लाह को किस ने बनाया ? मैं ने कहा कि ऐसे नहीं बोलो, कितनी ग़लत़ बात कर रहे हो, येह ह़राम व कुफ़्र है। इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : यक़ीनन येह जुमले ज़िन्दगी में कहे जाएं तो कुफ़्र ही हैं। अलबत्ता ख़्वाब में किसी के बारे में देखना अलग बात है। जिस मुसलमान का इन्तेक़ाल इस्लाम पर हुवा तो उसे मुसलमान समझना ज़रूरी है और इस त़रह़ के ख़्वाब की बुन्याद पर किसी फ़ौत शुदा मुसलमान के बारे में बद गुमानी करना जाइज़ नहीं। याद रहे ! बाज़ औक़ात शैत़ान भी ख़्वाब में आ कर बद गुमानियां पैदा करने की कोशिश करता है। लेहाज़ा इस ख़्वाब की त़रफ़ ज़ियादा तवज्जोह ना करें अलबत्ता अपने फ़ौत शुदा दादा के बारे में मग़फ़ेरत की दुआ़ और ईसाले सवाब ज़रूर करें।

ख़्वाब ख़्वाब में बदबूदार पानी देखना कैसा है ?

ताबीर : बुरा है। अल्लाह पाक की बारगाह में आफ़िय्यत की दुआ करें।

ख़्वाब मेरी अम्मी के इन्तेक़ाल को तक़रीबन 3 साल हो चुके हैं, रात को मैं ने ख़्वाब में देखा कि हमारी फ़ेमेली के बच्चे पानी में गिर रहे हैं और अम्मी उन को ऐसे बचा रही हैं जैसे कोई परिन्दा अपने बच्चों को बचाता है, इस के बाद अम्मी फ़ौत हो गईं और मैं बहुत रोई और इतना रोई कि जब जागी तो आंखों में आंसू थे और मेरे रोने की आवाज़ मेरे बच्चों ने भी सुनी कि आप सोते हुवे रो रही थीं। इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : अल्लाह पाक आप की वालेदा की मग़फ़ेरत फ़रमाए। क़रीबी रिश्तेदारों के दुन्या से चले जाने के बाद इस तरह के ख़्वाब नज़र आना एक मामूल की बात है। चूंकि वालेदा से बच्चों का एक गेहरा तअ़ल्लुक़ होता है इस लिए भी वोह ख़्वाब में नज़र आते हैं। अलबत्ता अपनी वालेदा के लिए दुआ और ईसाले सवाब की कसरत करती रहें।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में रंग बिरंगे तोते उड़ते हुवे देखे हैं, बरा ए मेहरबानी इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : ख़्वाब में तोते का देखना कई तरह से है, कभी येह लड़के और कभी येह औरत की अ़लामत होता है। ख़्वाब देखने वाले की कैफ़िय्यत और हालत के मुख़्तलिफ़ होने से तोते का देखना मुख़्तलिफ़ हो सकता है।

ख़्वाब ख़्वाब में आस्मान पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ लिखा हुवा देखना कैसा है ?

ताबीर : अच्छा है, अल्लाह से महब्बत की अ़लामत है। ख़्वाब देखने वाले को चाहिए कि कसरत से ज़िक्रुल्लाह करे कि इस की बरकतें हासिल होंगी।

ख़्वाब मैं ने आज तक़रीबन 4 बजे के बाद ख़्वाब देखा कि मैं चारपाई पर अपने भाई के साथ बैठी हूं, वोह मुझ से केहता है कि तुम्हें बहुत अच्छा तोहफ़ा मिलने वाला है, मैं ने कहा : कौन सा ? केहता है अभी चाहती हो ? तो मैं ने कहा : जी। मेरे भाई ने कहा : ठीक है, मैं कलिमा पढ़ने लग जाती हूं, अभी आधा कलिमा पढ़ा था कि मैं उठ गई और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं मरने वाली हूं।

ताबीर : इस तरह के ख़्वाब नज़र आने से परेशान नहीं होना चाहिए, मुख़्तलिफ़ ख़यालात ऐसे ख़्वाब का बाइस होते हैं, अपनी तसल्ली के लिए अल्लाह पाक की राह में कुछ सदक़ा कर दें और दराज़ी ए उ़म्र बिल ख़ैर की दिआ करें।

ख़्वाब अगर शौहर को ख़्वाब आए कि उस की बीवी के पीछे चुड़ैल भाग रही है और शौहर बीवी को उस से बचा रहा है। और ऐसे ही ख़्वाब का उलट ख़्वाब बीवी को आए तो इस की क्या ताबीर होगी ?

ताबीर : फ़ुज़ूल ख़्वाब है इस की तरफ़ तवज्जोह ना फ़रमाएं, कभी इस तरह के ख़्वाब अपने ही परेशान ख़यालात की वज्ह से नज़र आ जाते हैं। परेशान ना हों, अल्लाह पाक की बारगाह में आफ़िय्यत की दुआ करें।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं क़ब्रस्तान गया, वहां एक क़ब्र खुली और उस में से एक बाबा निकले जो मुर्दा थे, लेकिन उन की आंखें खुली हुई थीं, फिर वोह बात करने लगे तो मैं उन के पास गया और मैं ने उन से कहा कि आप मेरे लिए दुआ करेंगे ? उन्हों ने कहा : हां। मैं ने कहा : मेरे घर वाले ह़ज व उ़मराह करें, उन्हों ने दुआ की। फिर उन्हों ने कहा और ? मैं ने कहा : मैं आ़लिम बन जाऊं तो उन्हों ने दुआ कर दी। इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : बाबा से आप की मुराद क्या है वाज़ेह़ नहीं। अलबत्ता ह़ज करना और आ़लिमे दीन बनना यक़ीनन बहुत आला और फ़ज़ीलत वाले काम हैं, इन के लिए अस्बाब इख़्तियार करें और अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ भी करते रहें।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ार देखा, उस के हर तरफ़ पानी ही पानी था जैसे सैलाब आया हुवा हो, लेकिन लोग उस में ख़ुशी ख़ुशी घूम रहे थे जैसे मेला लगा हुवा हो, इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : अच्छा ख़्वाब है, बुज़ुर्गों की बरकत मिलने की अ़लामत है।

ख़्वाब मैं ने इस हफ़्ते तीन बार येह ख़्वाब देखा कि मेरी शादी हो रही है, इस की ताबीर क्या होगी बता दीजिए।

ताबीर : जिस की शादी ना हुई हो उस के लिए अ़न क़रीब निकाह़ करने की ख़बर है। और अक्सर शादी शुदा के लिए कोई ख़ुशी की बात पहुंचने की अ़लामत है।

क्या आप अपने ख़्वाब की ताबीर जानना चाहते हैं ?

ख़्वाब की तफ़्सीलात बज़रीए डाक माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के पेहले सफ़्हे पर दिए गए एड्रेस पर भेजिए या इस नम्बर पर वोट्सएप कीजिए। +918978262692

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

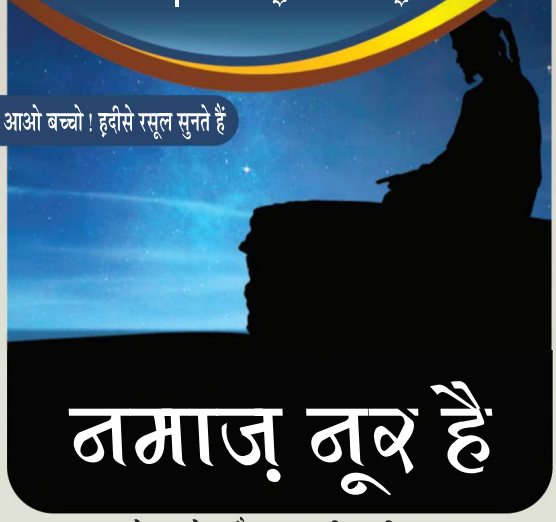

नमाज़ नूर है

हमारे प्यारे और आख़री नबी हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया اَلصَّلَاةُ نُوْرُ الْمُؤْمِنِ यानी नमाज़ मोमिन का नूर है। (ابن ماجه، 4/473، حدیث:4210)

नमाज़ क़ब्र और क़ियामत के अन्धेरे में नूर यानी रौशनी होगी। जैसे अन्धेरे में रौशनी दुरुस्त रास्ते की राहनुमाई करती है ऐसे ही नमाज़ सीधे रास्ते की तरफ़ राहनुमाई करती और बुराई से बचाती है। (مرقاة، 2/8، تحت الحدیث:281)

नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ मुसलमानों की एक अहम इबादत है, नमाज़ तमाम मख़्लूक़ात की इबादात का मज़मूआ है, मुसलमानों पर एक दिन में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, इस फ़र्ज़ की अदाएगी में बहुत सारी बरकतें और रेहमतें भी हैं, नमाज़ पढ़ने वाले को नमाज़ी केहते हैं।

नमाज़ पढ़ने वाले से अल्लाह पाक ख़ुश होता है, नमाज़ से परेशानियां दूर होती हैं, नमाज़ी अल्लाह पाक की रेहमत में होता है, नमाज़ी के चेहरे पर ताज़गी होती है, नमाज़ अल्लाह के अज़ाब से बचाती और जन्नत में ले जाने का सबब बनती है।

अच्छे बच्चो ! रमज़ान का मुबारक महीना जारी है, इस में नेकियों का सवाब बढ़ जाता है तो आप को भी चाहिए कि इस मुबारक महीने में रोज़े रखने के साथ साथ नमाज़ों की भी पाबन्दी करते रहें और इस महीने के बाद भी नमाज़ का मामूल बनाएं, कैसे भी हालात हों, आप किसी भी काम में मसरूफ़ हों जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो नमाज़ की तैयारी शुरूअ कर दें।

अल्लाह पाक हमें नमाज़ों की पाबन्दी करते रेहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ق	ز	ہ	ہ	ن	ی	ز	و	ر
ع	ف	ا	ق	س	د	ا	م	ل
ث	ز	د	ی	ف	ا	ع	ب	ع
ز	ل	ی	ز	ن	ت	ک	ر	ب
ف	چ	ن	ا	ق	ر	ف	ق	خ
ر	ل	س	ت	ر	ف	غ	م	ش
ح	د	ی	ز	ن	د	ل	ح	ف
م	ا	ہ	ف	و	ا	ع	ق	ا
ر	ک	ذ	م	ر	م	ث	ع	ء

हुरूफ़ मिलाइए !

इस्लामी साल का नवां महीना **"रमज़ानुल मुबारक"** है, इस महीने को अल्लाह पाक ने बहुत बरकतों वाला बनाया है। इस महीने में जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। इस महीने में अल्लाह का पाक कलाम क़ुरआने मजीद नाज़िल हुवा। क़ुरआने मजीद अल्लाह पाक की वोह अज़ीम किताब है जिस का सिर्फ़ एक हर्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियां मिलती हैं। (ترمذی، 4/417، حدیث: 2919) तिलावते क़ुरआन करने वालों पर इत्मीनान व सुकून नाज़िल होता है, रेहमत उन्हें ढांप लेती है, फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह पाक उन का ज़िक्र फ़रिश्तों के सामने फ़रमाता है। (مسلم، ص1110، حدیث:6853)

प्यारे बच्चो ! क़ुरआने पाक के बहुत सारे नाम हैं। आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर क़ुरआन के पांच नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में **"फ़ुरक़ान"** तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 नाम येह हैं :

1 ذکر 2 تنزیل 3 شفاء 4 ہادی 5 نور۔

मुबारक हाथ की बरकत से इस्लाम मिल गया

प्यारे बच्चो ! सब से आख़री नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत के जहां मुख़्तलिफ़ हिस्सों मसलन आप के अख़्लाक़, नर्मी, दुआओं, प्यारी सूरत, मुआ़फ़ करने की आ़दत, दीन क़बूल करने की दावत व नसीहत वग़ैरा से लोगों को हिदायत मिलती वहीं आप के मोजिज़े भी लोगों की राहनुमाई का ज़रीआ बनते हैं, जैसा कि ग़ज़्वा ए हुनैन से वापसी पर एक जगह हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के लिए क़ियाम किया तो वहां एक मोजिज़ा ज़ाहिर हुवा, आइए सुनते हैं :

आप को पता है नां हमारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ कितनी पसन्द थी, सफ़र हो या घर किसी भी हालत में नमाज़ छोड़ना गवारा ना था तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूरा क़ाफ़िला नमाज़ के लिए रोका, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मोअज़्ज़िन ने अज़ान दी । हुवा यूं कि पास ही कुछ लड़के थे उन्हों ने अज़ान सुनी तो मज़ाक़ में उस की नक़्ल उतारने लगे और नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक भी उन की आवाज़ पहुंच गई, आप ने सब लड़कों को बुलाया और पूछा कि तुम में से सब से बुलन्द आवाज़ में अभी अज़ान किस ने दी थी, सभी ने एक लड़के की त़रफ़ इशारा किया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे रोक कर बक़िय्या सब लड़कों को भेज दिया, फिर उसे अपने सामने खड़ा कर के अज़ान देने का कहा और उसे ख़ुद ही अज़ान के कलेमात बताते रहे, उस लड़के का केहना है कि पेहले तो मुझे हुज़ूरे अकरम और अज़ान से ज़ियादा नापसन्द कुछ ना था मगर जब अज़ान के बाद आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे दुआ दी और एक थेली भी जिस में कुछ चांदी थी और फिर अपना मुबारक हाथ मेरी पेशानी और सीने वग़ैरा पर फेरा तो मेरे दिल में जो नापसन्दीदगी थी ग़ाइब हो गई और मेरा दिल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत से भर गया, फिर मैं ने मक्के में अज़ान की इजाज़त चाही तो इजाज़त अ़ता फ़रमा दी ।

(دیکھئے: ابن ماجہ، 1/392، حدیث:708۔ مسند امام احمد، 24/97، حدیث:15380)

बच्चो ! येह हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मोजिज़ा था कि सीने वग़ैरा पर हाथ फेर कर फ़ौरन सारी नफ़रत को महब्बत में बदल दिया । इस वाक़िए से चन्द बातें मालूम होती हैं ।

- हर हाल में नमाज़ की पाबन्दी करनी चाहिए
- बड़ों का अदब और उन की अच्छी बातों पर अ़मल करना चाहिए ।
- बुरा इन्सान अच्छों की सोहबत की वज्ह से अच्छा बन जाता है ।
- किसी की इस्लाह़ करनी हो तो सख़्ती नहीं करनी चाहिए, नर्मी से इस्लाह़ की बात बहुत जल्द असर करती है ।
- किसी के अन्दर अच्छी ख़ुसूसिय्यत व सलाहिय्यत हो तो हौसला अफ़्ज़ाई करनी चाहिए ।
- जिस की जो क़ाबिलिय्यत हो उस से वोह काम ले लेना चाहिए ।
- मज़ाक़ में किसी की नक़्ल उतारना बुरी बात है, अलबत्ता अच्छों की त़रह़ बनने के लिए उन की नक़्ल करना अच्छी बात है जैसे अच्छी तिलावत करने या दिल जमई से नमाज़ पढ़ने वाले की त़रह़ अच्छी तिलावत करना और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ना अच्छी नक़्ल है ।
- अज़ान, नमाज़, इक़ामत, ख़ुत़्बा वग़ैरा इस्लाम की अ़लामत यानी शआइरे इस्लाम हैं, उन का हरगिज़ हरगिज़ मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिए ।

नन्हे मियां की कहानी

मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमान को ख़ुश आमदीद

आज इतवार छुट्टी का दिन था, नन्हे मियां नमाज़े फ़ज्र पढ़ कर देर तक सोते रहे, आंख खुली तो ऐसा लगा कि घर में शोर हो रहा है और बातें करने की हल्की हल्की आवाज़ें भी आ रही हैं, परेशान हो कर बाहर निकले तो देखा कि अम्मीजान सोफ़ा हटा कर उस के पीछे से सफ़ाई कर रही हैं, नन्हे मियां ने ग़ौर से देखा तो और भी सामान अपनी जगह से हटा हुवा नज़र आया, अब नन्हे मियां की समझ में आया कि जिस शोर की वज्ह से उन की आंख खुली थी वोह सामान इधर से उधर करने का शोर था। नन्हे मियां नाश्ते से फ़ारिग़ हो कर सीधे दादीजान के कमरे की जानिब बढ़े।

दादीजान ! येह आज सुब्ह़ सुब्ह़ घर में क्या हो रहा है ?

दादीजान : भई ! सफ़ाई हो रही है जो अच्छी बात है।

नन्हे मियां : दादीजान ! सफ़ाई तो रोज़ाना होती है फिर आज इतनी ज़ियादा क्यूं हो रही है, क्या घर में कोई दावत है और मेहमान आने वाले हैं ?

दादीजान : जी हां ! ऐसा ही है घर में एक मेहमान आने वाला है उन के वेलकम की तैयारी हो रही है।

नन्हे मियां : वोह कौन हैं ? मुझे तो किसी ने कुछ नहीं बताया।

दादीजान : बस ! नन्हे मियां कुछ मेहमान ख़ास होते हैं, हमें ख़ुद ख़याल रखना पड़ता है कि वोह मेहमान हमारे घर कब आएगा।

नन्हे मियां : दादी अब तो बता दें वोह मेहमान कौन है ? मुझे बेचैनी हो रही है।

दादीजान : प्यारे नन्हे मियां ! वोह प्यारा मेहमान **"रमज़ान का बा बरकत महीना है"** जो दो या तीन दिन बाद हमारे पास आने वाला है, रमज़ानुल मुबारक का नाम सुनते ही नन्हे मियां ख़ुशी से उछल पड़े और केहने लगे : आहा ! अब तो ख़ूब मज़ा आएगा, सेहरी और इफ़्तारी के वक़्त घर में कैसी रौनक़ लगी होगी, मज़े मज़े के खाने मिलेंगे, लेकिन दादी येह तो बताइए ! रमज़ान आ रहा है तो हम अपने घर में सफ़ाई क्यूं कर रहे हैं ?

दादीजान : मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : उस महीने को ख़ुश आमदीद जो हमें पाक करने वाला है। (फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 35) जब येह महीना हमें पाको साफ़ करने वाला है तो हम इस के आने से पेहले अपने घर को साफ़ सुथरा कर लेते हैं ताकि इस प्यारे महीने में ज़ियादा तवज्जोह के साथ इबादत और तिलावत करें और ख़ुश दिली के साथ रोज़े रखें। और येह देखो मेरे हाथ में कौन सी किताब है ? येह हमारे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादरी साहिब की किताब **"फ़ैज़ाने रमज़ान"** है, इस में अभी अभी एक ह़दीसे पाक पढ़ रही थी, आप को भी सुना देती हूं, हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रमज़ान आ गया बरकत वाला महीना है, अल्लाह पाक ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किए, इस में आस्मान के दरवाज़े खोले जाते और जहन्नम के दरवाज़े बन्द किए जाते हैं, और इस में मर्दूद शयात़ीन क़ैद कर दिए जाते हैं, इस में एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर। जो इस की भलाई से मेह़रूम रहा वोह बिलकुल ही मेह़रूम रहा।

(نسائی، ص355، حدیث:2103) (फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 56)

एक दूसरी जगह येह ह़दीसे पाक लिखी है : बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक रमज़ान के लिए सजाई जाती है।

(شعب الایمان، 3/312، حدیث:3633, फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 31)

नन्हे मियां ह़ैरत से पूछने लगे : क्या जन्नत भी सजाई जाती है ?

दादीजान : जी हां नन्हे मियां ! ऐसा ही है ईदुल फ़ित्र का चांद नज़र आते ही, अगले रमज़ान के लिए जन्नत की सजावट शुरूअ़ हो जाती है और साल भर तक फ़रिश्ते उसे सजाते रेहते हैं जन्नत ख़ुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए, फिर सजाने वाले फ़रिश्ते हों, तो कैसी सजाई जाती होगी ? उस की सजावट के बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते। दादी की बात ख़त्म हुई तो नन्हे मियां केहने लगे : ठीक है दादी ! तो फिर मैं अभी अम्मी के साथ मिल कर उन की मदद करता हूं ताकि हम इतने प्यारे मेहमान को ख़ूब अच्छी त़रह़ से वेलकम कहें, दादी ने प्यार से नन्हे मियां को सीने से लगाया और कहा : जाओ बेटा ! येह तो बहुत अच्छी बात है। नन्हे मियां जाते जाते अपनी प्यारी आवाज़ में येह पढ़ने लगे :

मरह़बा सद मरह़बा फिर आमदे रमज़ान है
खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है
आ गया रमज़ां इबादत पर कमर अब बान्ध लो
फ़ैज़ ले लो जल्द कि दिन तीस का मेहमान है
या इलाही तू मदीने में कभी रमज़ां दिखा
मुद्दतों से दिल में येह अ़त्तार के अरमान है

रमज़ान की बहारें और मुसलमान ख़वातीन

इस्लामी साल का नवां महीना अपनी मिसाल आप है। जो हर मुसलमान की ज़िन्दगी पर मुख़्तलिफ़ पेहलूओं से असर अन्दाज़ होता है। यूं तो अल्लाह पाक की रेहमतें सारा साल हम गुनहगारों पर रेहती हैं लेकिन इस माह में जो रेहमतों और बरकतों की छमाछम बरसात होती है वोह सब महीनों से जुदा है। येह अहम महीना माहे रमज़ान है जिस की आमद से जहां ईमान को पुख़्तगी, रूह को ताज़गी और जिस्म को सेहत मिलती है वहीं रोज़ मर्रा के मामूलात भी बदल जाते हैं। इस्लामी तारीख़ों से बिलकुल नाबलद रेहने वालों को भी इस की आमद का इल्म हो जाता है। मुसलमान घरानों की रूटीन बदल जाती है। शामो सेहर के अन्दाज़ बदल जाते हैं। इबादात की तरफ़ रग़बत पैदा होती है। मस्जिदों के साथ साथ घरों से भी तिलावते कुरआन की आवाज़ें ईमान को फ़रहत बख़्शती हैं। तरावीह, सदक़ा ओ ख़ैरात, दुआ व अज़्कार और दीगर आमाले सालेहा का एहतेमाम होने लगता है। मर्द और ख़वातीन सब ही अपने अपने तौर पर इस माहे मुबारक का इस्तिक़बाल करते और तोशए आख़ेरत जम्अ करने में लग जाते हैं। लेकिन येह भी देखा गया है कि बाज़ घरानों में ख़वातीन इस माहे मुबारक में भी इबादत के लिए इतनी एक्टिव (Active) नहीं होतीं बल्कि उन की तवज्जोह दूसरे घरेलू कामों की तरफ़ और ज़ियादा हो जाती है। रमज़ान में सेहरी और इफ़्तार की तैयारियों को ही वोह अपने लिए काफ़ी समझती हैं और इसी में मश्ग़ूल रेहती हैं।

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सेहर व इफ़्तार के वक़्त दस्तर ख़्वान की रौनक़ों को बढ़ाने के जज़्बे के साथ साथ दीगर इबादात की तरफ़ भी रग़बत करनी चाहिए। ख़वातीन पर अन्वाओ अक़्साम के खाने बनाने की एक धुन सवार हो जाती है। मेहनत, तवज्जोह और लगन से दस्तर ख़्वान को स्पेश्यल बनाने के लिए जितना वक़्त दिया जाता है उस से कहीं ज़ियादा इस बात की ज़रूरत है कि इस माह में सवाबे आख़ेरत दिलाने वाले कामों में लग कर अपने नामा ए आमाल को संवारा जाए।

इसी तरह घर के दीगर अफ़राद को भी ख़याल करना चाहिए कि जो सेहरी या इफ़्तारी में मन पसन्द चीज़ ना मिलने या ताख़ीर हो जाने पर ख़वातीन को कोसना शुरूअ कर देते हैं।

ख़वातीन हज़रात ! सभी को याद रखना चाहिए कि इस माह की आमद का मक़्सद कुरआने मजीद में यूं बयान किया गया है : ﴿ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۱۸۳) ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे तुम से पेहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ ।[1]

प्यारी इस्लामी बहेनो ! रोज़े का मक़्सद तक़्वा ओ परहेज़गारी का हुसूल है । रोज़े में चूंकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और उसे खाने पीने की हलाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की मश्क़ होती है जिस से ज़ब्ते नफ़्स और बुरे कामों से बचने पर क़ुव्वत हासिल होती है और यही ज़ब्ते नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए आदमी गुनाहों से रुकता है । अगर हम येह मक़्सद हासिल करने में कामयाब नहीं हैं तो फिर इस माहे मुबारक की आमद के फ़ैज़ान की कैसे मुस्तहिक़ बन सकेंगी !

बाज़ औक़ात घर के कामों में मसरूफ़िय्यत के उज़्र की वज्ह से नमाज़ों को वक़्त पर अदा ना करने और उन्हें क़ज़ा करने के संगीन गुनाह को भी ख़वातीन मामूली समझती हैं । कामों की अफ़रा तफ़री में कभी नमाज़ को मकरूह वक़्त में अदा करती हैं । हालांकि तारीख़े इस्लाम की बुज़ुर्ग ख़वातीन की सीरत देखी जाए तो मुआमला बिलकुल बरअक्स नज़र आता है, चुनान्चे उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में आता है कि आप रमज़ानुल मुबारक में तरावीह का ख़ास एहतेमाम फ़रमातीं और रमज़ान तो रमज़ान इस के इलावा भी अक्सर रोज़े रखा करतीं ।[2] लेहाज़ा रमज़ान शरीफ़ में मामूलात को इस तरह तरतीब देना चाहिए कि नमाज़ और दीगर इबादात को ब हुस्नो ख़ूबी बजा लाने के साथ साथ सेहर और इफ़्तार के बा बरकत लम्हात में हम भी अपने प्यारे रब्बे करीम की बारगाह में दुआएं मांगती रहें । येह बहुत क़ीमती लम्हात होते हैं और रोज़ेदार की इफ़्तार के वक़्त मांगी गई दुआ रद नहीं होती । अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक रोज़ादार के लिए इफ़्तार के वक़्त एक ऐसी दुआ होती है जो रद नहीं की जाती ।[3]

ब वक़्ते इफ़्तार दुआ करने वाले की दुआ की क़बूलिय्यत की बिशारत है और हदीसे पाक में है कि आस्मान के दरवाज़े उस के लिए खुल जाते हैं और अल्लाह पाक फ़रमाता है : मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ देर बाद ।[4]

ख़वातीन चाहें तो घरेलू मसरूफ़िय्यात में से अपने लिए वक़्त निकाल सकती हैं येह ना मुमकिन या इतना मुश्किल काम नहीं है दर अस्ल हमें इस बात का एहसास अपने अन्दर पैदा करना चाहिए कि इस महीने के अय्याम और लम्हात किस क़दर बा बरकत हैं और येह कितना बड़ा अल्लाह पाक का इन्आम हैं जिसे हम किचन के ग़ैर ज़रूरी कामों में उलझ कर ग़फ़लत की नज़्र कर देती हैं ।

आज कल तो येह भी ज़ेहन बनता जा रहा है कि घरेलू काम काज की ज़ियादती की वज्ह से ख़वातीन फ़र्ज़ रोज़ा छोड़ देती हैं और हामिला ख़ातून के बारे में तो कई लोग समझते हैं कि शायद इसे रोज़ा मुआफ़ है जबकि ऐसा नहीं है सहीह मस्अला येह है कि "हामिला के लिए उस वक़्त रोज़ा छोड़ना जाइज़ है जब अपनी या बच्चे की जान के ज़ियाअ का सहीह अन्देशा हो, इस सूरत में भी उस के लिए फ़क़त इतना जाइज़ होगा कि फ़िल वक़्त रोज़ा ना रखे मगर बाद में उस की क़ज़ा करना होगी ।"[5]

अल्लाह पाक हमें इस माह की क़द्र अता फ़रमाए । नेक बीबियों की सीरत और इबादात की रग़बत में से हमें भी कुछ हिस्सा नसीब फ़रमाए जो ना सिर्फ़ फ़र्ज़ बल्कि नफ़्ल रोज़ों का भी कसरत से एहतेमाम करती थीं । घरेलू काम काज में भी कमी ना आने देतीं और औलाद की तरबियत में भी कोई कसर ना छोड़ती थीं ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) پ2، البقرۃ:183 (2) موطا امام مالک، 1/121، رقم:260، سیرت مصطفیٰ، ص660 (3) ابنِ ماجہ، 2/350، حدیث: 1753 (4) ابنِ ماجہ، 2/349، حدیث: 1752 (5) ماہنامہ فیضان مدینہ، رمضان المبارک 1441ھ، ص46۔

इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल

अगर बैठ कर नमाज़ पढ़ने से इस्तेहाज़ा वाली औरत को ख़ून ना आए तो ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक इस्लामी बहेन को इस्तेहाज़े का मरज़ है, उन्हें खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की वज्ह से और रुकूअ़ व सुजूद में झुकने की वज्ह से ख़ून आता है जबकि बैठ कर इशारे से नमाज़ पढ़ने की सूरत में ख़ून नहीं आता, तो इस सूरत में उस इस्लामी बहेन के लिए क्या हुक्मे शरई है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

हर वोह त़रीक़ा ए कार जिस से माज़ूरे शरई का उ़ज़्र जाता रहे या उस में कमी हो जाए उस का इख़्तियार करना माज़ूर पर वाजिब है । लेहाज़ा सूरते मसऊला में उन पर लाज़िम है कि बैठ कर इशारे से नमाज़ पढ़ें । और इस त़रह़ करने से वोह माज़ूरे शरई के हुक्म से निकल जाएंगी ।

इस मस्अले की फ़िक़्ही तौजीह येह है कि जिस त़रह़ बिला उ़ज़्रे शरई बग़ैर क़ियाम और रुकूओ़ सुजूद के नमाज़ जाइज़ नहीं होती इसी त़रह़ बिला उ़ज़्रे शरई बग़ैर वुज़ू के नमाज़ पढ़ना भी जाइज़ नहीं, लेकिन शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने बहालते इख़्तियार बाज़ सूरतों में सज्दा और क़ियाम तर्क करने की रुख़्सत अ़त़ा फ़रमाई है, जैसा कि नफ़्ल नमाज़ पढ़ने वाले को बैठ कर या सवारी पर इशारे से नमाज़ पढ़ने की रुख़्सत दी गई, जबकि बहालते इख़्तियार बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने की किसी सूरत में भी रुख़्सत अ़त़ा नहीं फ़रमाई तो इस से मालूम हुवा कि क़ियाम और सज्दों का तर्क करना बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने से ख़फ़ीफ़ और कमतर हुक्म रखता है, और फ़िक़्हे इस्लामी का उसूल है कि जब कोई शख़्स दो आज़माइशों में मुब्तला हो जाए तो उस को हुक्म है कि उन में से कमतर को इख़्तियार करे ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हाथी दांत से बने ज़ेवर पहेनना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ख़्वातीन के लिए हाथी दांत से बने ज़ेवरात का इस्तेमाल करना इ़न्दश्शरअ़ कैसा है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ख़्वातीन के लिए हाथी दांत से बने ज़ेवरात का इस्तेमाल करना इ़न्दश्शरअ़ जाइज़ है । अह़ादीसे मुबारका से नबी ए पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथी दांत की कंघी इस्तेमाल करना साबित है, इसी त़रह़ कसीर कुतुबे अह़ादीस में येह रिवायत मौजूद है कि नबी ए पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सोबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी शेहज़ादी ह़ज़रते सैयदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिए हाथी दांत के कंगन ख़रीद कर लाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।

नीज़ इस की फ़िक़्ही तौजीह येह है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने मुर्दार अश्या को ह़राम व नजिस फ़रमाया है, और बिल शुबा मुर्दा वोह ही चीज़ केहलाती है जिस में पेहले ह़यात हो और चूंकि जानवरों के वोह अज्ज़ा जिन में ख़ून नहीं होता (मसलन : दांत, हड्डी, सींग वग़ैरा) इन में ह़यात नहीं होती लेहाज़ा इन पर मुर्दार का इत़लाक़ भी नहीं हो सकता । मज़ीद येह कि मुर्दार अश्या को भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इन में मौजूद बेहने वाले ख़ून और नापाक रत़ूबतों के सबब नजिस क़रार दिया ना कि ख़ुद उन की ज़ात की वज्ह से, जबकि दांत और हड्डी वग़ैरा जैसे अज्ज़ा में येह चीज़ें नहीं पाई जातीं लेहाज़ा इन का हुक्म मुर्दा अज्ज़ा वाला नहीं ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक के अहम वाक़ेआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़ेआ	
1 रमज़ानुल मुबारक 471 हिजरी	यौमे विलादत हुज़ूर ग़ौसुल आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 ता 1445 हिजरी और किताब "ग़ौसे पाक के हालात"
3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी	यौमे विसाल ख़ातूने जन्नत हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हिजरी और किताब "शाने ख़ातूने जन्नत"
10 रमज़ानुल मुबारक 10 सिने नबवी	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, 1440 हिजरी और रिसाला "फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा"
15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी	यौमे विलादत नवासा ए रसूल हज़रते इमाम हसने मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, रबीउ़ल अव्वल 1441 हिजरी और रिसाला "इमामे हसन की 30 हिकायात"
17 रमज़ानुल मुबारक 2 हिजरी	यौमे बद्र व शोहदा ए बद्र	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, 1439 हिजरी और किताब "सीरते मुस्तफ़ा, सफ़हा 209"
17 रमज़ानुल मुबारक 57 या 58 हिजरी	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हिजरी और किताब "फ़ैज़ाने आइशा सिद्दीक़ा"
20 रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी	फ़त्हे मक्का	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1440 हिजरी, मई 2021 ईसवी और किताब "सीरते मुस्तफ़ा, सफ़हा 411"
21 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी	यौमे शहादत मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1444 हिजरी और रिसाला "करामाते शेरे ख़ुदा"
22 रमज़ानुल मुबारक 1326 हिजरी	यौमे विसाल बिरादरे आला हज़रत, मौलाना हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 और 1439 हिजरी
रमज़ानुल मुबारक 2 हिजरी	यौमे विसाल शेहज़ादी ए रसूल, हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हिजरी और किताब "सीरते मुस्तफ़ा, सफ़हा 694"

अल्लाह पाक की उन पर रेहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के शुमारे दावते इस्लामी इन्डिया की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िए और दूसरों को शेर भी कीजिए ।

रमज़ानुल मुबारक की मुनासेबत से इन कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिए ।

नमाज़ के चन्द ज़रूरी मसाइल

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानी ए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल नहीं करता नमाज़ उसे केहती है : "अल्लाह तुझे हलाक करे जिस त़रह़ तू ने मुझे ज़ाएअ़ किया, फिर उस नमाज़ को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दिया जाता है।" (شعب الایمان،3/144،حدیث:3140ملتقطاً) नीज़ एक रिवायत में है : बद तरीन चोर वोह है जो नमाज़ में चोरी करे। अ़र्ज़ की गई : नमाज़ का चोर कौन है ? फ़रमाया : वोह जो रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल ना करे। (مسند احمد،8/386،حدیث:22705) आज कल नमाज़ में की जाने वाली उ़मूमी ग़लतियों (Common mistakes) में से कुछ को मद्दे नज़र रखते हुवे चन्द **मदनी फूल** पेशे ख़िदमत हैं :

❁ रुकूअ़ में झुकने की कम अज़ कम ह़द येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाए जबकि मुकम्मल रुकूअ़ येह है कि पीठ सीधी बिछा दे. (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3,1 / 513 मफ़्हूमन) ❁ रुकूअ़ के लिए झुकना नमाज़ में फ़र्ज़ है और वहां कुछ ठेहरना यानी इत़्मीनान से रुकूअ़ करना वाजिब। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 75) ❁ किसी नर्म चीज़ मसलन घास, रूई, क़ालीन वग़ैरा पर सज्दा करने की सूरत में पेशानी और नाक की हड्डी को इतना दबाना ज़रूरी है कि दबाने से मज़ीद ना दबे। अगर पेशानी इतनी ना दबी तो नमाज़ ही ना होगी जबकि नाक की हड्डी इतनी ना दबी तो नमाज़ मकरूहे तेह़रीमी होगी और उसे लौटाना वाजिब होगा। (आ़लमगीरी, 1 / 70) ❁ सज्दे में पांव की एक उंगली का पेट ज़मीन पर लगना फ़र्ज़ है और हर पांव की अक्सर उंगलियों का पेट ज़मीन पर लगना वाजिब है। (फ़तावा रज़विय्या, 3 / 253 मुलख़्ख़सन) ❁ रुकूअ़ के बाद सीधा खड़ा होना और दो सज्दों के दरमियान सीधा बैठना वाजिब है नीज़ इस दौरान कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰہ केहने की मिक़्दार ठेहरना भी वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, 1 / 518 मुलख़्ख़सन, नमाज़ के अह़काम, स. 218) ❁ एक रुक्न में तीन मरतबा खुजाने से नमाज़ टूट जाती है, यानी एक बार खुजा कर हाथ हटाया फिर दूसरी बार खुजा कर हटाया अब तीसरी बार जैसे ही खुजाएगा नमाज़ टूट जाएगी और अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार ह़रकत दी तो एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (बहारे शरीअ़त 1/ 614 मुलख़्ख़सन) ❁ इमाम से पेहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जाना या इस से पेहले सर उठाना (मकरूहे तेह़रीमी है) (बहारे शरीअ़त 1/ 629) नमाज़ में चेहरा फेर कर इधर उधर देखना मकरूहे तेह़रीमी है। जबकि बग़ैर चेहरा फेरे बिला ह़ाजत इधर उधर देखना मकरूहे तन्ज़ीही है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3,1 / 626 मुलख़्ख़सन) (नमाज़ के मसाइल तफ़्सीलन सीखने के लिए "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 3 और "नमाज़ के अह़काम" का मुत़ालआ़ फ़रमाइए)

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

مکتبۃ المدینہ MAKTABA TUL MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)

PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.

PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.